

प्रथमावृत्ति
१९५६

मूल्य साढे तीन रुपया

प्रकाशक नवयुग प्रकाशन चावडी बाजार, दिल्ली
मुद्रक ज्ञानप्रकाश गुप्ता द्वारा कम्पोज होकर सम्राट प्रेस में मुद्रित

वे
क
री
का
मा
लि
क

हवा का बवण्डर लूखे-सूखे वर्ष के टुकड़ों, घास के पत्तों और लकड़ी के छिलकों का एक भँवर सा बनाता हुआ आँगन में वेग के साथ द्रुत आया। और उस अँधड़ के बीच एक गोल-मटोल, थल-थल घ्रादमी, खड़ा हुआ नजर आया जिसके शरीर पर टखनों तक नीची धारीदार तातार कमीज थी और पैरों में रबर के ऊँचे जूते। उसने हाथ स्थूल तौंद पर बाध रखे थे और वह बड़ी तीव्रता से अपने दोनों हाथों के मोटे-मोटे अंगूठे अमेठ रहा था। उसने अपनी असमान दानेदार प्रॉबों से जिनमें दाहिनी मँजरी थी और बायीं फुल्ली, मुँके घूर कर देखा और गरज कर कहा :

“बल भाग दे—कोई काम-बाम नहीं है यहा। जाइँ में भी कहीं काम मिलते सुना है !”

उसके सफाचट, भुर्रियोंदार चेहरे पर ग्लानि के भाव उभर आये। उसकी पीली मूँछों के चंद्र बाल ऊपरी होंठ पर सहसा मुँके और निचला होंठ उसके चिडचिडे स्वभाव के कारण नीचे को दबा और उनके छोटे-छोटे दातों की पक्ति नजर आई। नवम्बर का महीना था। सर्द हवा के तेज झक्झक चल रहे थे जिन्होंने उसकी भारी भवों वाले माथे के महीन बालों को दिखेर दिया था। प्रचंड वायु के झोंके से उसकी पोशाक उड़ रही थी और घुटनों तक उसकी मोटी-मोटी चिकनी गावदुन टाँगे खुल गई थीं जिन पर पीले रंग के रोदेदार बान उगे लुपे थे। पर उसे कुछ भान ही न था बल्कि उससे तो यही प्रकट होता था कि वह पृष्ठ शरूत पतलून पहनना भी नहीं जानता। उन व्यक्ति के मन्थन करून चेहरे में भी एक अजीब आकर्षण था और उसके मजरी शरीर के पलकों में एक अविचारणीय अपमान के भाव निहित थे। हुँने कों

जल्दी थी नहीं चुर्नांचे मैंने सोचा इससे कुछ गप्प ही लगाऊँ। मैंने पूछा —

“तुम क्या यहाँ के दरवान हो ?”

“चल-चल, रास्ता ले अपना। तुम्हे क्या मैं कुछ भी हूँ . . .”

“अरे भाई मेरे, तुम पतलून-वतलून पहने नहीं हो, सर्दी लग जायेगी न तुम्हें . . . ?”

भयों की जगह जो लाल-लाल दाग ये ऊपर को तन गये, बेमेल आँखें कुछ अजीब ढंग से तरेरी और उस आदमी का शरीर कुछ इस कार आगे को झुका कि ऐसा लगा अब गिरा, अब गिरा।

“और कुछ कहना है ?”

“भईं तुम्हें सर्दी लग जायेगी, तुम मर जाओगे !”

“तो फिर ?”

“फिर कुछ भी नहीं।”

“बस तो बहुत हो गया।” उसने अंगूठों को अमेठन थामी और गरजा। फिर उसने अपने हाथ खोल लिये, चाव से अपने कूल्हे थपथपाये और मेरी ओर झुककर मुझमें पूछा :

“यह सब तुमने किसलिये कहा ?”

“अरे योंही कह दिया। अच्छा यह बताओ मालिक वासिली सेम्यांनोव से मैं मिल सकता हूँ क्या ?”

उसने एक ठण्डी सास भरी और सिर से पैर तक अपनी मजरी आँख से मुझे जाँचते हुए वह बोला .

“मैं ही तो हूँ। . . .”

मेरी तो पैरों तले जमीन खिसक गई, नौकरी की सारी आशाएँ धूल में मिल गईं। सहसा जिस्म में कटकटाती हवा की सर्द लहरें दौड़ गईं और मेरे सामने सड़ा आदमी बड़ा ही घिनावना लगने लगा।

“अब बोलो ?” उसने मुझे तिरछी नजरों से देखते हुये कहा।

“दरवान कहा था न, एँ ?”

अब चूँकि वह मेरे त्रिलकुल नजदीक खड़ा था मैंने वह जाँच लिया कि वह नशे में धुत्त है। उसकी आँखों के ऊपर वाले लाल गूमड़ों पर बड़े महीने पीले रोएँ उभरे हुए थे और वह कुल मिलाकर एक भयानक चूजे जैसा दिखाई दे रहा था।

“निकल जाओ यहाँ से।” उसने आनदित हो कहा और शराब की गंध के बादलों में मुझे ढँक दिया। साथ ही उसका ठूँठ जैसा बाजू हिला और उसको बंधी हुई मट्टी ऐसी नजर आई जैसे जेम्पेन शराब की डाटदार चोतल हो। मैं मुड़ा और आहिस्ता-आहिस्ता फाटक की ओर चल दिया।

“अरे सुनना। तीन खजल महीने पर काम करेगा ?”

तो क्या मुझे जैसा १७ वर्षोंय हृष्ट-पुष्ट, शिक्षित लड़का उन मोट्टू शराबी के यहाँ १० कोपेक रोजाना पर काम करने लायक था ? लेकिन जादों का मौसम था—ठिठुर के रह जाता मैं। फिर दूसरा चारा भी क्या था। चुनावे बड़े अनमने और जब से मैंने कहा

“अच्छा, करूँगा।”

“पासपोर्ट है ?”

मैंने झट अपना हाथ अन्दर की जेब में डाला लेकिन मेरे मालिक ने अपना बाजू हिलाया और बुरा-सा मुँह बनाकर मना कर दिया।

“रहने दो, रहने दो। क्लर्क को दे देना। जाओ अन्दर चले जाओ

• • • यहाँ साइका को पूछ लेना • • •

दुमजिला इमारत का धुँआ भरी दीवार पर एक जर्जर सायबन के नीचे दरवाजे में किवाड़ एक ही चूल पर टिरे हुये थे। मैं दरवाजे में दाखिल हुआ और आटे के ढेरों में से गुजर कर एक तग व अँधियारे कोने में पहुँचा तो खट्टी, गर्म और भूख दिखाने वाली भाप मेरे नथुना से टकराई। सरसा आँगन में से आती हुई भयानक आवाजे मेरे कानों पर पड़ी—ऐसा लगा कि लोग पैसे में धन-धन कर रहे हैं और धर-धर की आवाज निकाल रहे हैं। जानके की दीवार की एक जगह में धपता हँस लगाये मैं भीचकता हो खड़ा रहा। वहाँ क्या दिख रहा है कि

मेग मालिक अपनी वृहन्ियाँ वृह्नों पर जमाये आँगन में इस प्रकार वृद फाँट कर रहा है जैसे कोई अदृष्ट बोडे सधाने वाला घोडे को चाल सिखा रहा हो। उसकी पेशिया और मोटे, गोल-मटोल घुटने खुले हुए थे, उसकी तोंद और थल-थल गाल फड़क रहे थे, उसका मछली नैसा मुँहँ सिकुड़ गया, या और वह जोर-जोर से खाँस-खाँस कर वेदम हुआ जा रहा था।

“खा, खा ”

आँगन सकीर्ण था और चारों ओर टूटी-फूटी वेदगी कोठरियाँ बड़ी अस्त व्यस्त-सी बनी हुई थीं जिनके दरवाजों पर कुत्तों के सिरों-जैसे बड़े-बड़े ताले लटके हुये थे। बारिश से भीगकर ऐंठे हुये पेड़ की दर्जनों ग्रंथियाँ अर्धों की नाईं टोख पड रही थीं। आँगन के एक कोने में छत तक शकर के खाली पीपे अटे हुये थे जिनके खुले हुये गोल मुँहों में से तिनके भाक रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि आँगन को बूड़ाघर की तरह इस्तेमाल किया जाता है और हर प्रकार का काठ-कनाड़ वहा फेंक दिया जाता है।

और घास-फूस के भँवर लकड़ी के छिलकों और छेपटों के नाचते हुये छल्लों के दरम्यान यह भारी भरकम जिस्म वाला, मोटा-ताजा और अजीब शख्स आँगन के पथरीले फर्श पर अपने भारी जूतों की धमधम करती आवाज के साथ कूद रहा था और खाँसता जा रहा था मानो वायु के भौंकों की सरसराहट से ताल मिला रहा हो।

“खा, खा खा। . . .”

कोने के पीछे कहीं से कुछ सुअर क्रोधित हो चीख-चिल्ला रहे थे मानो उसकी घमाचौकड़ी पर अपनी प्रतिक्रिया दर्शा रहे हों। कहीं कोई घोड़ा साँस ले रहा था और धम-धम कर रहा था और दूसरी मजिल पर किसी कमरे की रोशनदान की छोटी खिड़की में से कोई लड़की दुर्बल स्वर में गा रही थी :

“काहे भये उदास प्रियतम,”

हवा पीपों में ठुँसी घास में घुस कर सरसरा रही थी। लकड़ी की एक

खपच बढ़ी तेजी से फटफड़ा रही थी। कबूतर खलिहान की एक ओलती में एक दूसरे से लिपटकर बैठे अपने जिस्म को गर्मा रहे थे और बड़ी दीनता से गुटर गूँ कर रहे थे ।

यहाँ का वातावरण कुछ अजीब गड़बड़ सा था और उसके बीचो-बीच पसीने में शराबोर, हाँफता-कॉपता यह जलजलूल शख्स नाच रहा था जिसकी शक्ल-सूरत का मैंने और कोई पहले कभी न देखा था ।

“जान पड़ता है मैं किसी अच्छे-खासे भ्रमेले में फँस गया हूँ !” मुझे कुछ सदेह हुआ और मैं सोच में पड़ गया ।

तहखाने की खिड़कियों पर तार की जाली लगी हुई थी और वहाँ की मेहराबदार छत में भाप और तम्बाकू के धुएँ के मिले-जुले बादल छाये हुये थे । उस स्थान का वातावरण अधकारमय था, खिड़कियों के शीशे टूट गये थे जिनपर अन्दर से सने हुये आटे के लोदे लगे थे - से कीचड़ थुपी हुई थी । कोनों में चीथड़ों के मकड़ी के जाल जैसे झण्डे जिन पर खाने की जूठन लिथड़ी हुई थी, पडे थे और गदगी का यह आलम था कि धूल की तहों में एक काली मूर्ति इतनी अट गई थी कि नजर आना मुशकिल हो गया था ।

एक बहुत बड़े तंदूर में से जो नीची मेहराब का था सुनहरी लपटें निकल रही थीं । उसी के सामने बंद-ह्वास पार्क का बजारा खड़ा लम्बे हल्के वाला बेलचा चूले के पत्थर पर रगड़ रहा था । यही नाननाई उस कारखाने का दिल व दिमाग था— गटा कद, मागदार छोटी दाटी और दला के चमकते हुए सफेद दाँत—यह थी उसकी आकृति । वह एक टोली-दाली बिना कमरपट्टी की रंगीन अघ-अहियों पहने हुये था । उसके खुले हुये बदन पर मशान बलों के गुच्छों में हवा गुदगुदी कर रही थी । वह इस लिबास में किसी मदिखलय का नट दिखाई देता था । उसके पैरों पर चढ़े भारी, जर्जर-शीर्जर बूट जो उसकी लुईल टंगे में हले हुये लोहे की नाई लग रहे थे, देख कर टुक होना था । वह

श्रानन्दमग्न हो चीख-चिल्ला रहा था और उमकी वे चीखें उम तखाने के उदासीन वातावरण में गूँज रही थीं ।

“सेको और उबालो !” एक ही सास में असख्य गालियाँ दते हुये वह चिल्लाया और अपने धुँधराले बालों वाले मुन्डर माथे से पसीने की बूँदें पोछीं ।

खिड़कियों के नीचे दीवार के सहारे लगी लम्बी मेज पर अठारह मजदूर बैठते, और ‘बी’ के आकार की आधी-आधी छटाक की छोटी-छोटी नमकीन नानखताइयाँ बनाते हुये दाये-बायें हिनते-डुलते रहते थे । मेज के एक किनारे दो आदमी सफेद गुँधे हुये आटे की लम्बी पट्टियाँ काटते थे, अपनी उँगलियों से उसके बराबर-बराबर पेडे बनाते और उन्हें मेज के दूसरे सिरे पर बैठे मजदूरों के हाथों में पहुँचा देते । ये हाथ इतने फुर्तिले होते थे कि उनकी हरकत मुश्किल से देख पड़ती थी । आटे को नानखताई की शकल में ढालने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को उसे हथेली से थपथपाना पड़ता और यह कार्य ऐसी ताल के साथ होता कि सारा भट्टियारखाना हल्की-हल्की पट-पट की आवाज से गूँजने लगता था । मेज के पहले सिरे पर मैं बनी हुई रोटियों को ट्रे में रखता जाता और जब वह भर जाती तो लड़के उसे उठाकर बाइलर के पास ले जाते जो उन्हें उबलते हुये पानी की बढाई में ढाल देते जहाँ से एकाध मिनट बाद वह उन्हें ताँवे के एक करछुल से बाहर निकाल कर एक रागा चढी हुई बड़ी ताँवे की परात में ढाल देता । फिर आटे के चिकने-चिकने, गरम पेड़ों को ट्रे में रख देता, नानखताई उन्हें चूल्हे पर सुखाता फिर निकाल कर अपने फावडे पर जमाता और और बड़ी दक्षता के साथ उन्हें तदूर में फेंक देता जहाँ वे सिक कर कुरकुरे और कथई रंग के बनकर तैयार हो जाते ।

जब नानखताई मेरे पास आ जातीं उस समय यदि मेरी श्रोर से जरा सी भी काहिली बरती जाती तो वे बिगड़ जातीं—आटे के पेडे एक दूसरे से चिपक जाते और सारा काम चौपट हो जाता । मेज पर बैठे

हुये दूमरे लोग मुझे उलाहना देने लगते और आटे के लोदे मेरे मुँह पर फेंकने लगते ।

वे सब मुझमें घृणा करते और शक की नजरों से देखते थे जैसे कि मैं कोई मक्कारी या दगाबाजी करने वाला हूँ ।

मेज पर अठारह व्यक्ति तदूर में भूमते थे । तमाम आठमियों के चेहरे कुछ समान रूप-रंग लिये नजर आते थे जो बड़ा विचित्र-सा लगता था । सबके चेहरों पर थकावट और उदासीनता के भाव अंकित थे । मेरा एक साथी आटा गूँधता और आटा मिलाने की कल का लोहे का हत्था धमाके के साथ चलाता । कोई तीन मन का ढेर आटा सख्त और लोचदार गूँधना जिसमें एक भी फटकी न हो, बड़े परिश्रम का काम है । फिर यह काम होना भी बड़ी फुर्ती से चाहिए—ज्यादा से ज्यादा आधे घंटे में ।

तदूर में लकाइयाँ चटखती रहतीं, कढ़ाव में पानी सनसनाता रहता और मेज पर हाथों के थपथपाने की आवाजें आती रहतीं । वे सब आवाजें मिलकर निरंतर एक ही जैसी आने वाली और एक-नुरी गुनगुनाहट में परिणत हो जातीं । और यह गुनगुनाहट तब भग होती जब कोई क्रोध में किसी को गालियाँ देता । फर्श पर बैठे काम करते हुये लड़कों में से ग्यारह वर्षीय पाशका आत्युखोव की ताजा और हलन्ड आवाज सुनाई देती थी । यह चपटी नाक वाला तोतला छोटा-ना लड़का जिसके चेहरे पर कभी भय और कभी आनन्द के भाव उभर आते अपने तन्मय श्रोताओं को बड़ी प्रोजन व अविश्वसनीय कहानियाँ सुनाता कि किस प्रकार एक पादरी की पत्नी ने द्वेष से आनन्द हो कर अपनी लड़की पर, जिस की शादी होने वाली थी मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी । घोड़े चराने वालों को जिन त्वटों का समना करना पड़ता है और उन्हें किस प्रकार दण्ड दिया जाता है । गन्-घ्रंतों, सुईयों और मल्लागनाओं के किन्से बनाव । इन्हीं बातों को सुनी आवाज के कारण लोगों ने उसका नाम 'सुन सुना' रख दिया था ।

मुझे पहले ही मालूम हो चुका था कि वामिली सेम्पोनोव कुछ दिन पहले—कोई चार वर्ष पूर्व, खुद उस भटियारखाने में नोकर था और अपने मालिक की बूढ़ी पत्नी के साथ रहता था। बुढ़िया को उसने यह पट्टी पढाई कि वह उसे कुछ खिचाकर मार डाले। और जब उसकी मुगड़ पूरी हो गई तो उसने सारा काम-काज अपने हाथ में ले लिया। और अब वह उसे मारता है और उसे इतना आर्तकित कर रखा है कि उसका जी चाहता है वह चूहा बन कर बिल में जा छिपे और उसकी शकल न देगे। यह किस्सा मुझे ग्राम घटना की तरह सीधी-सच्चा सुनाया गया। मुझे तो शुरू से आखिर तक उस खुशनसीब आदमी में कोई चीज ऐसी दीखी नहीं जो मैं उससे ईर्ष्या करता।

“पतलून क्यों नहीं पहनता वह ?”

उदास और भयावह चेहरे वाले कुजिन ने जो काना था मुझे बड़ी गम्भीरता से समझाया :

“नशे में घुत्त फिरता रहता है—अभी परसों ही तो उसने अपनी पियक्कड़ी का लम्बा दौर खत्म किया है।”

“दिमाग तो खराब नहीं है उसका ?”

अनेकों नेत्र हास्यास्पद ढंग से मुझे घूरने लगे। बंजारा बड़ी आशावादिता से बोला

“जरा ठहर जा बेय, अभी पता चल जाता है कि उसका दिमाग खराब है या अच्छा।”

साठ वर्षीय कुजिन से लेकर याश्का तक जो नानखताइयों को घागे में पिरो कर हार बनाता है और जिसे अक्तूबर से मार्च तक के लिये दो रुबल मिलते हैं, हर व्यक्ति अपने मालिक का जिक्र इस अदाज में करता है जैसे उसे अपने मालिक पर गर्व हो और मानो कह रहा हो, अरे वामिला सेम्पोनोव जैसा आदमी लाकर तो बताओ। वह बड़ा व्यभिचारी है, उसकी तीन रखेल हैं जिनमें से दो को तो वह नाकों चने चववाता है और तीसरी खुद उसे ठोकती है। वह लालची है, हमें बुध खाना

खिलाता है। छुट्टियों में तो हमें गोभी का शोरवा और गोश्त मिलता है। और वैसे राजाना आजड़ी मिलती है। बुग और शुक्रवार के रोज चर्चों से बंधारा हुआ टलिया दिया जाता है। और काम के वक्त सात चोरों आटे की नानखताइयाँ उसे रोज दिये जाओ जब कि एक चारे आटे में २२ मन २ सेर वजन होता है और उसकी नानखताइया वनाने में लगभग दार्ई घंटे लगते हैं।

“बड़ी अजीब बात है, तुम अपने मालिक की इतनी बजाई करते हो।” मैंने कहा।

अपनी पैनी दृष्टि से मुझे घूरते हुए एक नानवाई ने कहा “इसमें अजब बात क्या है ?”

“ऐसा लगता है तुम सबको उस पर बड़ा गर्व है . . . ?”

“हा तो उसमें ऐसी खूबियाँ हैं तभी तो करते हैं गर्व। तुम्हारी ननन में यह बात आई नहीं शायद। अब देखो ना, कल तक वह एक मामूली मजदूर था, कोई पृच्छता भी नहीं था उसे, और आज ? पुलिन का सुवेदार भी उसे झुक कर सलाम करता है। पढा-लिखा वह स्टाफ नरा है सिर्फ हिन्ने जानता है—फिर भी देखलो चालीन आदमियों का कारोबार चलाता है, और सारा हिसाब-किताब अपनी खापड़ी में रने हुए है।”

कुाजन ने टही साँस ली और आभाकारी सेवन की नार्ई सन-सन मे करा.

“भगवान ने उसे बड़ी तेज दुखि दी है।”

और पाश्का ने उच्च जित ही चीखकर कहा

“नानखताई का एक तदूर, डभल रोटी का तदूर, दिल्ली का तदूर तदूर भला कर तो लो इन सनका इन्तजम और रिगम-विन्त जन। दार्ई हजार मन नानखताइयाँ तो मार्व बानिना और तनारी वह जिना ज राध सदियों ने ही बेच लेता है। बच्चे अनाज पार म नान के वन हैं जिन्मे से हक को ३६ सेर नानखताइयाँ और अदुद सेर - देवन

पड़ते हैं—अब बोलो, क्या बोलते हो ?”

नानबाई का यह बोध व खरोश मेरे लिये असह्य हो गया, मुझे झुँझलाहट होने लगी—मैं अपने अनुभव की बिना पर मालिकों के बारे में कुछ दूसरे ढंग से सोचने लगा था और मेरा वह विचार निराधार न था।

बूढ़े कुजिन ने अपनी एक आँख चोरों की तरह अपनी भूरी भँवों में छिपाई और व्यग्य से कहा

“अरे भाई, वह कोई ऐसा-वैसा मामूली आदमी नहीं है।”

“अगर बकौल तुम्हारे उमने बूढ़े मालिक को जहर दे दिया था, तब तो वास्तव में इसमें शक ही क्या हो सकता है। ..”

नानबाई ने अपनी काली भवें चढाई और कुछ सदिग्ध भाव से बोला

“तो साब उसका कोई गवाह-बवाह तो है नहीं। बाज वक्त ऐसा भी होता है कि घृणा या द्वेष के कारण हत्या करने या विप देने या चोरी करने का अपराध किसी के मृत्ये मढ दिया जाता है—हमारी निराश्री में जब किसी की तरुदर चेत जाती है और वह फलने-फूलने लगता है तो लोगों की आँखा में खट्टरने लगता है। . .”

“तुम्हारा भाई—बन्द कैसे हो गया भाई वह ?”

बंजारे ने कोई जवाब न दिया और कुजिन सामने वाले कोने पर नज़ा टौड़ाकर लडकों पर गुराया:

“श्रवे शैतानों ! जरा उस मूर्ति की धूल तो भण्ड दो ! तातारी, काफ़िरों !”

बाकी सब ऐसे चुप थे जैसे हैं ही नहीं।

जब थालियों में नानखताईया रखने की मेरी बारी आई तो मेज के एक सिरे पर खडे होकर मैं लडकों को वह सब जो मैं जानता था और उनके लिये जरूरा समझता था बताने लगा। भटियारखाने में जो शोर हो रहा था उसे दबाने के लिये मुझे जोर-जोर से बोलना पड़ता था और जब वे लोग मेरी बातें ध्यान से सुनने लगते तो जोश में आकर मैं और

भी बुलन्द आवाज में बोलने लगता। इसी प्रकार का 'तुशार-शर्य' करते हुए एक बार मालिक ने मुझे ऐन मौके पर पकड़ लिया जिसके लिये मुझे सजा भी मिली और उपनाम भी।

हमारे भटियारखाने और डबन गोटी की बेकरी के दरम्यान जो मेराजी दरवाजा है उसमें वह मेरे पीछे चुपचाप आकर खड़ा हो गया। बेकरी का फर्श हमारे भटियारखाने के फर्श से तीन मीटरों ऊंचा था और हमारा मालिक मेहराब के चौखट में तोंट पर शाय वॉधे गज टाना हाथों के झंगूटे एक-दूसरे के गिर्द घुमा रहा था। हमेशा की तरह बरी अपना लम्बा कुर्ता जो पीते से उसकी मोटी गर्दन में बंधा हुआ था पहने हुए आटे का अचल बोरा मालूम हो रहा था।

इस ऊँची जगह पर खड़ा वह अपनी बेजोड़ आँवों ने नदब्य सुनायना कर रहा था। उसकी मँजरी आँव की पुतली चिल्लन गोल थी, बिल्ली की पुतलियों की तरह कभी चमकने लगती, कभी चिट्च जाती। और दूसरी भूरे रंग की पैजवी आव मुँह की आस की तरह पधगई हुई और चिकनी-चिकनी मालूम हो रही थी।

मैं भी बोलता ही गया, यहाँ तक कि महसूस हुआ कि भटियारखाने में अनाधारण निस्तब्धता छा गई है। पर काम परले से अधिक एनों से होने लगा था। मेरी पीठ के पीछे से किसी की उपरातार आवाज आई।

“क्या दकत्रक लगा रयी है वे बड़बड़िये ?”

मैंने जो पीछे मुड़कर देखा तो मे घबड़ा गया और मेरी चिल्लन बंद गई। अपनी मजरी आँव से मुझे एनों से चाँट तक घूँते हुए बड़बड़ाने पास से गुजरा और जाकर नानगई से पृथ

“वैला काम करता है यह ?”

पाशा ने स्तौष प्रकट करते हुए कहा

“चिल्लन ठीक है। बड़ा चमकता बल्ले है।”

और दरवाजे की सीढ़ियों पर चढ़कर उसने नर्म और थके स्वर में बंजारे
[११]

“हफ्ते भर इसे आटा गूँधने पर लगाए रखो जरा .. ”

यह कहकर वह दरवाजे में से अदृश्य हो गया और साथ ही कुहरे
का एक सफेद बादल भटियारखाने में घुस आया ।

दुर्बल लँगड़े वानुक उलानोव ने जिसके चेहरे से टिटाई टपकती
थी बड़े ही भोड़े हाव-भाव और वेढंगी बोली में कहा, “मैं तो सारी उमर
भी न करूँ !”

किसी ने सीटी बजाकर उसका उपहास किया । नानवाई ने चारों
ओर प्रकोपपूर्ण दृष्टि दीड़ाई और ये बढ़ी गाली देते हुए कहा

“चलो वे काम करते नजर आओ !”

कोने में से जहाँ फर्श पर बैठे लड़के काम कर रहे थे तोतले याशका
की क्रोधित और झिड़की भरी आवाज आई :

“अरे बड़े कमाल के लोग हो तुम । मजे में बैठे हो तुम मेज पर ।
अब तुमने मालिक को आते देखा था तो उय वेचारे को इधारा करते
क्या तुम्हारी नानी मरती थी ?

“हाँ और क्या ! उसके भाई सोलह वर्षीय आर्तेंम की आवाज
आई । वह ऐसा हवन्नक दिखाई दे रहा था जैसे लड़ाई के बाद कोई
मुर्गा । एक हफ्ते लगातार आटा गूँधना हसी-ठहा नहीं है—हालत
पतली हो जायेगी वेचारे की ।”

मेज के परमे सिरे पर बूढ़ा कुजिन और भूतपूर्व सैनिक मिलोव
बैठे थे । मिलोव बड़ा खुशमिजाज आदमी था पर वेचारा आतशक का
मरीज था । कुजिन ने अपनी निगाहें नीची करलीं पर कहा कुछ नहीं ।
बूढ़ा सैनिक, अपराधी की नाईं भुनभुनाया

“और, मुझे तो इसका ध्यान ही नहीं आया .. ”

नानवाई ने दाँत निकालकर हँसते हुए कहा

“अब तेरा नाम बड़बडिया हो गया ।”

दो-तीन आदमियों ने अनमने से कह कहा लगाया और उनके बाद एक भद्दा, फटकर सन्नाटा छा गया। सब लोग मुझसे नजरें चुराने लगे।

सन्ध की गहराई में तो सबसे पहले योरका ही पहुँचता हूँ। सहसा थ्रोसिप शातुनाव को दबग आवाज आई। वह एक भद्दे, चपटे चेहरे और तिरछी छोटी-छोटी आंखों वाला एक वेडौल-सा आदमी था। “यह यासका दुनिया में ज्यादा नहीं जियेगा।”

“तुम जाओ जहन्नुम में। लडके की बारीक और तेज आवाज गूँजी। “इसका तो जवान काट ली जनी चाहिये,” कुजन ने सलाह दी। “श्रवे तेरी ही जीभ न कट जाय इद्र घातेंम ने झल्लाकर जवाब दिया “अवे तेरी ही जीभ न कट जाय इद्र समेत। नीच कहीं के।”

“चुप हा जाओ बे।” तेंदूर के पास से एक रोमदार आवाज आई। घातेंम उठा और मरियल चाल से बरामदे के दरवाजे की ओर जाने लगा। पंछे से उसके छोटे भाई की डाँट सुनाई दी “नने दर करों चले ! जूते पहन कर जाओ—कहीं सर्दों लग गई तो लेने के देने पड़ जायेंगे।”

जाहिर है हर शख्स इस प्रकार की उक्तियों का आदी था—और वे सब खामोशी से उन्हें टाल दिया करते थे। घातेंम ने स्नेहपूर्ण आर मुस्मान भरी दृष्टि से अपने भाई का ओर देखा और उसे आँख नारकर अपने फटे-पुराने बूट पहन लिये।

सुनके दश रज हुआ। उन लोगों ने अपनी तनहाई और अजनबित्त के एहसास से मेरा दिल डूबने लगा। बर्फानी तूफान गर्दा खिड़कियों को पीट रहा था—नहर नया रही थी। इस बिस्म के लोग क नने देना था और उनके स्तभाव को भी मैं गुड-गुड स्तभाने लगा था।

मैं जगता था कि उनमें से लामा प्रलेक की आना तु व और प्रदल सभ-मन शित स गुजर रहा थी—वर सत्ता है नीच व निराल्य जल-वरण में पेज हुई और फज्जल चटा था, और जिन्हे

धोमल व लचकदार जौहर को सँकड़ों हथौड़ियों से पीट-पीट कर शहर अपनी तर्ज़ में ढाल रहा था--कुछ को विस्तृत कर रहा था और त्रकियों को सकुचित ।

नगर की क्रूर और निमम कारस्तानी विजेषतया उस समय अधिक स्पष्ट दीखने लगती थी जबकि ये सादगी पसंद लोग देहानी गीत गाने लगते और उन गीतों व सगीत में अपनी आत्माओं की दर्दनाक हैरानी और मूक वेदना समो देते थे ।

दुख की मारी गरीब एक गोरी

अचानक उलानोव ने ऊँची और लगभग स्त्री की-सी आवाज़ में गाना शुरू किया । फिर कोई और अनायास ही गाने में शामिल हो गया .

रात को खेत में चली आई .

चूँकि शब्द 'खेत' कुछ मंद सुर में गाया गया था इसलिये दो-तीन और गाने में शामिल होगये । अपने सिरों को और भी नीचे झुकाकर, अपने चेहरे छिपाते हुये वे अपने स्मृति-सागर में डूबने-उतारने लगते :

खेत में छिटकी हुई थी चाँदनी

और हवायें गारही थीं रागनी

अभी गीत की अतिम पक्ति नहीं गाई गई थी कि वानुक ने सिसकी भरे स्वर में उन्हें शुरू से दुहराना शुरू कर दिया .

दुख की मारी गरीब एक गोरी .

गीत और भी अधिक सत्रल और बुलंद हो गया :

सटँ भोंको से कदा गोरी ने यह

ऐ सहेली, ऐ मेरा प्यारा हवा

मेरे दिल की धड़कनों को रोकदे

मुझ से मेरा आत्मा का छीनले

और जब वे यह गीत गारदे होते तो ऐसा लगता कि खेतों से

चलकर शीतल व मद वायु का भौंका भट्टियारखाने में घुस आया है।
 त्रार सुखद विचार मस्तिष्क पर छाए जाते हैं—वे विचार जो मनुष्य
 को उन्नत व उसके हृदय को दयालु बनाते हैं। फिर सहसा जैसे कोमल
 शब्दों की उदासी पर लज्जित हो कोई बुदबुदाता।

“आहा, वह तो बेचारी थक गई ”

उलानोव और भी ऊँचे और उदास सुर में गाया, उसकी गर्दन की
 नसें उभड़ आईं और चेहरा सुख अगारा हो गया

दुख की मारी गरीब एक गोरी

आत्मा को झुकझोरने वाली आवाजें उठती और गीत उदासी के
 अथाह सागर में टूट जाता

उसने रोकर सर्द भोंकों से कहा

ऐ सहेली ऐ मेरी प्यारी हवा

तू मेरा मायूस दिल ले जा वहाँ

दूर जगल में अंधेरा हा जहाँ

“और मैं शर्त लगाता हूँ कि वह—” गाने के दौरान में ही नवती ने
 एक त्रसलील और गदा व्यंग्य कस दिया। अंधियारे तहरखाने और गंदे
 आँगन की दुर्गंध खतों की सुगंधित वायु को दूषित कर देती है।”

“नरे लानत है इस सत्र पर !” किसी ने ठण्डी सास भर कर कहा।

वानुक और मधुरतम वाणी वाले अन्य गायक जोर की तान लगाते
 मानो वे वषाक्त नीली लपटों और दुर्गंधमय शब्दों को ठरडा करना
 चाहते हों, किन्तु अन्य लाग प्रेम की दुखद गाथा पर और अधिक
 लज्जित होने लगते—वे जानते थे कि शहर में प्रेम दस कोपेक में खरीदा
 जा सकता है, वे उसे भी खरीदते हैं और उसके साथ ही शारीरिक रोग
 और भयानक बलक भी—और उसके सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण दृट
 हो चुका था।

दुख की मारी गरीब एक गोरी

प्रेम करता नहीं है दूँते कोई

“अरे इतनी शालिन न बनो—नहीं तो एक-दो नहीं दस पड़ जायेंगे पीछे ”

“उन्हें, उन चंचल छोकरीयों को तो ब्रम यह आता है कि विवाह करले और हम पुरुषों की गर्दनों पर सवार हो जायें । ”

“यह भी त्रिलकुल सच है । ”

उलानोव आँखें मीच कर खूब गता और उस समय उसके दुराचारी, वृद्ध चेहरे पर बड़ी सुन्दर मुर्गियाँ पड़ जाती और वह एक शर्माँली मुस्कान से दयकने लगता ।

लेकिन अक्सर वेसुरे लोग गीत को इस प्रकार त्रिगाढ़ देते हैं जिस प्रकार स्वच्छ वस्त्रों को कीचड़ की छींटें । और वानुक को अपने तर्ह यह मानना पड़ता है कि उसकी वह दर्दभरी आवाज अब खत्म हो चुकी है । अब वह अपनी चु धी आँखें खोलता और उसका मुँहाया हुआ चेहरा धृष्टतापूर्ण मुस्कान से विकृत हो जाता और उसके पतले होठों पर कुछ अपशब्द रेंगने लगते । एक श्रेष्ठ गायक की हैसियत से वह अपनी कीर्ति कायम रखने का इच्छुक था । और उस जैसे आलसी और अपने साथियों में अप्रिय व्यक्ति का वह यश ही तो था जिसके कारण वह भटियारखाने में अब तक टिका हुआ था ।

अपने पतले और लाल बालों वाले सिर को झटका देकर वह बड़ी बारीक आवाज में चीखता :

क्या मजा आया हमे प्रलोग्नी बाजार में

एक विद्यार्थी नशे में धुत्त था लेटा वहाँ

दुर्भावना भरे आनन्द में मग्न यह अष्ट गीत गाते हुए सबके सब झूमने, हू-हू करने और सीटियाँ बजाने लगते और सारा भटियारखाना एक आवाज़ में चीख उठता

लेटकर वह छल-कपट में मुस्कराता था वहाँ

ऐसा प्रतीत होता था मानो सूअरों का एक समूह किसी सुन्दर वाटिका में घुस कर फूलों को रौंद रहा हो । उलानोव चिनोना और नीच था ।

उत्तेजना से वह उन्मत्त हो गया, उसके उर में ज्वाला भडक उठी, उसके चेहरे पर चकत्ते पड गए थे उसकी आँखों की पुतलियाँ उबली पड रही थी, अपने शरीर को बड़े निर्लज और अश्लील ढंग से बल दे कर वह बड़ी शर्मनाक हरकते कर रहा था और उनकी ककन आवाज अचानक और भी सस्त हो जानी थी और विषय-वाननाएँ हृदय को बरमाने लगती थी ।

आओ सुन्दरियो आओ आओ नारियो ।

वह हाथों को लहरा कर गाता और बाकी सब भी उन उत्तेजक कोलाहल में शामिल हो जाते ।

जल्दी आओ हैया हो ।

आओ आओ ।

आओ आओ ।

गाटी, चिकनी चिपचपी कीचड उबल रही थी और उसमें बग-हती हुईं निनकिया, भरती हुईं मानवीय आत्माओं को पकाया जा रहा रहा था । वह पागलपन असह्य हो गया था, उसका दृश्य-मात्र ही ऐसी उन्मत्तता उत्पन्न करता था कि जी चाहता दीवार से मिर फोट ले । लेकिन इसके बजाय होता यह कि आप अपनी आँखे बन्द कर लेने और खुद भी वह अश्लील गीत गाने लगते—शायद दूसरों से भी ज्यादा जोर से । अपने नाधियों पर आपको तरस आन लगाना और यह विनाशकारी भावना आपको परास्त कर देती । इसके अतिरिक्त किसी को अपनी श्रेष्ठता अनुभव करने का अवसर बार-बार तो हाथ आना नहीं है ।

बन्नी-बन्नी हमारा मालिक दवे पाँव आ धमकना या नाल घुड़राने वाली वाला बल्लर्क साइका दौड़ा-दौड़ा आ जाना ।

'भजे मार रहे हो ना पट्टो ?' सम्मोहक विपत्ती किन्तु सीट आवाज में घुटता पर साइका तो दो ही चीख पत्ता

“अवे इतना हो-हल्ला नही, हरामियो ।”

और भडकते हुए शोले फौरन ठण्डे पड जाते । ये लोग जिस खुशी और उत्साह से यह नादिरशाही हुकम मान लेते थे उममे तो आत्मा पर और भी अधिक गहरा और बोझिल अन्वकार छा जाता था ।

एक दिन मैंने पूछा

“भाइयो ! तुम लोग अच्छे-अच्छे गीतो की मिट्टी पलीद क्यों करते हो ?”

उलानोव ने चकित दृष्टि से मेरी ओर देखा ।

“क्यों, क्या हम लोग खराब गाते हैं ?”

और ओसिप शातुनोव ने अपनी भारी आवाज में, जो बहुधा निरुत्साह-सी लगती थी, कहा—

“गीत को तो हम चाहे तो भी नहीं बिगाड सकते । वह तो आत्मा की भाँति होता है जो अमर होती है । हम सबका भौतिक शरीर समाप्त हो जायगा परन्तु गीत सदैव जीवित रहेगा वह सदैव अजर-अमर रहेगा ।”

जब ओसिप बोलता था तो मठ के लिये चण्डान एकत्र कग्ने वाली भिक्षुणी की नाई नजरें नीची कर लेता था । और जब वह सामोश होता था तो उसके चौड़े चपटे मुँह की कपोल-पलकें निरन्तर हिलती रहती थी मानो यह भीमकाय व्यक्ति कोई चीज हमेशा चवाता ही रहता हो ।

लकड़ी की खपच्चो को जोड-जाड कर मैंने एक वुक-स्टैंड सा बना लिया था और जब मैं आटा गूध चुक्ने के बाद नानखताइयाँ चुनने के लिए अपनी मेज पर आता तो उस स्टैंड पर मैं अपनी किताब खोलकर रख लेता था और जोर-जोर से पढकर सबको मुनाता था । मेरे दोनों हाथ तो बराबर काम में लगे रहते थे इसलिए पन्ने उलटने का काम मिलोव के मुपुर्द था—वह उस काम को बड़ी श्रद्धा से करता, हर बार

बनावटी अन्दाज में जोर लगाता और उँगलियों में काफी धूक लगा कर पन्ना उलटता । यह काम भी उसी के सुपुत्र था कि यदि मालिक सहसा बान धमके तो वह भेज के नीचे लात चलाकर मुझे इशारा करदे ।

लेकिन भूतपूर्व नैनिक कुछ खोया-खोया-ना रहता था । और एक दिन जब मैं टाल्टाय की "तीन भाइयों की कहानी" पढ़ रहा था तो मुझे अपने कन्धे के ऊपर से सेम्यानोव की घोड़े की-सी हिनहिनाहट सुनाई दी । उनका छोटा-सा गोल-मटोल हाथ अचानक बाहर निकला और उसने किताब झपट ली और पूर्व इसके कि मैं समझूं मैंने देखा वह किताब हाथ में झुलाता हुआ तेंदूर की ओर जा रहा है और कह रहा है

'वाह ! यह बात मुझे बहुत पसन्द है क्यों ? बड़ा चानाक है "

मैंने लपककर उसे पकड़ा और बाजू दबोच कर कहा

"किताब नहीं जला सकते तुम !"

"कौन कहता है ?"

"नहीं जला सकते ! मैंने कह दिया ।"

भटियारखाने में मन्नाटा छा गया । मुझे नानदाई ली चटी हुई त्पोरियाँ और मुम्बराते हुए दात नजर आये और मुझे लगा वह जानने ही वाला है

'टूट पड़ो रस पर ।"

मेरी आँखों के आगे अन्धेरा छा गया । हरे-हरे चक्कर नजरो में घूमने लगे और मेरी टांगें तरलने लगी । सब तो तन-मन में जान में लगे हुए थे नातो उन्हें जल्दी ही कि एक मान स्वप्न बनने पारन इन्ना शर्म का देना " ।

नहीं जाना सकता ? मालिक ने मेरी ओर देखे दिना है मन्नि-
एष नदर में उहारा । उसका नाम एक और जान गया था माने कुछ
मुझे या प्रपन्न का नाम ही ।

लाओ, इधर लाओ ।”

“अच्छा लेनी ।”

मैने मसली-ममलाई किताब लेली और मालिक का वाजू छोड़ कर वापस अपनी जगह पर आ बैठा । वह भी मर भकाये हमेशा की तरह चुपचाप बाहर आँगन में चला गया । भटियारखाने में बड़ी देर तक निस्तब्धता छाई रही । फिर नानवाई ने बड़ भट्ट अन्दाज़ में अपने चेहरे का पसीना पोछा और जमीन पर पाँव फटकारने हुए बोला

‘आयहाय, कम्बस्तो ! क्या दिन दिखाये है ! मुझे तो पूरा यकीन था कि वह तुम सब पर टूट पड़ेगा ।’

“और मुझे भी ।” मिलोव ने खुशी-खुशी हाँ में हाँ मिलाई ।

“अरे साहब लडाईं होते-होते रह गईं ।” बजारे ने खेद-पूर्ण स्वर में कहा ।

“अच्छा तो बडबडिय ! अब जरा चौकन्ना रहना । अबके ता छोड़ दिया उसने पर आइन्दा बदला लेलेगा ।”

कुजिन ने अपना सिर हिला कर बडबडाते हुए कहा

“यह जगह तेरे लिए ठीक नहीं, समझा भाई ! हम भगडा-टण्टा नहीं चाहते । मालिक को गुस्सा तू दिलायेगा भगतना पड़ेगा हम सबको ।”

याश्का आत्युखोव ने सैनिक को दबी आवाज में गालियाँ देते हुए कहा

“क्या उसे आते हुए नहीं देखा था तूने, क्यों वे बौडम ?”

‘हाँ ऐसा ही लगता है ।’

“तो त्या तुझमे तथा नहीं था ति दरा देयता रहना ।”

“हाँ पर चूक गया इस बार क्या करें ।”

भटियारखाने के अधिकतर मजदूर उदामीन थे और चुप साधे हुए थे । और बैठे हुए बाकी लोगों का गुराना सुन रहे थे । मैं भाँप ही न

सका कि वे मेरे बारे में क्या सोच रहे हैं । मैं कुछ उद्विग्न-माथा ही चुनाचे मैंने फँसला किया कि यहाँ से चला जाना ही बेहतर है । ऐसा लगा जैसे बजारे ने मेरे इरादे का अनुमान लगा लिया हो क्योंकि वह क्रोधित हो बोला

“देख वे बड़बुडिये ! ऐसा कर अपना हिसाब साफ करने । वरना देखना नाक में दम हो जायगा तेरा । येगोर को तेरे पीछे लगा देगा वह और दस नमक कि हुआ काम तमाम ।”

उन्नी वक्त यादका फर्श पर ने उठ खड़ा हुआ जहाँ अभी तक वह दज़ियो की तरह आलती-पालती मारे चटाई पर बैठा था । उठ कर जब वह खड़ा हुआ तो कमानदार, बल खाई हुई टांगी के ऊपर उमना पेट बाहर को निकल पड़ा । उनकी दूधिया नीली आँखों में भयानक चमक पंदा हो गई और वह मुक्का तान कर बोला

“त्या ? ताम छोड कर चला दाये ? अरे मार मत्ता इनते न्दरे पर ! अगर यह तुमने लडेदा तो मैं तुम्हारा नाप दूँदा ।”

क्षण भर के लिए तो सन्नाटा छाया रहा और फिर महना बहूँ हो का बादल फट पड़ा—ताजगी भरे और सबल बहूँहे जो गमियों में वारिश के जोरदार छीटों की तरह मनुष्य की आत्मा के सारे विकार और मुर्काहट धोकर उसे पवित्र और निर्मल कर देता है । इंसानों को एक ठोम चट्टान बना कर एकजान कर देता है और जो परन्प मंगी और सहानुभूति के सम्बन्धों से और भी दृढ़ हो जाता है ।

तमाम आदमियों ने अपना काम छोड़ दिया और हैंना के सारे पेट पकड़े-पकड़े फिरने लगे आँखें लोट-पोट हो गईं और आस-पास के गाँवों पर बहने लगे । यादवा भी कुछ भीचक्का हो हैंना रहा था और अपनी बनील भटक रहा था ।

‘त्यो नहीं ? मैं क्याउँदा उसे मजा । मैंना ना कोई न्दरे उठाने दे माउँदा

कोई बुदबुदाया

“हाय ! अस्पताल में ही किसी ने उसका काम तमाम न कर दिया ।”

फिर नीरवता और उदासी छा गई । एक मिनट बाद नानवाई न फिर सुझाया

“सेम्योनोव को परेड करते देखना चाहते हो ?”

वरामदे में खड़ा में दीवार की दरार में से झाक कर बाहर आँगन में देख रहा था । आँगन के बाच में हमारा मालिक एक खाली बक्म पर बैठा था । उसकी टाँगें नगी थी कुर्ते के दामन में कोई दो-तीन दर्जन पाव रोटियाँ थी । चार बड़े-बड़े नसली सुअर उसके घुँनों से अपनी य्थनियाँ रगड़-रगड़ कर जोर-जोर से खरखरा रहे थे और वह उनके लाल जबड़ों में पाव रोटियाँ ठूसता जाता और सुअरों के पेट पपपपा-पपपपा कर बड़ी नम, धीमी और अनजानी आवाज में उड़-बड़ा रहा था ।

“हूँ हूँ, खाओगे ? पाव रोटियाँ खाओगे ? लो, लो खाओ ।”

उसका भरा हुआ चेहरा, हल्की, स्वप्निल मुस्कान से खिला हुआ था । उसकी फुल्ली आख में जान पड़ गई थी और वह गहरा लगाव प्रकट कर रही थी । कहना चाहिए कि उसके इर्द-गिद की हर एक चीज में कुछ विलक्षण अजनवियत पैदा हो गई थी । उसकी पुस्त पर एक चौड़ा-चकला, चेचक भूँह दाग, मूँदल सफाचट नीली टोटी वाला कोई व्यक्ति खड़ा था जिसके बायें कान में चादी की बाली पड़ी थी । निर पर टोपी गद्दी की तरफ तिरछी किए उसने बटन जैती गोल-गोल धुंधली आँखों से सुअरों की ओर देखा जो उसके मालिक के साथ खेच रहे थे । उसके दोनों हाथ जेबों में ठुँसे अन्दर-ही-अन्दर बल खा रहे थे ।

अब समय आ गया है इन्हें बचने का, ' उसने कबरा खनिते में

सबसे पहले शातुनोव की हँसी रुकी । हथेली से मुँह पीछते हुए और किसी की ओर देखे बिना उसने कहा

“अबके भी याशका ही ने हिम्मत की, लौण्डा ठीक कहता है । बेकार बेचारे को डरा रहे हो । वह तो तुम्हारे भले की बात करता है और तुम उसे निकाल बाहर करने पर तुले हुए हो ।”

“अरे पर सावधान कर देने में तो कोई हर्ज नहीं है ।” याशका अपनी हँसी पर कावू पाने के बाद बोला । “हम कुत्ते तो हैं नहीं, क्यों हैं ना ?”

और सब-के-सब बड़ी दिलचस्पी ले लेकर यह उपाय ढूँढने लगे कि मुझे येगोर के पजे से किस तरह बचाया जाए ।

“किसी को मार डाले या अपाहज कर दे—उसके लिए सब समान है । फर्क ही क्या पडता है, कुछ भी नहीं ।”

बचाव के और हमले के निरर्थक और मूर्खतापूर्ण मन्सूबे बनाने में याशका सबसे वाजी ले गया । उधर बूढा कुजिन एक कोने में आँखें गाढ कर गुर्राया

“क्यों रे तुम लोगो को कितनी बार कहना पडेगा कि मूर्ति भाड-पोछ कर साफ कर दो ?”

बजारा अपना बेलचा अँगोठी में चला रहा था और जैसे अपने आप ही से तर्क-वितर्क कर रहा था

“मूसीवत के लिए हरेक को तैयार रहना चाहिए यहाँ तो अब दिन—रात ऋगडा-टण्टा होने लगा है—।”

आँगन में कोई भारी कदमो से चलता हुआ आया और खिडकी के पास से गुजर गया और बूझ-बुझवड याशका ने जोरदार लहजे में कहा

“येगोर है सुअरो को एक नजर देख कर आया होगा अब फाटक वन्द करने गया है ।”

सबसे पहले शातुनोव की हँसी रुकी । हथेली से मुँह पोछते हुए और किसी की ओर देखे बिना उसने कहा

“अबके भी याश्का ही ने हिम्मत की, लीण्डा ठीक कहता है । बेकार बेचारे को डरा रहे हो । वह तो तुम्हारे भले की बात करता है और तुम उसे निकाल बाहर करने पर तुले हुए हो ।”

“अरे पर सावधान कर देने में तो कोई हर्ज नहीं है ।” याश्का अपनी हँसी पर कावू पाने के बाद बोला । “हम कुत्ते तो हैं नहीं, क्यों हैं ना ?”

और सब-के-सब बड़ी दिलचस्पी ले लेकर यह उपाय ढूँढने लगे कि मुझे येगोर के पजे से किस तरह बचाया जाए ।

“किसी को मार डाले या अपाहज कर दे—उसके लिए सब समान है । फर्क ही क्या पडता है, कुछ भी नहीं ।”

बचाव के और हमले के निरर्थक और मूर्खतापूर्ण मन्सूवे बनाने में याश्का सबसे बाजी ले गया । उधर बूढा कुजिन एक कोने में आँखें गाड़ कर गुराँया

“क्यों रे तुम लोगो को कितनी बार कहना पडेगा कि मूर्ति झाड़-पोछ कर साफ कर दो ?”

बजारा अपना बेलचा अग्रीठी में चला रहा था और जैसे अपने आप ही से तक-वितक कर रहा था

“मुसीबत के लिए हरेक को तैयार रहना चाहिए यहा तो अब दिन—रात भगडा-टण्टा होने लगा है—।”

जांगन में कोई भारी कदमो से चलता हुआ आया और खिडकी के पास से गुजर गया और बूझ-बुझवड याश्का ने जोरदार लहजे में कहा

“येगोर है सुअरो को एक नजर दख कर आया होगा अब फाटक बन्द करने गया है ।”

कोई बुदबुदाया

“हाय ! अस्पताल में ही किसी ने उसका काम तमाम न कर दिया ।”

फिर नीरवता और उदासी छा गई । एक मिनट बाद नानवाई न फिर सुझाया

“सेम्योनोव को परेड करते देखना चाहते हो ?”

वरामदे में खड़ा में दीवार की दरार में से झाँक कर बाहर आँगन में देख रहा था । आँगन के बाच में हमारा मालिक एक खाली बक्स पर बैठा था । उसकी टांगें नगी थी कुर्ते के दामन में कोई दो-तीन दर्जन पाव रोटियाँ थी । चार बड़े-बड़े नसली सुअर उसके घुँनों से अपनी थूथनियाँ रगड़-रगड़ कर जोर-जोर से खरखरा रहे थे और वह उनके लाल जबड़ों में पाव रोटिया ठँसता जाता और सुअरों के पेट उपधपा-उपधपा कर बड़ी नर्म, धीमी और अनजानी आवाज़ में बड़-बड़ा रहा था ।

“हँ हँ, खाओगे ? पाव रोटियाँ खाओगे ? लो, लो खाओ ।”

उसका भरा हुआ चेहरा, हल्की, स्वप्निल मुस्कान से खिलता हुआ था । उसकी फुल्ली आँख में जान पड़ गई थी और वह गहरा लगाव प्रकट कर रही थी । कहना चाहिए कि उसके इर्द-गिद की हर एक चीज़ में कुछ विलक्षण अजनवियत पैदा हो गई थी । उसकी पुस्त पर एक चौड़ा-चकला, चेचक मुँह दाग, मूँछें लकड़ाचट नीली टोटी वाला कोई व्यक्ति खड़ा था जिसके बायें कान में चादी की बाली पड़ी थी । तिर पर टोपी गद्दी की तरफ़ तिरछी किए उसने बटन जैसी गोल-गोल धुंधली आँखों से सुअरों की ओर देखा जो उसके मालिक के नाव खेन रहे थे । उसके दोनों हाथ जेबों में ठुँसे अन्दर-ही-अन्दर दब खे रहे थे ।

अब समय आ गया है इन्हें उचने का, 'उत्तने क्वस ज्वनि न

कहा । उसके उस चेहरे पर कोई शिकन तक नहीं पडी ।

“बडा वक्त पडा है, ” मानिक ने तडख कर जवाब दिया । ‘ऐमे जानवर फिर कब मिलेंगे—?’

एक मुअर ने उसकी पसलियों में अपनी यूयनी रगडनी शुरू कर दी । सेम्योनोव सन्दूक पर बैठे-ही-बैठे झूम गया और अपना बेडील शरीर फुदकाते हुए उमने इस प्रकार दाँत निकाले कि चेहरे की मोटी-मोटी शिकनो में उसकी बेजोड आखे गायब हो गई ।

“रोगी-पोगी साधु !” उसने ठहाका मार कर चिंघाडते हुए कहा । ‘अँधेरे में रहते हैं बेचारे अँधेरे में ! हाय हाय, देखो तो चू चू ! ओहो, देखो तो ! अरे मेरे नन्ह-मुन्ने साधु, मीधे मादे ”

सुअर सब-के-सब उक्ता देने की हद तक समान थे । और मालूम होता था जैसे एक ही पशु सारे आँगन में दौडता फिर रहा हो । हास्या-स्पद जोर भरी समानता, छोटे-छोटे उनके सिर, उनकी छोटी-छोटी टांगे और उनकी नगी-नगी तोड़ें जमीन से लगती हुई और वे अपनी बेकार छोटी-छोटी आँखों की मफेद पलकों को जोर-जोर से झपकाकर उस आदमी से टकराते फिर रहे थे । और मैं खडा उनको यो देख रहा था जैसे कोई भयानक सपना देख रहा हूँ ।

गुरानि, हिनहिनाते और दाँत कटकटाते ये मुअर अपनी ललचाती यूयनिया मानिक के घुटनों में ठँम रहे थे । उसकी टांगो और पसलियों ने रगड रहे थे । और वह खुद भी चिंघाटे मार रहा था । एक हाथ ने उनको धक्का देकर भगा देता और दूसरे ने, जिसमें वह रोटी के टुकड़े लिए हुए था, उनको सताता जाता । कभी तो रोटी बाना हाथ उनके एकदम समीप ले जाता और फिर एकदम हटा लेता । दगादगा वहनहा उसके पूरे निस्म को थलथल हिला देता । इस हाल में खुद भी वह सुजरो जैसा मालूम होरहा था । फर्क जगर कुछ था तो सिर्फ यह कि वह उनमें भी जगिक डरावना घृणित, और विलक्षण था ।

आहिस्ता-आहिस्ता अपने सिर को ऊपर उठाकर येगोर वडी देर तक आकाश को तकता रहा जो इतना ही धुंधला और सर्द था। जितनी खुद उसकी आँखें—चमकती हुईं—वालियाँ उसके कंधों पर धिरक रही थीं।

कुछ अस्वाभाविक ऊंची आवाज में उसने कहा, “अस्पताल में उनमें मुझे राजदराना तीर पर बताया था कि कयामत कभी आयेगी ही नहीं।”

सेम्योनोव ने जो एक सुअर के कान पकड़ने की कोशिश कर रहा था पूछा

“अच्छा नहीं आयेगी ?”

“नहीं।”

“शायद वह भूठी, मक्कार है।”

“हाँ होगी।”

मालिक उन च्लबुले, साफ और चिकने शरीर वाले नुंगर में खेलता रहा। लेकिन अब उसके हाथों की हरकत में मुन्ती पैदा हो गई थी। मालूम होता था कि वह एक गया है।

“उसका वक्ष बड़ा सुन्दर है और नयन मद भरे।” येगोर ने तीन दिन याद करके ठण्डी सास भरते हुए कहा।

“कौन, नर्स ?”

“और नहीं तो क्या ! कयामत तो वह कहती थी कभी आयेगी ही नहीं पर अगस्त में सूर्य-ग्रहण पूरा हो जायगा।”

सेम्योनोव ने फिर उसी अविश्वास से पूछा—

‘बिल्कुल पूरा ? मच बताना।’

“हा हा, पूरा। लेकिन वह कहती है कि ज्यादा देर तक नहीं रहता। वस एक परछाई आयेगी और चती जायेगी।”

“परछाई कहाँ से आती है ?”

“मुझे क्या मालूम शायद भगवान के पास से । ”

मालिक उठ खड़ा हुआ और कठोर व कर्कश स्वर में बोला.

“मूर्खा है वह । सूर्य के सामने कोई परछाई नहीं टिक सकती । उसकी किरणें उसे भी चीर कर निकल जायेगी । यह तो हुई एक बात । दूसरी यह कि लोग कहते हैं भगवान स्वयं जाज्वल्यमान है । तो फिर भला उसकी छाया कहाँ से आई ? फिर आकाश में शून्य के सिवाय कुछ भी नहीं है । कभी तुमने ऐसी चीज की परछाई देखी है जो कुछ भी न हो ? वह निरी बुद्धू है बिल्कुल बेवकूफ । . ”

“वेशक,वेशक । हर औरत की तरह । ”

“यही तो बात है अच्छा तो इन वच्चों को सुअरखाने में बन्द कर दो ।”

“मैं किसी लडके को बुलाता हूँ ।”

“अच्छा बुलालो ! लेकिन हाँ देखो वे उन्हें मारे नहीं । और अगर उन्होंने मारा तो मुझे बताना । मैं उनकी खबर लूँगा ।”

“मुझे मालूम है ।”

मानिक आँगन में से गुजरता हुआ चला गया और सुअर उसके पीछे-पीछे दौड़े जैसे मुअरनी के पीछे दौड़ते हैं ।

इसके दिन सुबह सवेरे मालिक ने बरामदे की ओर से हमारे भट्टियारखाने का दरवाजा धक्का देकर खोला और चौखट के सहारे खड़ा होकर विपरीत मधुरता में रूठा

“मि० बडबडिये, जरा जाओ तो आँगन में से आटे के बोरे लाकर बरामदे में तो रख दो।”

खुले हुए दरवाजे में से सर्द हवा के सफेद बादल अन्दर घुन जाये और उवालने वाले निकिता के गिर्द छा गए। उसने मुडकर मालिक का देखा और निवेदन किया

‘जरा दरवाजा बन्द कर दीजिए वासिली सेम्योनोविच ! बड़ी तज आँधी चल रही है।’

‘क्या ? आँधी ?’ सेम्योनोव गुराया और अपनी छोटी-मी मुट्ठी से उसकी टाट पर ठोग मार कर दरवाजा योही खुला छोड चला गया। निकिता की आयु कोई तीस वष की थी लेकिन देखने में वह लडका ही मालूम होता था—बुजदिल—सा नाटे कद का आदमी जिसके पीले चेहरे पर बेरग वालो के गुच्छे-से थे। बड़ी बड़ी-आखें जो हमेशा खुली रहती थी और कसक व वेदना तथा भय के कारण प्यराई हुई सी नजर आती थी। विगत छ वर्षों से दिनचर्या यह थी कि सुबह ५ बजे से रात के ८ बजे तक वह उबलते हुए पानी के कडाव के सामन खडा होकर उसमें निरतर हाथ डुबोता रहता था। सामन ने तो रह-कती हुई आग के शोले उसका जिस्म भुलसाते रहते थे और पीछे न दिन में सैकडो बार दरवाजा खुलता और ठण्डी हवा के बोरे आकर उसकी पीठ सुन्न कर देते। गठिया की बीमारी के कारण उसकी उँगलिया ऐठ गई थी, फेफडो पर सूजन आ गई थी और टागो में नीली-नीली नसो की गाँठे उभर आई थी।

एक खाली बोरा पीठ पर संभालकर में बाहर आगन में चला गया। ज्योही में निकिता के पास आया उसने दात पीसते हुए बडबडा कर कहा

“सब तेरा कस्त्र ह, गारत हो जाए त् ।”

गदले पसीने की तरह आस उसकी बड़ी-बड़ी आखों में बहन ला

में निढाल हो बाहर आया और सोचने लगा

“मुझे यहाँ से जाना ही पड़ेगा।”

एक जनाना समूर का कोट पहने मालिक आटे के बोरे के ढेर के पाम खड़ा था—कोई डेढ़ मी बोरे होंगे और उनके एक तिहाई भी बगमदे में नहीं आ सकते थे। यही मैंने मालिक में भी कहा और उमने मुँह बना कर जवाब दिया

“अगर नहीं आये तो मैं तुम्हीं से उन्हें फिर बाहर निकलवाऊंगा। तुम काफी बचशाली हो।”

मैंने कंधे पर से बोरा घसीट कर फेंक दिया और सेम्योनोव से कह दिया कि मैं इस बकवाम को बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरा हिसाब साफ कर दो।

“चलो चलो, काम करो।” उमने व्यग्य किया, “सर्दी का मौसम है कहा जाओगे? भूखो मर जाओगे।”

“मेरा तो तुम हिसाब साफ कर दो।”

उमकी फुलनी आख सुखे ग्रगारा हो गई और मजरी आँख की पुतली दृष्टता में घूमने लगी। मुक्का तान कर और मिसकियाँ लेते हुए उमने कहा

“घुमा याना चाहते हो?”

मार गुम्मे में मेरे तनबदन में जाग लग गई। उमके तने हुए हाथ पर मैंने हाथ मार कर गिरा दिया और उसका कान पकड़ कर चुपचाप मसलना और खीचना शुरू कर दिया। इतने ही में उमका बाया हाथ मेरे सीने पर पहुँच गया और उमने बोखलाई हुई और दबी-दबी आवाज में खीचना शुरू कर दिया।

‘टहरो, टहरो! क्या कर रहे हो? तुम्हारा मानिक है। थोड़े ही कमबख्त।’

फिर बारी-बारी अपने चोंट खायें हुए दाहिने हाथ का बाय हाथ

से दबाते हुए अपने सुर्ख कान को हिलाते हुए उसने मुझ अपने लाल-लाल दीदे निकाल कर घूरा और बडबडा कर कहन लगा

“अपने आका के साथ यह हरकत ? क्यों वे ! अब तू ह कौन ? अरे मैं मैं पुलिस को बुगाऊगा ! मैं अभी

और अचानक जपन होठो को भीचते हुए जंस कि उसे बडी तकलीफ हो रही हो उनने लम्बी-सी दद भरी सीटी बजाई और अपनी दाहिनी आख जो झपकाते हुए नुड गया ।

मेरा गुस्ता मुट्ठी भर सूखी घास की तरह भडक कर एकदम ठण्डा हो गया । धीरे-धीरे एक कोने की तरफ भारी कदमों से जाते हुए उनन बहुत ही भद्दी-सी आकृति बनाई । छोटे-से समूर के काट म से नान्न हुए उसके मोटे-मोटे पृष्ठे चोट खाए हुए-से घिरक रहे थे ।

मैं ठण्ड में बिल्कुल अकड गया था और च्कि वापस नटियारजान में जाने की इच्छा नहीं थी इसलिए बोरो को ढोकर वरामदे म ग जा कर अपने आपको गम करने का फंसला किया । जब मैं पहला धारा लेकर दौडता हुआ अन्दर गया तो शातुनोव नजर पडा । वह जमान में ऊँकड् बैठा दीवार की दरार में से झाक रहा था और देखते म मि-कुल उल्लू माल्म हो रहा था । उसके सरन बाल दररत की छान की एक लम्बी-सी पट्टी से बंधे हुए थे जिसके दोना तिरें उसकी पगानी पर पटे भवों के साथ-साथ हिल रहे थे ।

मैंने देख लिया ह,” उसने मन्तोप से कहा । तावटेंन जते उनन कल्ले जोर-जोर से हरकत कर रहे थे ।

‘ अच्छा तो फर क्या हुआ ?

उनकी छोटी-छोटी मगोलियन आख रहस्मय डग से कल गइ, उन से कुछ व्यग्रता भी प्रकट हो रही थी ।

‘ देखो !” उसने खडे होकर और करीब आकर कहा । इनने बार में मैं किसी से भी जिक्र नहीं करूँगा आर न ही तुम करना ।”

‘मेरा तो इरादा ही न था ।’

“विष्णुल ठीक । कुछ भी हो वह है तो हमारा मालिक । क्यों ह
ना ?”

“हां तो फिर ?”

‘हमें किसी-न-किसी का तो हुक्म मानना ही होगा । वरना
आपम में धीगा-मस्ती शुरू न हो जायगी ?’

वह अत्यंत गभीरता और आहिस्तगी से वकि खुसर-पुसर के
जन्दाज में बोन रहा था

‘कुछ आदर-मम्मान भी होना चाहिए, ममभे !’

मेरी ममभ में नहीं आया कि उसका मतलब क्या है और मुझे
गुस्सा जा गया ।

‘जहन्नम में जाओ तुम !’

शानुनोप ने मेरा हाथ पकड़ लिया और बड़े रहस्यमय ढंग में
मद न्बर में कहा

‘येगोर में उरने की कोई बात नहीं । भयावने सपनों को रोकने
का कोई मन्त्र जाता है तुम्हें ? येगोर को रात के सपने बड़े उरावने
-बाय जान है । उमे मन्त्र में बड़ा डर लगता है । उमने बड़ा पाप
किया है और उनकी जल्मा उमों के भय में दुखित रहती है । एक
बार रात ही सत्रोगमन में जन्मदत के पास में गुजरा तो देवता स्या
ह कि वह बड़ा मीचूद है और पृथनों के बच बड़ा गिडगिडा रहा है,
हे परमपिता परमेश्वर मुझे जचानक मत्यु में प्रचाना !’ ममभे तुम ?”

‘नही मैं नही ममन्ना !’

इस तरह उमहा अपने बच में करा !’

‘किसे तरह ?’

उर म । नासिती ही हवा न त रहना । वह तुमने पाप गना
नियम मानता ही है ।

मुझे अनुभव हुआ कि यह व्यक्ति मेरी भलाई चाहता है। इसलिए मैंने उसे धन्यवाद दिया और हाथ मिनाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। कुछ सकोच के बाद उसने भी अपना हाथ आगे किया। और जब मैंने उसकी गठीली हथेली गर्मजोशी से दवाई तो उसको शायद कुछ अफ-सोस हुआ और वह अपने होठ चवाते हुए आंखें नीची करके कुछ बड़-बड़ाया जो मेरी समझ में न आया।

“क्या कहा था तुमने ?”

“जाने दो, अब कुछ नहीं कहता।” उसने झुंझलाहट दर्शाते हुए कहा और भट्टियारखाने के अन्दर चला गया। मैंने बोरे ढोने शूट कर दिये। मेरे मस्तिष्क पर कुछ मिनट पहले की घटना वादल की नाई छाई हुई थी।

मैंने रूसी जनता के बारे में पढ़ा था—उसकी मंत्रीपूण भावना और समाज प्रेम भलाई की ओर उसका झुकाव। लेकिन लोगों को मैं अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर और भी ज्यादा निरुत्तर ने जानता था क्योंकि दस वर्ष की आयु से ही मुझे अपनी जीविता आप कमानी पड़ी थी। घर और स्कूल के प्रभाव ने मैं विल्कुल स्वतन्त्र हो चुका था।

जो कुछ भी मैंने पढ़ा था मेरे व्यक्तिगत अनुभव स्वयं उनकी पुष्टि कर रहे थे। यह सच है कि लोग हर अच्छी चीज में कुछ आनन्द अनुभव करते हैं, उसे नराहते हैं उसे प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं और इस अनगढ़, निराश जीवन को सुखमय और आशावान जीवन में परिणत करने की प्रतीक्षा करते हैं कि अच्छी चीजें जिनमें तरह-तरह का पान आजावे।

लेकिन मैं बहुधा सोचा करता हूँ कि अच्छी चीजें न पाए हम प्रचार प्रेम करते हैं जिन प्रकार बच्चे पारियों की तलाशिता न। उनकी सुन्दरता और अप्राप्ता पर आनन्द राग करते हैं। उनकी भी प्रतीक्षा

करते हैं जिम तरह किमी त्योहार को । लेकिन आम्हें लोगो को उसकी शक्ति में विश्वास नहीं होता । और ऐस तो बहुत ही कम होते हैं जो उसका सरक्षण और उसके विकाम की देखभाल करते हैं । उन का उदाहरण तो ऐसी विचित्रता बरती का-सा है जिम पर डेरो घाम उग जाई हो और जहा अगर कही हवा के भोके के साथ गेहूँ का कोई दाना जाजाय तो उसकी नर्म व नाजुक कापले पनपन ही नहीं पाती बल्कि वो ही ठिठुर कर रह जाती है ।

शानुनोव से मुझे दिलचस्पी पैदा हो गई थी-यह व्यक्ति मुझे कुछ असाधारण-सा प्रतीत होता था ।

कोई एक सप्ताह तक मानिक भटियारखाने में जाया ही नहीं जोर न ही उसने मुझे नाकरी में जलम किया । उधर मैंने भी कोई जोर नहीं दिया । मेरा कोई ठोर-ठिकाना या नहीं जोर फिर जिन्दगी यहा दिनों-दिन ज्यादा दिनचर्या हाती जा रही थी ।

शानुनोव जानबूझ कर मुझसे कतराता था । मैं उससे घनापिन करवाने करने का मौका डडता रहा, लेकिन सफल न हो सका । मेरे प्रश्नों का मानसोल उत्तर ज्यादा में ज्यादा यह हाता जा बट नजरें नीची लिये हुए और ब्रुगाती करने हुए देता ।

हा, काश कोई मही शब्द जानता ! लेकिन फिर भी प्रत्येक व्यक्ति अपने मन्त्रिक का आप मानिक हाता है ।

उसका व्यक्तित्व कुछ विचक्षण, गहन अन्वकार में छिपा हुआ था-

सन्यासी का-सा व्यक्तित्व, स्वभावतया वह अल्पभाषी था । बाजारी भाषा का कभी प्रयोग न करता था । परन्तु आराधना वह न तो मुवह उठकर करता था और न सोते समय । हा जब खाना खाने बैठता तो अपनी गहरी छाती पर कास का चिन्ह जलूर बना लता था । अवकाश का उसे यदि एक भी क्षण मिलता तो वह अन्धियारे से अन्धियारा कोना देखकर वहा जा बैठता । और या तो अपने फटे कपडे सीने लग जाता या फिर अंधेरे में बैठा जुएँ मारा करता । और हमेशा वह बहुत ही नीचे सुरो मे करीब-करीब फटी हुई आवाज मे यह गीत गुनगुनाता

हाय कैसा दुखो ने घेरा है ?

आज क्यो हर तरफ अन्धेरा है ?

कोई व्यग्य से उससे पछता

‘निर्फ आज ? कल क्या तुम बहुत खुश थे ?’

जवाब दिये बिना और नजरें झुकाए ही वह गुनगुनाता रहता

घर की खिची शराब है मैं चाहता नहीं

‘खैर तुम्हारे पास तो है ही नहीं । मेरा मतलब है घर की खिची हुई शराब ।’

उसने अपनी भवे तक न हिलाई मानो वह बहरा हा । और दुविच लय में गाता रहा

अपनी महबूब से मिल् जाकर

पाव इन्कार कर रहे है मार

पाव चलने की खो चुके ताकत

और दिल मे भी कुछ नहीं हसरत

बजारे याशका को उदासीपूर्ण गीत नहीं आने पे ।

ओ वे भेडिये !” वह नाराज होकर चीखा और उसकी बर्तीनी दिखाई देने लगी । वह फिर हुकारने लगा ।

अन्धकारनय कोने से मातमी गीत के रब्द नीर-धीर सुनाई देने ल

दिल पे रजोअलम का माया है
 हाय गम ने मुझे सताया है
 गम से बोझिल हूँ उस कदर छाती
 रात को नींद तक नहीं आती

“वानुक !” नानवाई ने हुक्म दिया । मुह बन्द करो । यह तो रम
 वुएँ में घोट कर मार देगा ! आओ हम कोई और गीत गाये ।”

सभी ने नृत्य का एक अश्लील गीत आरम्भ कर दिया । शातुनोव
 गहरी और भरई हुई आवाज निकालर हा था जोर उमके अदाज मे कुछ
 उदामीनता थी । गीत के असाधारणतया अश्लील शब्दो के मुकाबले मे
 यह उदामीनता श्लीलता की एक निराती अदा मालूम होती थी । कभी-
 कभी गीत उमकी आवाज मे दब कर लप्त हो जाता था ।

उजाहिर नानवाई ओर आर्तम मुझ पर कुछ मेहरबान मालूम होते
 ५—यह एक नई फिल्म का खेया है जिस शब्दो मे व्यक्त करना अस-
 न्य है । लेकिन उमको मे महसूस जरूर कर सकता हूँ । रहा याशका
 'नुतनुना' तो मानिक म मेरी झडप के बाद पहली ही रात को वह
 नम न भरा हुआ एक बोरा उम कोने मे घसीट गया जहा मे सोया
 करता था जोर पता कर दिया

‘हा तो अब मे तुम्हारे पाय बोया तब्ला ।’

‘अच्छा ।’

‘मे तहना है हम तुम दाम्त उन दाये ।’

‘चना बन जाने है ।’

वह फौरन रुद्धता हुआ मर पास जा पट्टा जोर बहुत ही राज-
 दाराना अन्दाज मे अपनी नाटी उजाउ ली म चाने हुए उमने मुझे
 अपना राजदार बनाया ।

दोनों मने एक तुरत वा बीदर न बातें तरत दया या । सच तहना
 है मने दया या । एन दफा रात वा मेरी जाय था दरे । चादनी रात

यी मैंने देखा ति मेरे पास ही एत तूहा नानयताई नतर-नतर तर धा रहा है । मैं चुपचाप रेदता हुआ उसते पास आया । उसी वक्त एत घीदर वहाँ आदया । फिर दो और आये और तूहे ने नानयताई धाना धोड दिया और अपनी भूरी मूछे हिलाने लगा । हमारे गूगे निनान्दर की तरह वे एत दूधरे ते वाते तर रहे थे । ना जाने त्या वाते तर रहे होंगे । तुछ बडे मजे की वात होगी, हैना ! यो गये क्या ?”

‘ नही तो । फिर क्या हुआ ?”

“ऐया मालूम होता था जैथे वह भीदरो ये पूछ रहा हो—तुम तहा ते आए हो ? और उन्होने तहा— गाँव से । तुम्ह मालूम ह जब गाव में अकाल पडता ह या जब आग लग जाती है तो गाव ये आतर ये शहर में जमा हो जाते है उन्हे मालूम रहता है कि आग क्या होगी । बुड्ढा बाबा कहता है उनथे, भाग जाओ तुम अब ।’ और ये उज्ज तर भाग जाते है । तुमने तभी देखा है ?”

“अभी तक तो नही ।”

मैंने देखा है ।”

और यह कहते ही उसने अचानक बडे जोर से कराँटा मिया जा उसका दम घुट रहा हो और फिर सुबह तक ‘कुनकुने की भावा गरी मुनाई दी ।

अब मालिक ने अपना कायदा बना लिया था ति नगीद-नरीय रोगाना ही हमारे भटियारखाने म आये । और वह नी छोट कर पने समय आता था कि जबकि मैं कोई किस्सा यह रहा ह , अपन माथिदो यो कित्तःव पटककर मुना रहा हँ । दवे पाव अदर आकर वह नेरे बारी तरफ खिडकी के पास तकडी के एत खाली टिप्पे पर बैठ जाता आर आर में उसे देख कर रक जाता तो वह बडे पँने न्यःनःनः न्वर ने कहता

बडबडाए जाओ प्रोफेसर साहब । चलो जाने जाना जना हत

डरो नहीं ।”

और वह बड़ी दर तक बैठ रहता । खामोशी में गाल फुला-फुला कर अपनी चंदिया के छिदरे बालों के नीचे अपने छोट-छोटे कान हिलाता रहता । बाल उसके इतने बारीक कटे हुए थे कि खोपड़ी पर चिपके हुए मुष्किन में नजर आते थे । कभी-कभी वह फटी हुई आवाज में पूछता

“क्या, क्या ?”

और एक दिन जब मैं भ्रमण्डल के बारे में बता रहा था तो वह बारीक और तेज आवाज में चीखा

“उहरो ! और तुम्हें कहा से आ गया ?”

“वह यही है ।”

“कहो ! कहा है ?”

“जानी वाइमि भी नहीं जानत ?”

“जो श जो मुझ बनाओ नहीं—कहा है वह ?”

जोर पथी हा हाई जाकार नहीं था । गहरी हदराओं में पार करसार गया हुआ था । जोर ममुद्रा की मतलब पर परमेश्वर की जन्मा उड रही थी ।”

ममुद्रा !” उमन मिता ही नाइ चीख कर हा और तुम ता यह मिद्ध करन ही चट्टा कर रहे थे कि पथी जाग का गोला थी । टहरा, म पादरी माह्व म पूछ गा कि कित्तावा में क्या जाया है ।”

वह उड खडा हुआ और गमगीन लहजे में यह फटना चला गया
‘तुम बहुत कुछ जानते हो उडमडिण !— क्या ख्यात है ? तुम्हारे लिए वह अच्छा है क्या ?”

माइना ने अपना मिर हिलाते हुए चिंतन स्वर में कहा

‘तुम्हें पानने के लिए वह उहरे काई चीज पड़ेगा ।”

उहरे का रात बाद मुन्गी माइना दोउना हुआ हमारे मडियाए खाने में जाया और हृन्म देत हुए चीख कर भागा

‘मालिक बुला रहा है तुम्हें !’

‘झून्झुन्ने’ न चपटी नाक वाला अपना दागदार मह उठाकर गम्भीरता से सलाह दी

“दुसेरी अपने साथ लेते जाना ।”

मैं उठकर बाहर चला गया । बाका सब हनी रोकन की अमकन चेष्टा कर रहे थे । तहखाने का कमरा सामान से खचाखच भरा हुआ था । चाय के समावार के करीब मेज के सामने हमारे मालिक के अलावा दो और मजदूर दोनोव और कुवशीनोव बैठे थे । मैं दरवाजे में आकर रुक गया । मेरे मालिक ने बड़ी ही नम आवाज में जिसमें कुछ दुःख-वना निहित थी, हुक्म दिया

‘अच्छा प्रोफेसर बडबडिए ! अब जरा मेहरवानी करके मूय और तारो का किस्सा सुना दीजिए कि ये सब कहा से और कैसे आय ?’

उसका चेहरा तमतमाया हुआ था । फुल्ली आब निकुडी हुई थी और मँजरी में एक नटखट चमक थी । दो और मुस्काने हुए रहते थे—एक सुख अगारे जैसा खरखरी वालों के चौखटे में नै नायता हुआ और दूसरा मटियाला फफूद खाया हुआ-सा नकशा । समावार धीर-धीरे सनसना रहा था । और ये अद्भुत लगने वाले निर भाप के छत्ता में छिपे जा रहे थे । दीवार के सहारे लग हुए पल्लों पर बँठी हुई मानकिय सफेद चिमगादड मालम होती थी । मसले हुए मोने के कपडों में नै उन के बाजू निकले हुए थे । निचना हाठ लटका हुआ था और वह नून-नून कर मरीजों की तरह खास रही थी । कोने में पवित्र मूर्ति के पान रखे हुए दिए की मद लौ भडक रही थी । मानो सदी के नारे जप रही हो । खिडकियों के दरम्यान दीवार पर एक तस्वीर लटका रही थी जिनमें एक स्त्री कमर तक नग्न अपनी गोद में एक बिल्ली लिये बैठी थी । जो बदन उसी तरह उल्लेखनीय रूप से मोटी थी । कमरे में बौड्का अचार और भुनी हुई मछली की मिली-जुली गंध घटी हुई थी । राहगीरों का टा

परछाईया खिडकी मे से यो दिखाई देती जैसे कोई बडा-

कुछ काट रहा हो ।

मे आगे बडा और मेरा आका मेज पर से दस्ती काटा उठाकर उडा हो गया । आर उनको मेज के किनारे पर प्रजाते हुए मुझमे

कहा
नही तुम वही पड रहे । पहले हमे कहानी सुनाओ और फिर
म तुम्हारी आजमान कल्गा ।'
मेन सोचा कि प्राद म मे भी उमही सातिर कल्गा और यह निश्चय
मेने वाचनीत न कर दी ।

और मेरे मालिक ने अपने मुँह की चोच बनाकर आहिस्ता-आहिस्ता सीटी बजानी शुरू कर दी थी और उसकी मंजरी आख मेरे चेहरे पर तेजी के साथ दौड़ रही थी और एक अद्भुत ढंग से मेरा परीक्षण कर रही थी। मैंने दोनोव को भराई हुई थकावट भरी आवाज में कहते सुना

‘कमवस्त बडा ही वातूनी है।’

और कुवशीनोव ने झुँझलाकर कहा

‘मुझसे पूछो तो यह शस्त्र है बडा चालाक।’

लेकिन इसके बावजूद मैं बिल्कुल भी नहीं घबराया। मैं उनको अपनी बातें सुनने पर मजबूर करना चाहता था। और ऐसा मालूम होता था कि मेरी बातचीत का जादू उन पर चटता जा रहा था।

अचानक मेरे मालिक ने मूर्ति की नाई बैठे-बैठे आहिस्ता ने अननासिक आवाज में कहा

“अच्छा, बस काफी हैं वडवडिए। बहुत-बहुत नुक्रिया। यडा मजा आया। तुमने तमाम सितारो को अपनी-अपनी जगह जमा दिया है। अब जाओ और जाकर मेरे नन्हें-मुन्ने सुजरो को खाना चिनाओ।’

अब जब मैं वह जमाना याद करता हूँ तो बडा जानन्द जाता हूँ। लेकिन उस समय मजे का तो खैर सवाल ही क्या उल्टा इतना-तुन्ना आय कि अब याद भी नहीं आता मैंने अपने आपसे सँभाला बजार।

इतना याद है कि जब मैं बेतहाशा भागता हुआ भटियारवाँ में आया तो शानुनोव और आतेम ने मुझे सभाला सहारा इनर दाना में ले गये और पानी का एक ग्लास पिता कर मेरे हाँस न हवान में किये। यास्का झुनझुने न बडे विश्वास से कहा

‘क्यो मैं न कहता था ? हाय, तुमने मेरी बात न मानी न।’

और बजारे ने गुराते, वडवडाते हुए मेरी पीठ पपपपप।

मैं भला क्या करूँगा ? मेरा इतने क्या बस चले उद उद कर भूत सवार होता है तो वह किसी की नहीं सुन्ना चाह पाउ पदरी

की परछाइयाँ खिडकी में से यों दिखाई देती जैसे कोई बड़ी-बड़ी कंचियों से कुछ काट रहा हो ।

मैं आगे बढ़ा और मेरा आका मेज पर से दम्नी काटा उठाकर खड़ा हो गया । और उमको मेज के किनारे पर बजाने हुए मुझमें कहा

“नहीं, तुम वहीं खड़े रहो । पहले हमें कहानी सुनाओ और फिर मैं तुम्हारी आवभगत करूँगा ।”

मैंने सोचा कि बाद में मैं भी उसकी खातिर करूँगा और यह निश्चय करके मैंने वातचीत शुरू कर दी ।

पृथ्वी पर जो जीवन था उसमें कोई आनन्द नहीं था, सुख नहीं था और यही कारण था कि मुझे आकाश उतना प्यारा लगता था । अक्सर गर्मियों के महीने में रात के समय मैं खेतों में निकल जाता । बरती पर चित लेट कर आनन्द की ओर दृष्टि तो मुझे ऐसा मानस होता कि हर एक सितारा अपनी सुनहरी किरणों में मेरे पास बैठा हुआ है, मेरे दिल में उतार रहा है । करोड़ों की नख्या में वे एक ही व्यवस्था में लगे हुए थे । और मैं भी जमीन के साथ उनके दरम्यान शून्य में तैर रहा था जैसे किसी बहुत बड़ी वीणा के तारों में रात के समय जमीन की जिन्दगी का खामोश राग मुझे जीवन के अनन्त सुख का गीत सुनाने लगता । ब्रह्मांड से जाव्यात्मिक मित्रों की ये भरपूर साभते दिन भर के चिन्ताजनक प्रभावों की कटुता हृदय पर से इस प्रकार साफ कर देती जैसे किसी न जादू कर दिया हो ।

और यहाँ इस गन्दे छोटे से कमरे में तीन आकाशों और एक शराबी बुढ़िया खूँसट के सामने जो मुझे मदहोश, बेरग निगाहों से घूर रही थी, मैंने अपने आस-पास की हर घृणा करने वाली चीज की उपस्थिति भुत्ता कर अपने विचारों की राँ में बहना शुरू कर दिया । मैंने देखा कि दो कुत्ते चेहरे अपमानजनक अन्दाज में दात निकाल रहे थे

और मेरे मालिक ने अपने मुँह की चोच बनाकर आहिस्ता-आहिस्ता सीटी बजानी शुरू कर दी थी और उसकी मँजरी आँख मेरे चेहरे पर तेजी के साथ दीड रही थी और एक अद्भुत ढग से मेरा परीक्षण कर रही थी। मैंने दोनोव को भराई हुई थकावट भरी आवाज में कहते सुना

‘कमबर्त बडा ही वात्नी है।’

और कुवशीनोव ने झुँझलाकर कहा

‘मुझे पछो तो यह शस्त्र है बडा चालाक।’

लेकिन इनके वावजूद मैं विल्कुल भी नहीं घबराया। मैं उनको अपनी बातें सुनने पर मजबूर करना चाहता था। और ऐसा मालूम होता था कि मेरी बातचीत का जादू उन पर चढता जा रहा था।

अचानक मेरे मालिक ने मूर्ति की नाई बैठे-बैठे आहिस्ता से अनुनासिक आवाज में कहा

‘अच्छा, बस काफी है बडबडिए ! बहुत-बहुत शुक्रिया। बडा मजा आया ! तुमने तमाम सितारो को अपनी-अपनी जगह जमा दिया है। अब जाओ और जाकर मेरे नन्हे-मुन्ने सुअरो को खाना खिलाओ।’

जब जब मैं वह जमाना याद करता हूँ तो बडा आनन्द आता है। लेकिन उस समय मजे का तो खैर सवाल ही क्या उल्टा इतना-गुस्सा आय कि अब याद भी नहीं आता मैंने अपने आपको सँभाला क्योंकर !

इतना याद है कि जब मैं बेतहाशा भागता हुआ भटियारखाने में आया तो शातुनोव और आर्तेम ने मुझे सँभाला, सहारा देकर दालान में ले गये और पानी का एक ग्लास पिता कर मेरे होश व हवास ठीक किये। याशका ‘भुनभुने’ ने बडे विश्वास से कहा

‘क्यो मैं न कहता था ? हाय, तुमने मेरी बात न मानी ना।’

और वजारे ने गुराते, बडबडाते हुए मेरी पीठ थपथपाई।

‘मैं भला क्या करूँगा ? मेरा इसमें क्या बस चले जब उस पर भूत सवार होता है तो वह किसी की नहीं सुनता चाहे लाट पादरी ही

क्यो न आजाय ।”

सुअरा को खिलाना बडा ही नीच काम और अत्यन्त कठोर दण्ड समझा जाता था । और जत्र ब्राह्मिणों भर के उनका खाना आता तो वे लाने वाले पर इस बुरी तरह झपटने कि उमका सभलना मुश्किल हो जाता, अपनी मोटी-मोटी थूथनियाँ उसकी टाँगो में देदेते और अगर कोई फिसलकर कीचड में लयपथ न हो जाता तो वह बडा ही भाग्य-शाली होता था ।

सुअरो के अहाते में दाखिल होते ही फौरन दीवार का महारा बूढना पडता था । सुअरो को लार्त मार-मार के भगा कर बतन में उनका खाना उलट कर फौरन ही वहाँ से भाग आना पडता था क्योकि जब उन सुअरो को लार्त पडती तो गुस्मे में जाकर वे काटने दीडत थे । उम समय और भी बुरा मालूम हुआ जब येगार ने भटियारखाने का दरवाजा खोलकर भयानक आवाज में एलान किया

“ऐ ओ कात्सापी* । चल सुअरो को जन्दर ला ।”

इसका अर्थ यह था कि बेकाबू जानवर आंगन में छुपे हुए थ और डरवे में जाना नहीं चाहते थे । ऐसी मूरत में पाच-ठ आदमी जागन में दीड जाते । इस तरह छीन-छान, गाली गलीच और भाग-दीड शुरू हो जाती । और मालिक इस तूफानबदतमीजी से बडा आनन्द लेता । पहले-पहल तो ये लोग इस दीवानेपन में खुद भी मजा लेते क्योकि इस तरह किसी हद तक उनकी काम की समानता का जादू टूटता था । लेकिन जल्द ही वे थक कर चूर हो जाते । और उनका दम फूल जाता । जिद्दी सुअर आंगन में इधर-उधर लुठकते-फिरते और पीछा करने वाले आदमियो को थके देकर गिरा देते और मालिक खडा तमाशा देखता रहता । इस भागम-दीड का नशा उस पर भी छा जाता और वह अपनी जगह ही खडे-खडे उछलता, कूदता, सीटियाँ बजाता और नारे बुलन्द करता ।

ॐ प्राचीन काल में रूसियों के उपहास के लिए यूक्रेनी उन्हें इसी अपमानजनक विशेषण से पुकारते थे—अनु०

“शाबाश छोडना नही ! खाल खेच लेना इनकी ।”

जब कोई आदमी उलझ कर जमीन पर गिर पडता तो मालिक बडा ही खुश होता और फिर जोर-जोर से चीख कर अपनी मोटी-मोटी औरतो जैसी जांघो को पीटता और मारे हसी के लोट-पोट हो जाता ।

गुलाबी-गुनाबी धनियाँ पूरे आगन को चीरती हुई फिर रही होती और उनके पीछे दौडते-दहाडते हुए चद मरियल सूखे इन्सान जिनके जिस्म आटे मे लिथडे हुए होते, बदन पर गदे चिथडे और नगे पैरो मे फटे जूते—ये लोग दौडते और गिरते और सुअर की पिछली दोनो टांगे पकडे पूरे आगन में घसिटते फिरते । यह दृश्य भी वास्तव में बडा ही विलक्षण और हास्यास्पद होता था ।

एक दिन एक सुअर सहन में से भाग कर सडक पर जा निकला और हम छ लडके दो घण्टे तक उसका पीछा करते बाजारो मे दौडते फिरे यहाँ तक कि एक राह पर तातारी ने सुअर की अगली दोनो टांगें डण्डा मार कर जहमी कर दी और उसके बाद हम सुअर को चटाई पर रख कर घर वापस ले आये । और हमारे पडोसियो को यह तमाशा देख कर बडा मजा आया । तातारी देख कर अपने सर हिलाते और घृणा से थूकते लेकिन रूसियो ने एक छोटा-सा जुल्स बना लिया और हमारे साथ-साथ चलने लगे । एक संबलाए हुए तेज तर्रार विद्यार्थी ने अपनी टोपी उतार कर मचलते हुए जानवर की तरफ इशारा किया और सहा-नुभूति भरे स्वर में आर्तेंमे से पूछा

‘ कौन ह, मा या बहन ? ’

“मालिक !” वके-मादे और झुझलाए हुए आर्तेंमे ने झिडक कर उत्तर दिया ।

हमें सुअरा से नफरत थी । ये हमसे अच्छी तरह रहते थे और सिवाय मालिक के सबके लिए कष्टकर और अपमानजनक थे । फिर हमें उनकी सेहत ओर तन्दुस्ती की खबरगीरी करनी पडती थी ना

वडी ही कण्टकर थी ।

जब भटियारखानेवालो को मानूम हुआ कि मुझे एक हफ्ते तक सुअरो की देखभाल करनी होगी तो कुछ लोगो ने मझमे इस त्वास रूसी उत्साह से सहानुभति प्रकट की जो वैसे बहुत अमत्य होला है और दिल पर गोद की तरह चिपकता है । और उसकी मारी गतिन ठीन लेता है । अक्सर लोगो ने उदामीनतापूर्ण चप माध ली लेकिन कुजिन ने उपदेश देते हुए भुनभुनाते हुए कहा

“कोई परवाह नही ! मालिक हुकम देता है अब वह हुकम बजा लेना तुम्हारा काम है ! आखिर हम किमकी रोटी खाते है ?”

आर्तेम चीख कर बोला

“ओ बुद्धे खूसट ! काणे चुगलखोर !”

“अच्छा, और नही तो क्या ?” बूडे ने कहा ।

‘आज, आज भी जाकर कह दे । कह देना जाकर मालिक से ।”

कुजिन ने बात काटते हुए बडे सन्तोप मे उत्तर दिया

“सो तो कहूंगा ही ! मेरे यार मे तो सब कुछ ही कह दगा । मे तो जीता ही सच बोल कर हूँ ।”

वजारे ने एक मोटी-सी गाली दी और फिर हमेशा के विपरीत मुँह फुलाकर खामोश बैठ गया ।

रात के इस सवेदनाशील क्षण मे जबकि मैं अपने कोने मे लेटा भय व आतक के कारण पत्थर बना थके-हारे आदमियो के जोर-जोर के खरटे सुन रहा था और पडे-पडे अपने दिमाग मे जिन्दगी, इन्सान, सच्चाई और आत्मा जैसे गूगे और समझ मे न आने वाले शब्द बार-बार व्यवस्थित ढग मे जमा रहा था तो नानवाई चुपके-चुपके रेगता हुआ मेरे पास आया और करीब ही लेट गया ।

“मो तो नही रहे ?”

“नही !”

“बड़ी मुग़ीबते जा रही है भाई ?”

उमने अपने लिए एक निगरेट बनाया और सुलगाया। छोटी-सी सुन ना मे उसकी दाी के रेगमी तार और उसकी नाक की चोच रोगनी के हाँगे मे आ गई। जनी हुई राख फूक मार कर उडाते हुए प्रजा ने भेरे कान मे रहा

‘देखो, मुजरा को जहर देदो। बड़ी आत्मान बात ह। बस यह करना कि गम पानी मे जोटा-सा नमक मिलाकर उन्हे दे देना। जान-वरो के हाक मे सृजन आजाएगी जीर दम घट कर मर जायेगे।’

‘लेकिन इनसे फायदा क्या ?’

पहले तो यह कि हम सबकी मुश्किले आसान हो जायेगी और मालिक को एक नुनान पहुच जायेगा। मै तुम को सलाह दूंगा कि तुम यहा से चले जाओ। मै साशका से कहकर तुम्हारा पहिचानपत्रक आका के पास से चोरी करा ल्गा—भगवान ने चाहा तो जरूर। क्यों क्या कहते हो ?”

“नही मै नही जाऊँगा।”

‘तुम्हारी मर्जी। बहरहाल तुम यहाँ ज्यादा टिक नही सकते। तुम्हारी कमर वह जल्दी ही तोड देगा।’ अपने दोनो घटने सिकोड कर सीने से लगा कर और नीद की सी हालत में भ्रमते हुए उसने बहुत धीरे से कहा

‘मै तो तुम्हारी भलाई चाहता हूँ, भगवान की कसम दिल से चाहता हूँ। सचमुच तुम चले जाओ। जब से तुम यहा आये हो हमारी हानत बढतर हो गई ह। मालूम होता है तुम उसे छेडते हो और वह बरसता ह हम सब पर। समझ लो सब लोग तुमसे आजिज आ गये है। बहुत मुमकिन है कि वे तुम्हारे साध धुरी तरह पश आयें।’

“और तुम ?”

“में ?”

“क्या तुम भी आजिज़ आ गये हो मुझसे ?”

जवाब देने में पहले वह अपनी मिगरेट की पीली चमक को तामोशी के साथ घूरता रहा। फिर ब्रेदिली से बोला—

“मुझसे अगर पूछते हो तो सुनो—मटर के पीधे दलदल में नहीं लगाये जाते।”

“लेकिन जो कुछ मैं कहता हूँ क्या वह सच नहीं ?”

“सच तो है, ठीक है लेकिन इससे फायदा क्या ? एक चना तो भाड़ नहीं फोड़ सकता। तुम कहो या न कहो इसमें फर्क ही क्या पड़ता है ? तुम दूसरो पर हद में ज्यादा एतवार कर लेते हो। भैया ! खबरदार ! लोगो पर एतवार करना खतरनाक होता है।”

“तुम पर भी ?”

‘हाँ हाँ मुझ पर भी ! मैं कौन हूँ ? क्या मुझ पर भरोसा किया जा सकता है ? आज मैं कुछ हूँ, कल कुछ और । और बाकी सब भी ।’

मौसम सद था और खमीरी आटे की तेज बू नथुनों को चीरती हुई घुस रही थी। चारों तरफ लोग मिट्टी के ढेर की तरह पड़े जोर-जोर से साँस ले रहे थे। एक आदमी सोते-सोते बडबडा रहा था

“नताशा नता हा ।”

कोई कराह रहा था और बुरी तरह सिसकिया भर रहा था। शायद वह स्वाब देख रहा होगा कि कोई उसे मार रहा है। तीन अंधियारी खिडकियाँ गदी दीवार में से रात को घूर रही थी—गहरी सुरगो के मोखो की तरह। खिडकियों के छज्जो से पानी की बूंदें टपक रही थी। बेंकरी से तमाचे मारने और थपथप की घीमी आवाज आ रही थी। नानवाई का महायक गगा और बहरा निकादर आटा गूँध रहा था।

नजर ने मोच-विचार करते हुए बहुत नमी और आहिस्तगी से कहा।

‘तुम्हें चाहिये की देहात में चले जाओ और स्कूल मास्टर बन जाओ। तुम्हारे लिए सबसे ज्यादा मनासिब काम यही है। विश्वास करो बड़ी मजेदार जिन्दगी होती है। और बिल्कुल सीधी-सादी। निश्चित और आत्मा को मुसी रखने वाली। यदि मैं शिक्षित होता तो शरू ही से स्कूल मास्टर बन जाता। मुझे छोट-छोटे बच्चों पर बड़ा ही प्यार आता है और औरतों पर भी। ये औरतें तो मेरे दुर्भाग्य का कारण हैं। ज्योही कोई मामली-सी लडकी मेरी नजर पडी और बस मैं गया काम से। मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे कि वह मुझे घसीटे लिए जा रही हो। अगर मेरी खसलत ऐसी न होती और अगर मुझे खेती पसन्द आ जाती तो शायद मैंने किसी अच्छी औरत से शादी करने का फैसला कर लिया होता हम मैं और वह मिलकर बच्चों का लालन-पालन करते—कम से कम एक दर्जन तो होते साले। और यहाँ—एक अच्छी सूरत वाली औरत है और दूसरी भी इतनी ही हसीन और सब-की-सब सहज ही प्राप्य है और इसी तरह लश्टम-पश्टम गुजर होती रहती है। भगवान जाने क्यों? बिल्कुल ऐसी बात हुई जैसे कोई जगली बेर तोड़ कर इकठ्ठे किये जाता हो। लालच इतना हो जाता है कि हालाकि देख रहे हैं कि टोकरी भर चुकी है लेकिन नहीं जी यही चाहता है कि अभी दो चार और तोड़ लो।’

उसने अँगड़ाई लेते हुए दोनों हाथ उसी तरह फैला दिये जैसे किसी से बगलगीर होने वाला हो। लेकिन फिर अचानक गभीर और दो टूक फैसला करने के स्वर में बोला-

“अच्छा तो फिर सुअरो के बारे में क्या त्याग है?”

“नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा।”

“बड़े अफसोस की बात है। तुम्हारा क्या जाता है?”

याश्का की तो समझो गदन मोड़ कर रख देगा ।

“याश्का से डमका क्या सम्बन्ध ?”

“लेकिन हुआ तो यही है ।” वजारे ने जान्न मारते हुए कहा ।
‘हमारे यहाँ हमेशा यही होता है कि करे बड और भुगते छोटे ।’

यह कहकर उमने फौरन ही मुझे घूरा । आँर चुभती हुई निगाहों से देखता हुआ और यह बडबडाता हुआ वह दानान में चला गया

“जाओ, शिकायत कर दो ।”

मैं आका के पाम गया । वह अभी अभी माकर उठा था । उमका चेहरा मुर्झाया हुआ और मटियाला-सा था । उसके स्याह वान असमतन खोपडी के गूमडों पर चिपके हुए थे । टांगे चीरे वह मेज के सामने बैठा था । उसकी लम्बी गुलाबी कमीम घुटनों तक खिंची हुई थी और कमीम के दामन में लिपटी-लिपटाई एक भूरी विल्ली बैठी थी ।

मालकिन चाय के लिए मेज सजा रही थी और जब वह कमरे में इधर से उधर जाती तो ऐसा मालम होता था कि जैसे कोई छिपे हुए हाथ चिथडों की किसी पोटली को घसीट रहे हो ।

“क्या बात है ?” उसने कुछ मुस्कराने हुए पूछा ।

“सुअर बीमार हो गये हैं ।”

उसने विल्ली को उठाकर मेरे कदमों में फेंक दिया और मुट्ठियाँ भीच कर बँल की तरह मुझ पर झपटा । उसकी दाहिनी आँख से शोले से निकल रहे थे और बायीं आँख सुखं होती जा रही थी, उमने आसू डवडवा आये थे ।

“क्या,क्या ?” उसने हाँपते हुए कहा ।

“जरा जल्दी से डाक्टर को बुला लाओ ।”

मेरे करीब आते हुए उसने मसखरेपन से अपने कानों पर हाथ फेरे जो यकायक सूजे हुए मालूम हो रहे थे और नीले पड गये थे । उसने दुख भरे स्वर में कुछ अजीब ढंग से गुराते हुए कहा

“वदमाश कही के । मुझे मालूम है क्या मामला है ?”

मालकिन भी सरकती हुई करीब आ गई और मैंने उसकी कपकंपाती हुई भर्राई हुई आवाज पहली बार सुनी ।

“पुगिस नो बुलाओ । वासिया, जल्दी पुलिस को बुलाओ ।”

उसके मुर्झाए हुए चीथड़ो जैसे गाल लरज रहे थे । मारे डर के उनका बडा-सा मुंह खुला-का-खुला रह गया था और असमान स्याह दांत दिखाई देने लगे थे । आका ने उसे बड़ी वेददीं से एक तरफ ढकेल दिया । दीवार पर लटके हुए कुछ कपड़े घसीटे और उनकी पोटली वगत में दवाकर दरवाजे की तरफ लपका ।

लेकिन बाहर आंगन में पहुँचकर सुअरो के डरबे में झाँक कर और जानवरो की उखड़ी-उखड़ी साँसें सुन कर उसने सतोष के साथ कहा

“तीन आदमियो को बाहर बुला लाओ ।”

और जब शातुनोव, आर्तेम और भूतपूर्व सैनिक भटियारखाने से बाहर आ गये तो उसने हमारी तरफ देखे बगैर ही तडखकर कहा

बाहर निकाल लाओ इन्हे ।”

हम चार गदी लाशो को उठा कर लाये और उन्हें आंगन में डाल दिया । आस्मान पर हल्की-सी रोशनी फैल गई थी । जमीन पर रखी हुई लालटेन आहिस्ता-आहिस्ता गिरते हुए वफ के गालो पर और सुअरो के भारी सिरो पर किरणे डाल रही थी । सुअरो में से एक का दीदा जाख में से निकल पडा था जैसे कि कांटे में फसी हुई मछली का दीदा ।

अपने कन्धो पर लोमडी के सम्र का कोट डाले और आखिरी साँसें लेते हुए जानवरो पर सिर भुकाए आका खामोश और अचल खडा था ।

‘जाओ, अपना काम करो ! येगोर को यहाँ भेज दो !’ उसने खोखली आवाज में कहा ।

“बड़ा सदमा हुआ है उसे ।” जत्र हम वरामदे म पडे हुए वोरों के पास पहुँचे तो आर्तम ने मरगोशी में कहा, “ऐसा वक्का पहुँचा ह उसे कि नाराज होना भी भूल गया ।”

दालान में मैं सत्रसे पीछे रह गया । और दरारों में मैं भाँक कर सहन में देखा लालटैन की रोशनी सुत्रह के अँधेरे से जूझ रही थी । उमकी रोशनी में चार सफेद वारे मुश्किल से दिखाई दे रहे थे जो सीटी की-सी आवाज और एक किम्म की घडवडाहट के नाय कभी फूल जात और फिर पिचक जाते थे । मानिक नगे मिर उन पर झुका हुआ था । उसके वाली की लटें चेहरे पर विखरी हुई थी । इसी हालत में वह बहुत देर तक चुपचाप खड़ा रहा । समूर के कोट से ढँका हुआ उमका शरीर घण्टी की भाँति दिखाई देरहा था । . . फिर मैंने मूं-मूं की आवाज और इन्सानी खुसर-पुमर की आवाज सुनी ।

“क्या हुआ मेरे प्यारों । दुख होता है ? बेचारे . त्व-त्त्व. ।”

ऐसा मालूम हुआ जैसे जानवर और ज्यादा जोर से साँस लेने लगे हो ।

“ उसने अपना सर उठाया, चारों तरफ देखा और मुझे ऐसा दिखाई दिया कि उसके गाल आसुओं से तर थे । अब उसने अपने दोनों हाथों से अँसू पोछ डाले थे और एक रँजीदा वच्चे की तरह वहाँ में परे हट गया, खाली पीपे में से मुट्ठी भर घास निकाली, वापस गया और जमीन पर बैठ कर सुअर की गद्दी बूयनी पोछने लगा । फिर जैसे चौक कर घास फेंक दी, उठ खड़ा हुआ और आहिस्ता-आहिस्ता सुअरों के गिर्द घूमने लगा ।

‘ एक चक्कर लगाया, फिर दूसरा जरा तेज कदमों से, फिर तो एक दम उसने दौड़ लगाना शुरू कर दी । उछलता-कूदता, धूसे तान कर और बेतहाशा तेज दौड़ कर चक्कर लगाने लगा । उसके कोट के दामन टाँगों में फरफरा रहे थे वह उनमें उलझ गया और गिरते-गिरते बचा ।

और फिर मुंडिया हिलाता, मुंह विसूरता रुक गया । आखिरकार— यह भी अचानक हुआ जैसे कि उसकी टाँगों में दम न रहा हो । कूल्हे टिका कर वह जमीन पर बैठ गया और जैसे तातारी लोग प्रार्थना के बाद करते हैं उसने हथेलियों से अपना चेहरा मलना शुरू कर दिया ।

“पुच-पुच मेरे नन्हे-मुन्ने जानवरो । पुच-पुच ।”

येगोर भूमता-भ्रामता, मुँह में पाइप दबाए एक कोने के पीछे से प्रकट हुआ । पाइप की चिगारी कभी-कभी उसके अंधेरे में छिपे हुए चेहरे को रोशन कर देती थी । जो ऐसा मालूम होता था जैसे किसी ने एक गठीले तलने को जल्दी-जल्दी तराश कर इन्सानी चेहरे की शकल दे दी हो । उसके सुर्ज कान की मोटी-सी लौ में बाली भी चमक उठती थी ।

“येगोरी !” मालिक ने आहिस्ता से आवाज दी ।

“हाँ ।”

“जानवरो को उन्होंने जहर दे दिया है । ”

“उसने ?”

“नहीं ।”

“तो फिर किसने ?”

“याइका और आत्युं खोव ने । कुजिन ने मुझे बताया है । ”

“तो क्या ठोकें उनको ?”

उठ कर खड़े होते हुए आका ने थकी हुई आवाज में कहा

“नहीं, अभी ठहरो ।”

“कितने नीच है ये सब ।” येगोर गुराया ।

हाँ S S, नहीं । लेकिन मैं पूछता हूँ जानवरो का क्या कसूर था, क्या ?”

येगोर ने जमीन पर धूका लेकिन थूक इत्तेफाक से उसके जूते पर जा गिरा । फिर उसने अपना पैर उठाया और अपने कोट के दामन में जूता पोछ डाला ।

सफेद, ठण्डा आस्मान छोटे-से आंगन पर शामियाने की तरह झुका हुआ था । जाड़ो का उजाड़-उजाड़ दिन बड़ी अनिच्छा से निकल रहा था ।

येगोर दम तोड़ते हुए जानवरों के पास गया ।

“इन्हे मार डालना चाहिए ।”

“किसलिए ?” मालिक ने मिर को झटका देकर पूछा । “जी लेने दो जब तक जीते हैं ।”

“मैं तो इन्हे मारकर रहूँगा और फिर हम इन्हे भटियारे के हाथ बेच देगे । इनका गोश्त तो नहीं बेचा जा सकता ।”

“भटियारा इन्हे नहीं लेगा ।” सेम्योनोव ने जमीन पर बैठ और एक सुअर की सूजी हुई गर्दन टटोलते हुए कहा ।

“क्या बातें करते हो, लेगा क्यों नहीं ? मैं कहूँगा कि तुम इनसे उक्ता गए थे इसलिए इन्हे जिवह करा दिया । मैं कहूँगा कि ये बिल्कुल तन्दुरुस्त थे ।”

मालिक खामोश हो गया ।

“अच्छा बोलो तो अब इनका क्या जाय ?” येगोर ने जोर दिया ।

“क्या ?”

आका उठ खड़ा हुआ और एक बार फिर सुअरों के चारों तरफ आहिस्ता-आहिस्ता टहलने लगा और दबी आवाज में गुनगुनाने लगा

“नन्हे-मुन्ने, मेरे प्यारे प्यार. ।”

वह रुक गया, चारों तरफ देखा और अनायास बोल पड़ा

“कर दो जिवह !”

हम जवरदस्त तूफान बरपा होने, नौकरियों से बरखास्त होने की आशा कर रहे थे । हमारा विचार था कि मालिक सजा के तौर पर एक और बोरा जानखताइयाँ बनवाने के लिए डलवा देगा । बजारा बहुत दुखी नजर आ रहा था लेकिन वह बनने की कोशिश कर रहा

था और कृत्रिम लापरवाही से जोर-जोर से कह रहा था—

“सैको और जोश दो ।”

कारखाने में घुटी-घुटी खामोशी छाई हुई थी । सब मजदूर मूके प्रकोपपूर्ण दृष्टि से देख रहे थे और कुजिन वडवडा रहा था

“सजा सब ही को मिलेगी—कसूरवार को भी और बेकसूर को भी ।”

वातावरण और भी दूषित हो गया । वातो-वातो में भगडे होने लगे । और जब हम खाना खाने बैठे तो सिपाही मिलोव जबडे चीर कर मुस्कराने लगा और फिर मूखतापूर्ण ठहाका उसने लगाया और कुजिन की पेशानी पर अपने चमचे से ठोंग मार दी ।

बूढे ने कराहते हुए अपना सिर हाथों में दबा लिया । अपनी इक-लौती आंख से आश्चर्यचकित होकर चारों तरफ देखने लगा और विसृ-रते हुए बोला

“भाइयो ! यह क्यों ?”

एक आम शार व गुल बुलद हो गया । बीच-बीच में गालियाँ सुनाई देती थी और तीन आदमी मुक्का ताने सिपाही पर बरस पडने को पर तोलने लगे । और वह दीवार से टेक लगाये हँसी के साथ फुदकने लगा और बोला

“यह मक्कारी की सजा है । येगोर ने मूके सब बतला दिया है । आका जानता है कि सुअरो को जहर किसने दिया है ।”

पीला चेहरा और कुछ अजीब तनी हुई-सी हालत में वजारातेंद्र के पास बैठा-बैठा एकदम कुजिन पर झपटा और उसकी गुद्दी दबोच ली ।

“फिर ? अबे इस तेरी जवान ने जो तेरी मरम्मत कराई है उससे पेट नहीं भरा क्या ! नीच, बदमाश कहीं के ?”

“तुम कहोगे कि शायद सच नहीं है यह !” कुजिन ने अपने मुँहिए हुए छोटे-से चेहरे को छिपाते हुए थरथराती हुई बूडी आवाज में कहा,

“क्या तुमने शुरू नहीं किया था यह मव कुछ ? क्या मैं सुन नहीं रहा था कि तुमने वडवडिये से यह काम कराने की कोशिश की थी ?”

वन्जारे ने गुराँते हुए अपना मुक्का ताना । लेकिन आर्तेम उसके कंधे पर लटक गया ।

“मारो नहीं याश्का ! छोडो, जाने भी दो ।”

अब खीचा-तानी शुरू हो गई । याश्का, शातुनोव और आर्तेम की पकड से निकलने के लिए लातें चला रहा था, भन्ना रहा था । और

“आओ एक-एक कर के लड लो ! आओ हिम्मत हो तो !”

विकृत और जमा हुआ खून खराब खाने और दूषित वायु के कारण विषाक्त, सतोप तथा दैन्य से सहे हुए अत्याचार के विष में वक्का हुआ रक्त आज इन लोगो के सिर पर चढ आया था, चेहरे सुर्ख हो गये थे, कानो मे से ज्वालाएँ निकल रही थी, लाल-लाल आँखें अन्धे गुस्से में चमक रही थी और कटकटाते हुए दाँतो ने तमाम चेहरो को हवन्नक और विकृत कर दिया था ।

आर्तेम दौडता हुआ आया और लेस्चोव के जगलियो जैसे मुँह के सामने आकर चीखा

“मालिक आ गया ।”

हुल्लडवाजी इस प्रकार समाप्त हो गई जिस प्रकार आँधी के सामने कूडा-करकट गायब हो जाता है । हर व्यक्ति अपनी जगह पर वापस आ गया । पलक झपकाते ही निस्तब्धता छा गई । केवल थकावट और क्रोध के कारण फूली हुई साँस की धौंकनियाँ-सी चलती सुनाई दे रही थी । और चमचे दबोचे हुए हाथ कँपकँपा रहे थे ।

दो नानवाई वेकरी के दरवाजे की मेहराब के अंदर खडे थे । एक तो था चुस्त व चालाक याकोव विश्नेवस्की और हूष्ट-पुष्ट, दमे का रोगी वाशिकन जिसका चेहरा ई ट जैसा लाल था और आँखें उल्लू जैसी गोल ।

उत्तकी कुपित आँखे बड़ी भयकर मालूम हो रही थी ।

“छोड़ दो मुझे ! आज मैं इसे जान से मार कर ही दम लूंगा ।”

सत्यवादी, नाटकद के बूढ़े की मैली कमीस का गरेवान बन्जारे की मुठ्ठी में था । उत्तके मुँह से भाग निकल रहे थे और वह हकला-हकला कर कहे जा रहा था

“अगर कोई बात न होगी तो मैं कुछ भी नहीं कहूँगा । लेकिन अगर बदमाशियाँ होती रही तो मैं कहूँगा और जरूर बहूँगा । हाँ कहूँगा चाहे तुम मेरी तिकका-बोटी ही क्यों न कर डालो बदमाशो !”

यह कह कर वह अचानक याशका पर घडाम से गिर पड़ा । उसके सर पर जोर का दुहत्तर मारकर उसे जमीन पर दे पटका । दो-तीन लातें रसीद की और युवको की-सी आश्चर्यजनक फुर्ती से उसका बदन रोदना शुरू कर दिया ।

“तूने, तूने ! हरामी पिल्ले तूने डाला था नमक तूने ।”

आर्तेम ने एक छलाँग लगाई और बूढ़े के सीने पर अपना सिर दे मारा । बूढ़ा एक चीख मार कर फर्श पर गिर पड़ा और वहीं पड़े-पड़े कराहता रहा ।

भूलाया हुआ याशका मोटी-मोटी गालियाँ देता हुआ और सिसकियाँ भरता हुआ शेर की तरह उस पर झपटा और झट से उसकी कमीज फाड़ कर उसे बेतहाशा मुक्के मारने शुरू कर दिये । और मैं उसे रोकने की कोशिश करता रहा । हमारे इर्द-गिर्द जन्नाटे के साथ लातें चल रही थी घमा-चौकड़ी हो रही थी और धूल व गद के बादल छा गये थे । जगलियों की नाई दाँत निकाले बन्जारा दीवानो की तरह चीख रहा था । बड़े जोर का मल्ल आरम्भ हो चुका था । खुद मेरे पीछे से मुक्को के घमाको और दातों के कटकटाने की आवाजे आ रही थी । घुँघराले वालो वाला एक भँगा जिसका नाम लेत्चोव था, मेरे कंधे हिलाकर ललकारा

“क्यों, क्या दो-दो हाथ भी नहीं होंगे ?” वास्किन ने निराश व उदास स्वर में कहा। विस्नेवस्की ने अपने छोटे-से हाथ से जिस पर जले हुए के बहुत से निशान थे, अपनी वारीक मूँछों को मरोड़ते हुए वकरी की तरह मिमिया कर कहा

“अवे गॅवारो। आटे के कीड़ो। ”

सभी का भरा हुआ गुस्सा उन पर उतरा। कारखाने के सत्र आदमी उन्हें बुरी तरह गालियाँ देने लगे। उन नानवाइयो से सभी को नफरत थी। उनका काम हमसे आसान था और तनख्वाहें ज्यादा। उन्होंने भी गालियों का जवाब गालियों से दिया। करीब था कि हाथा-पाई शुरू हो जाती कि अचानक रोता-विसूरता हवन्नक याशका मेज़ पर से उठा और डगमगाते हुए कदमों से जाने लगा। और फिर अपना सीना दबोच कर औंधे मुँह फश पर गिर पड़ा।

मैं उसे उठा कर डवलरोटी की वकरी में ले गया जो अपेक्षाकृत अधिक साफ-सुथरी और हवादार थी। वहाँ ले जाकर मैंने उसे आटे के एक पुराने पीपे पर लिटा दिया। उसका चेहरा पीले हाथी दाँत की तरह पीना पड़ गया था। और वह ऐसा निश्चल व निस्पन्द पड़ गया था जैसे मुर्दा। शोर-गुल आहिस्ता-आहिस्ता खत्म हो गया। किसी आने वाली मुसीबत का खतरा मडराता हुआ-मा नजर आ रहा था। हर शरूस सहम गया था और दबी-दबी आवाज में कुज़िन की निंदा कर रहा था

“तेरा ही किया-घरा है यह सब। काणे शैतान।”

“वदमाश जेल की हवा खाने के काविल है।”

बूढ़ा गुस्से में जवाब दे रहा था

“सब बकवास है। इसे तो कोई दौरा-बौरा पड़ गया है।”

आर्नेम और मैं लडके को होश में लाये। उसने अपनी चुस्त,मनो-

हर आँखों की लम्बी-लम्बी पलकें आहिस्ता से उठीं और बेजान आवाज में पूछा

“क्या हम आन पहुँचे ?”

“अब आन कहाँ पहुँचे मरदूद ।” उसके भाई ने चुचित हो कहा । “हर जगह अपनी टांग अडाता फिरता है । मैं भी अब तेरी खूब ही ठुकाई करूँगा । गिर क्यों पडा था वे ?”

“कहाँ पे ?” उसने आश्चर्य से भवे सुकेडते हुए कहा । “मैं क्या गिर पडा था ? भूल गया हूँगा । मैंने एक सपना देखा था । हम एक नाव में थे—तुम और मैं । केकडे पकड रहे थे । हम खाना भी ले गये थे और एक बोतल वोडका की भी ।”

कुछ थकावट महसूस करते हुए उसने अपनी आँखें बन्द कर ली । फिर थोड़ी देर के बाद मुर्झाई हुई आवाज में आहिस्ता-आहिस्ता बड़बड़ाना शुरू कर दिया

अब मुझे याद आया । मेरे दिल में इस जोर का दर्द उठा कि मालूम होता था निकल पड़ेगा । कुजिन ने किया है यह । मुझे उससे नफरत है । मेरी थाय अच्छी तरह नहीं आरही । गधा कही का । मैं जानता हूँ उसे—अपनी पत्नी को मार-पीट कर मार डाला था उसने । अपनी बहू पर भी नियत विगाड बैठा था । हम दोनों एक ही गाँव के हैं इसलिए मुझे सब मालूम है ।”

“अच्छा अब चुप तो रह ।” आर्तम ने डाँट कर कहा । “बस अब सोजा ।”

“हमारे गाँव का नाम योगित्देवेवो था । बातें करने से मेरे दर्द होना है वरना मैं—”

वह ऐसे बोल रहा था जैसे कि अब नींद के गीते में आने ही वाला है और बीच-बीच में अपने सूखे, काल होठों को जीभ से तर करता

जाता था ।

बेकरी में से कोई दौड़ता हुआ ओर मारे खुशी के चीखता हुआ आया ।

“अरे भाइयो ! मोज उड़ाओ ! मालिक अब फिर नशे में धुत्त है ।”

पूरा कारखाना गगनभेदी कहकहो और सीटी की तेज आवाजों से गूँज उठा । हर शस्त्र एक-दूसरे को भलमनसाहत, खुशी और उत्साह भरी दृष्टि से देख रहा था । सुअरों के कारण मालिक के बदले के भय ने आग लगाई हुई थी और अब उसकी मदहोशी के दौरान में कम काम किया जा सकता था ।

वानुक उलानोव जो लडाई-भगडे के मौकों पर धूर्तता से गायब हो जाता था अब एक छलाँग मार कर बीच कारखाने में आ कूदा और उसने नारा लगाया

“आओ गाएँ !”

बजारे ने आँखें बंद करके गला साफ करके वारीक और तेज आवाज में गाना शुरू कर दिया

एक कच्ची दाढी वाला नौजवाँ है आ रहा

वह रगीला जोश-मस्ती में अकड़ता भ्रमता ।

बोस आर्दामयो ने भेज पर ताल दी और गाने में शामिल हो गये ।

दाढी देखो उसकी लहराती हुई

वचारे न अगली पत्ति गाई, पाँव से ताल देता रहा और सबने मिलकर बेंतुकी पंक्ति को इस प्रकार पूरा किया।

साँप की मानिन्द बलखातो हुई

चिकटे हुए फर्श पर कोई नर्म व नाजक आकृति वाला टुमकियाँ और मरोडियाँ देकर केंचुलीदार कीड़े की तरह बल खा रहा था और इस तरह धूल के बादल उड़ने लगे थे ।

शाबास नीजवाना ! उट रहना !' एक जोरदार नारा बुलन्द हुआ और खुशी व शादमानी का यह तूफान अभी हाल के प्रकोप व गुस्से से कुछ कम हैय और दुमद न था ।

रात को भुनभुने की हालत और भी खराब हो गई । बुखार तेज हो गया और सास कुछ उखड़ी उखटी सी नजर आई । हिचकियाँ ले ले कर गदी और बदबूदार हवा सास के साथ उसके फेफड़ों में जाती और सिकुड़े हुए होठों में से फौवारे की तरह निकलती । मानो वह मुँह से सीटी बजाने की कोशिश कर रहा हो । लेकिन पूरी ताकत लगा कर सीटी बजाने का दम उसमें न हो । घड़ी घड़ी वह पानी मांगता लेकिन एक-दो घूट लेकर ही बस कर देता । और अपनी धुँधली आँखों की मधुर मुस्कान के साथ धीरे से कहता

‘ मेरा ही कसूर है ! बस और नहीं पीना चाहता । ’

मने उसके बदन पर बोडका और सिरके की मालिश की और वह थोड़ी ही देर में बेखबर सो गया । उसके चेहरे पर आँटे की गर्द जमी हुई थी और हल्की-सी मुस्कराहट खेलती हुई नजर आ रही थी । उस के घु घरियाले बाल कनपटी पर चिपक गये थे और खूद वह ऐसा मालूम होता था कि पिघल कर पानी-पानी हो गया हो । गदी, फटी-चिथड़ा कमीज आँटे में बुरी तरह लिथड़ी हुई थी । इस कमीज के नीचे उसके सीने में सिर्फ हल्की-सी हरकत का सदेह होता था ।

सब लोग मुझ पर गुर्रिये

‘ अच्छा बस अपनी डाक्टररी रटने दो । इस तरह व्यथ समय गवाना हम को भी आता है । ’

मुझे बड़ा ही दुख हुआ। और इस बात का बड़ी तेजी से मुझे एहसास होने लगा कि मैं उन लोगों में त्रिन बुलाया अजनबी हूँ। सिर्फ आर्तम और यादका ही शायद मेरे भावों को समझते थे। बजारे यादका ने खुशमिजाजी में कहा

“हँसी-खुशी रहो! ओ नन्ही-मुन्नी छोकरी जरा आटा गूध ले। देख तो तेरे प्रेमी कैसे-कैसे उपहार लिये तेरी प्रतीक्षा में खड़े हैं।”

आर्तम भी मेरे साथ छेड़खानी करता रहा। उसने बूड़ी कोशिश की कि वह मुझ से दिलचस्प मजाक करे लेकिन आज वह भी असफल रहा। और आखिरकार ठण्डी साँस लेकर दुखभरी आवाज में उसने मुझसे दोबारा पूछा

“क्यों, क्या तुम्हारा ख्याल है कि यादका को बहुत खतरनाक चोट आई है ?”

शातुनोव ने हमेशा से ज्यादा गला फाड़ कर अपना मनोनीत गीत गाना शुरू किया—

जरा भाँकना तग गलियों के अन्दर
जरा देखना आम रस्तों पे जाकर
कि मेरे गम व ऐश हमराह लेकर
कहाँ खो गया आज मेरा मुक़द्दर

रात को मैं झून्झूने के पास ही फर्श पर सोया। अभी मैं बोरियाँ बिछा ही रहा था कि वह उठ बैठा और चीक कर बोला

“कौन है यह ? क्या तुम हो बडबडिये ?”

उसने उठकर बैठने की कोशिश की, लेकिन बैठ न सका और फिर लेट गया। उसका सिर स्याह चीखड़ों के तकिये पर बेजान होकर गिर पड़ा।

सब सो रहे थे। गहरे माम नेने की सरमराहट हो रही थी और

बलगम की खांसी घुटी हुई बदनदार हवा में थरथराहट पैदा कर रही थी। खिडकी के मँलें और बँधले शीशो में से गहरी नीली रात के तारे सद आसो से घूर रहे थे। तारे इतने छोटे और इतने दूर दिखाई दे रहे थे कि दिन पर उदासी छाई जाती थी। वेकरी के एक कोने में दीवार पर लगी हुई तेल की डिबिया जल रही थी। और उसकी मद्धम रोशनी में ताक में रखे हुए रोटी के साँचें धुंधले-धूधले दिखाई दे रहे थे डबलरोटियो से गजी खोपडियो का शक होता था। आटे के एक बडे तसले पर गूगा निकान्दर सिकुडा-सिकुडाया गेंद बना पडा था और नानवाई की पीली नगी टाग जिस पर कई घाव थे रस मेज के नीचे से झाक रही थी जिस पर डबलरोटियाँ तोली और बण्डलो में बाँधी जाती थी।

याश्का ने आहिस्ता से आवाज दी

“बडबडिए ।”

“क्या ?”

“मुझे बडी तकलीफ हो रही ह ।”

“अच्छा आओ हम वाते करें। मुझे कोई किस्सा सुनाओ ।”

‘क्या कित्था थुनाऊँ ? कियो देव ता कित्था थुनाऊँ ?’

“चलो देव का ही सही ।”

थोडी देर तक वह खामोश रहा। फिर डिब्बे पर से कूद कर नीचे लेट गया। झुलसता हुआ सिर मेरे सीने पर रख लिया और आहिस्ता-आहिस्ता तल्लीनता की स्थिति में कहना शुरू किया

“मेरे पिता के जेल जाने थे पहले की बात है। गर्मियो का मौसम था और मैं बिल्कुल छोटा-या था। मैं बाहर थो रहा था धूधे की गाडी में। बडा मजा आ रहा था। एकदम मेरी आख खुल गई। दरवाजे के धामने वह कूद रहा था—बहुत छोटा-या था मूठी थे भी बडा नही

या । दत्थाने की तरह उथ पर वान ही वाल थे । भूरे और हरे । आँखें भी उथके नहीं थी । मैं चिल्लाने लगा । माँ ने मुझे जगा दिया । मुझे चिल्लाना नहीं चाहिए था, उथको डराना नहीं चाहिए नहीं तो वह नाराज हो जाता है और फिर चला जाता है और लौट कर नहीं आता यह बड़ी बुरी बात है । जिय घर में देव नहीं होता उथ घर में भगवान की दया नहीं उतरती । तुम्हें मालूम है देव कौन होत है ?”

“नहीं । कौन होत है ?”

“वे देवताओं के द्वारा भगवान को सूचना भजते हैं । देवता आयमान से उतरते हैं और थुना है कि वे हम लोगों की जवान नहीं थमभक्त, नहीं तो वे अपवित्र हो जात हैं । और आदमियों को भी देवताओं की बात नहीं थुननी चाहिए ।”

“क्यों नहीं सुननी चाहिए ?”

“इथलिए नहीं थुननी चाहिए कि मेरे ख्याल में तो यह शर्म की बात है । देखते नहीं इथ जवान न लोगों को भगवान की ओर से कितना विमुख कर दिया है ?”

उसे जोश आ गया और वह उठकर बैठ गया । और वह जल्दी-जल्दी बोलने लगा बिल्कुल उसी तरह जिस तरह तन्दुरुस्ती की हालत में बोला करता था ।

“हर आदमी परमात्मा थे थोधा जाकर कह देता है कि उथे क्या चाहिए लेकिन नहीं बीच में देव है— तभी वह लोगो थ नाराज हो शायद लोग उथे खश नहीं करते और वह देवताओं थ झूठी बातें कह देगा । थमझे कुछ ? अब वे उससे पूछत हैं यह कियान कैथा है ? और वह चूकि नाराज होता है इथलिए कहता है वह तो खराब आदमी है और फिर मैं तुमथे शर्त लगाता हूँ कि उथ आदमी के घर में मथीबतो का पहाड टूट पडेगा । लोग चीखते हैं चिल्लाते हैं—हैं परमात्मा हम पर

दया कर—और लोगो को मालूम नहीं होता कि उनकी शिकायत कर दी गई है। वह उनकी बात नहीं धुनता और वह भी उनसे नाराज हो जाता है ”

लडके के चेहर पर दुःख के बादल छा गये थे और वह गम्भीर हो गया था। उसने अपनी आँखें घुमाई और छत को घूरने लगा जो जाडो के आकाश की तरह सफेद थी। और गीले धब्बे बादलो जैसे दिखाई दे रहे थे।

‘तुम्हारे पिता की मृत्यु कैसे हुई?’

“वह अपनी ताकत की बड़ी डींगे हाका करते थे। यह उथ जमाने की बात है जब वह जेल में थे। उन्होते कहा कि मैं पाँच आदमियो को हरा थकता हूँ। उनसे कहा कि वे एक दूयरे की कमर में हाथ डाल लें और फिर उन्होने उन्हे उठाना शुरू किया और उनका दिल फट पडा। खून निकलता रहा और वह मर गये।

भुनभुने ने एक ठण्डी साँन भरी और दोबारा मेरे पास लेट गया। उसने अपने तमतमाते हुए कल्ले मेरे हाथो पर रगडे और अपना किस्सा फिर शुरू कर दिया।

“वह बडे पहलवान थे। मन भर का वजन उठा कर वह बगैर दम लिए वारह वार अपने ऊपर क्रास का निशान बना लेते थे। मार उन्हे काम ही नहीं मिलता था और जमीन भी बड़ी थोडी थी, बहुत ही थोडी—मालूम नहीं कितनी थी। पेट भरने को कुछ भी नहीं था, विल्कुल कुछ भी नहीं। भीख माँगो जाकर और बथ। मैं छोटा था, लेकिन मुझे भी ततारियो से भीख माँगन जाना पडता था। हमारे गाव में सब तातारी है, पर है, अच्छे तातारी। एय जो हमेशा कहते हैं, लो भई। ये ले जाओ। वे थव एय ही है। अच्छा तो हमारे पिता जी ने घोडे चुराना शुरू कर दिये। उन्हे हम पर बडा तरस आता था।”

उमकी वारीक आवाज ार्रा गई थी और धीरे-धीरे थकी-सी होती जा रही थी । लडका बूढ़े आदमी की नाई खांसकर और ठण्डी साँस भरके बोला

“जब वह घोडा चुरा लाते तो फिर थब ठीक हो जाता । हमारे पाथ खाने को होता और हम थब बहुत खुश होते । माँ तो रो-रोकर आँधें थुजा लेती थी लेकिन ऐथे मौको पर वह भी शराव पीती और गीत गाती । बडी अच्छी थी, थब को प्यार करती थी पित्ताजी के मरने पर रो-रोकर कहती थी, ‘हाय मेरे प्यारे, मेरी आत्मा !’ गाँव वाले मेरे पित्ताजी को लाठियो से मारा करते थे । लेकिन वह किसी की परवाह नही करते थे । आर्तम को फौज में भरती होना था । हम थोचते थे कि वह बूढी औरत मालूम होता था । तँदूर के कोने के पीछे एक हाथ में वोदका की बोतल और दूसरे में आजूरा लिये वह कुछ चोरो की तरह छिपा खडा था । उसके हाथ कँपकँपाते मालूम हो रहे थे—। शीशे टकराने और कलकल की आवाज आ रही थी जैसे कोई शराव निकाल रहा हो ।

“यहाँ आओ !” उसने मुझे आवाज दी और जब में करीब पहुँच गया तो एक भटके के साथ शराव का ग्लास बढ़ाया और कुछ छलका भी दी । “लो पियो !”

“में तो नही पीना चाहता !”

“नही क्यों ?”

“यह कोई वक्त नही है।”

“अगर कोई शराव पीता है तो पीने के लिये हर वक्त ठीक है । पियो !”

“में शराव पीता नही !”

उसने अपना भारी सिर हिलाया ।

“मुझसे तो किसी ने कहा था कि तुम पीने हो !”

‘ एकाध ग्लास वह भी उस समय जबकि मैं थक जाता हूँ ।’

उनने दाहिनी आँख से ग्लास को घूरा और एक गहरी ठण्डी साँस भर कर वोडका तँदूर के मुँह में फेक दी । फिर वह तँदूर पर चढ गया और उसके मुँह में पात्र लटका कर बैठ गया ।

“बैठ जाओ । मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूँ ।”

धंधरे में मुझे उनका थाली-सा चेहरा तो नजर नहीं आ रहा था लेकिन आवाज सुन कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ । इसलिए कि वह कुछ विलक्षण रूप से अनजानी-सी प्रतीत हो रही थी । मैं उसके समीप बैठ गया । उसमें मुझे बड़ा जानन्द आ रहा था । अपना सिर झुकाए वह ग्लान पर अपनी उँगलियाँ बजा रहा था और हल्की-सी टनटन की आवाज आ रही थी ।

‘हँ, तो कुछ सुनाओ ।’

याशका को अस्पताल पहुँचाना बहुत जरूरी है ।”

क्यों, क्या बात है ?”

‘बीमार है न वह ! कुजिन ने उसे बुरी तरह पीटा है ।’

“कुजिन बड़ा नीच है, बदमाश है । तुम लोगो की चुगलियाँ खाता है । क्या तुम सोचते हो कि मैं इस कारण उसके साथ कोई पक्षपात करता हूँ ? उसको कोई इनाम देता हूँ ? उसके मूर्खों के-से थोबडे पर तो मैं मुट्ठी भर धूल भी न फेक् । पैसे देने की तो अलग रही ।”

वह मरी हुई आवाज में बोल रहा था लेकिन बातें साफ सुनाई दे रही थी और हालांकि उसका एक-एक शब्द वोडका में बसा हुआ था लेकिन वह नशे में धुत्त नहीं था ।

“मुझे सब कुछ मालूम है । तुम नुअरो को मार डालना क्यों नहीं चाहते थे ? सब बताना मैंने तुम्हारे साथ ज्यादाती की है ह ना ? और मेरे साथ तुमने भी अन्याय किया है, क्यों ?”

मैंने सब कुछ बताना दिया ।

“हाँ ।” उसने कुछ रुक कर कहा, “तो मैं मुजर में भी बदतर हूँ, क्या ? मुझे भी जहर दे देना चाहिये है ना ?”

उसकी आवाज ऐसी आई जैसे कि वह मुस्करा रहा हो । और मैंने दुबारा कहा

“तो फिर क्या मैं याशका को अस्पताल ले जाऊँ ?”

“तुम चाहें उसे वूचडखाने में लेजाओ, मेरी बत्ता में । मुझमें उमका वास्ता क्या ?”

“तुम्हारे गच्चें पर ?”

“हरगिज नहीं ।” उसने लापरवाही से कहा । ‘जैना पहल कनी नहीं हुआ । फिर तो सभी अस्पताल में जाकर पड रहना चाहेंग । मैं कहता हूँ तुमने मेरे कान क्या अफ्ठ ये उम दिन ?”

“मुझे क्रोध आ गया था ।”

यह तो मैं भी समझता हूँ । लेकिन मेरे मवाल का मतलब यह नहीं था । जर तुमन मेर कान पर मुक्का मार दिया होता था तल जर घूसा, पर तुमन मेर कान क्या खीचे ? क्या मैं वच्चा हूँ ?”

“मैं लोगो को मारना पसन्द नहीं करता ।”

बडी देर तक वह शान्त बैठा रहा । उस समय एसा मालूम हाता था जैसे कि नींद का एक भोका आ गया हो । फिर उसने दृढता से और स्पष्ट स्वर में कहा

“तुम भी अजीब आदमी हो । बाकी सब नीकरो की-सी कोई भी बात तुम में नहीं है । तुम्हारी खोपडी भी किसी जार ही ढग की है ।”

उसने यह बात मुझे भडकान के लिए नहीं कही लेकिन उससे उम की खिन्नता अवश्य प्रकट हाती थी ।

“अच्छा अब बताओ कि क्या मैं वास्तव में बुरा आदमी हूँ ?”

“और आप क्या समझ रहे हैं ?”

मैं ? तुम झूठे हो, मैं अच्छा आदमी हूँ । अरे भाई मेरे मैं बहुत चालाक आदमी हूँ । अच्छा देखो, तुम पढ़े-लिखे हो बातें करने की तुम्हें ईश्वरदत्त प्रतिभा है । कोई बात हो तुम वरावर बोले जाओगे । तारों की दात हो चाहे फ्रांसीसियों की, या भद्रलोक की—मैं मानता हूँ यह सब बड़ी अच्छी दिलचस्प और मजेदार बातें हैं । मैंने तुम्हें एक ही नजर में भाप लिया था । याद है उस दिन जब तुम मुझसे पहली बार मिले थे और कहा था कि मुझे सदी लग जायगी और मैं मर जाऊँगा । आदमी ना मूल्य में बड़ी जल्दी ताड़ लिया करता हूँ ।”

उसने भट्टी और मोटी उँगलियों से अपना माथा ठोका एक ठण्डी नान भरी और समझाने लगा

‘अरे मेरे भाई मेरी स्मरण शक्ति बड़ी तेज है । अरे भाई मुझे तो रहा तक याद है कि मेरे दादा की दाढी में कितने बाल थे । शर्त लगा लो चाहे न्यो ?’

शर्त काहे की ?’

इस बात की कि मैं तुमसे ज्यादा चुस्त व चालाक हूँ । जरा मोचो तो मैं अनपढ़ आदमी हूँ, मुझे क ख भी नहीं आता सिर्फ गिनती जानता हूँ । लेकिन फिर भी मैं इतना बड़ा कारोबार नभाले बैठा हूँ । नेताजीस आदमी नौकर हूँ एक दुकान के और तीन हूँ गाखाएँ । तुम एक पढ़े-लिखे आदमी मेरे यहाँ नौकर हो । अगर मैं चाहूँ तो मचमुच एक अच्छे खासे विद्यापीठ को नौकर रख कर तुम्हें तात मार कर निकाल बाहर कर सकता हूँ । मैं अगर चाहूँ तो हर एक को तात मार कर निकाल कर गरव पर अपना नारा प्रत लुटा सकता हूँ । त्यों ठीक कहना हूँ ना मैं ?’

‘मेरी तो समझ में आता नहीं, इसके लिए दिमाग की क्या जरूरत है ?’

नव बखवान ! दिमाग क्या चीज होती है ? अगर मेरे पास नहीं

है तो फिर किसी के पास भी नहीं है। तुम समझते हो कि दिमाग वाला होने के लिए वातूनी होना जरूरी है। नहीं मिया यह तो कारो-वार की बात है। यही आपको मिलेगा दिमाग।”

उसने एक हल्का-सा लेकिन विजयपूर्ण कहकहा लगाया जिमके नाथ उसके बोझिल शरीर का लटकता हुआ मांस थलथल फुदकने लगा। फिर उसने मंत्रीपूर्ण ढंग से और भारी स्वर में बात जारी रखते हुए कहा

‘तुम एक आदमी का भी पेट नहीं पाल सकते थे और मैं चालीन को खिला रहा हूँ। अगर चाहूँ तो सौ को खिला सकता हूँ। दिमाग की बातें करने चले हो।’

जैसे-जैसे वह बोलता गया उसका स्वर कठोर और उपदेशात्मक होता गया और जवान लडखडाने लगी।

“मुझे क्या पाठ पढ़ाने चले हो तुम ? सब बकवाम है। बहरहाल उसने फायदा ही क्या ? न ही कुछ तुम्हारा भला होता है। खूब कोशिश करो ताकि मैं भी तुम्हें इसका मजा चखा सकूँ। ”

“चखा तो चुके हो।”

“अच्छा, वास्तव में ?”

उस पर उसने क्षण दो क्षण गौर किया और मेरा कन्धा थपथपात हुये इकरार किया

“हाँ ठीक है। वम जब जरूरत इस बात की है कि मैं तुम्हें एक मौका दूँ। हातांकि मैं सब कुछ देखता हूँ। सब कुछ जानता हूँ यह मेरा गारास्का चोर है लेकिन यह भी है बड़ा चालाक और यदि पकड़ा न जाय और जेल न चला जाय तो वह भी मालिक बन सकता है। अपने नौकरों की खाल खिचवाकर भुस भरवा देगा वह। यहाँ सबके सब चोर हैं जानवर से भी बदतर। पक्के बदमाश। और तुम उनके साथ भलाई करने की कोशिश कर रहे हो। मेरी तो कुछ समझ

मे नहीं आता यह तुम्हारी घोर मूर्खता है ।”

नींद मुझ पर सवार हो चुकी थी । दिन भर की मेहनत से मेरा जिस्म दकक कर चूर हो गया था और थकावट से सिर चकरा रहा था ।

आका को उमता देने वाली चपचपी आवाज विचारों को चिपकाय दे रही थी

‘मालिकों के बारे में तुम बड़ी भयानक बातें कहते हो ! यह सब तुम्हारी मूर्खता है, तुम्हारी तरुणाई ही इसका कारण है । मेरी जगह यदि कोई और व्यक्ति होता तो फौरन पुलिस वाले को बुलाता, एक त्वल उसके हाथ में थमाता और तुम्हें सीधा थाने भिजवा देता ।”

उसने अपना भारी और नर्म हाथ मेरे घुटन पर मारा

‘चालाक आदमी को मालिक बनने की फिक्र करनी चाहिये । इधर-उधर टक्करें मारने से क्या लाभ ? लोग तो इतने असह्य हैं जैसे मेंढक । मालिक बहुत थोड़े हैं । यही मुश्किल है । यह सब असमान और गलत है अगर तुम आख खोकर देखो तो तुम्हें बहुत कुछ नजर आयगा । फिर तुम्हारा दिन मजबूत हो जायगा और तुम समझ जाओगे कि खुद ये लोग ही खराब हैं यानी वे लोग जो नाँकरी करते हैं । तमाम फालतू आदमियों को काम पर लगाना चाहिये ताकि वे बेकार नार-नारे न फिरे । एक पेड़ को बेकार पड़ा सड़ते रहने देना लज्जास्पद है, उसको जला डालो गर्मी तो देगा । यही बात इन्सान के साथ है, ममके कि नहीं ।”

याशका के कराहने की आवाज आई और मैं उसे देखने के लिए उठ खड़ा हुआ । वह चित्त लेटा हुआ था—भवे तनी हुई और मुँह खुला हुआ था । दोनों हाथ सीधे और जिस्म के साथ चिपके हुए थे । उस लडके में कुछ फाँजियो जैसी चस्ती पाई जाती थी ।

निकान्दर आटे के कटाव पर मे नीचे कूदा और तंदूर की ओर लपका ही था कि रान्ने में मालिक से टकरा गया और कोई एक मिनट

तक हक्का-बक्का खड़ा रहा । फिर बड़ा-ना मुह फाड़कर अपनी मछ-
लियो जैसी आखे जपराधी की नाई भूपकाई और अपनी फुर्तीली
उँगलियो से हवा मे कुछ पचीदा आकृतियाँ बनाते हुए मुनमुनाया

“मू—ऊ—ऊ—ऊ !”

आका ने उसे चिढ़ाया और यह कहते हुए उठकर चला गया, “गूगा
पत्थर ! ”

जब वह दरवाजे के पीछे गायब हो गया तो बहरे गूगे ने मेरी
तरफ देख कर आँख मारी और अपना हलक दो उँगलियो से दवा कर
सकेत किया, “कोख—कोख । ”

अगले दिन सुबह याशका और मैं अस्पताल गये । हमारे पाम सवारी
के लिए पैसे नहीं थे और लडका बड़ी कठिनाई से चल रहा था । क्षीण
स्वर में खाँस-खाँस कर बातें करते हुए वह अपनी तीव्र वेदना का मर्द
की भाँति सामना कर रहा था ।

“थाथ ही नहीं ली जाती । फेफडे बंकार हो गये हैं वदमाश । ”

बाजार मे चिलचिलाती हुई, चादी की तरह चमकती हुई धूप मे
आँर गम कपडो में अच्छी तरह लिपटे-लिपटाये राहगीरो के दरम्यान
वे अपने काटे चँ थटे पहने असलियत से ज्यादा छोटा और मुखा नजर आ
रहा था । उनकी जान्मानी नीली आखें कारखाने के प्रबेरे की जादी
थी और इसलिए उनमे पानी टवटवा जाया था ।

‘ और मे मर गया तो आर्तम तो कुत्ते की मृत मरेगा, शराब
दुरी तरह पीन लगा । उल्लू ! और अपनी तो वह जरा भी देखभान

नहीं करता । बडबडिये, तुम उ-की डाट-डपट करते रहना, कहना मैंने कह दिया था ।”

उसके सूखे, काले, छोटे-छोटे-से होठ बचैनी के दर्द के कारण भिच गये ।

उसकी बच्चो जैसी ठोटी थरथराई । मैं उसको बगल में दबोचे हुए था और मुझे डर था कि कहीं वह रोना न शुरू करदे और मैं राहगीरो को मारना और खिडकियो के शीशे न तोडना शुरू करदूं और फिर अच्छा-खासा तमाशा बन जाये ।

भुनभुन' रुक गया । एक लम्बी-सी सांस ली और बड़े-बूढो की तरह रोवदार आवाज में बोला

“बस उससे इतना ही कह देना कि मैंने उसे हुक्म दिया है कि वह तुम्हारा हुक्म माने ।”

कारखाने में वापस आ कर मुझे एक और दुर्घटना का पता चला । सुबह जब निकान्दर विस्किट लेकर दूसरी दूकान में देने को ले जा रहा था तो वह फायर ब्रिगेड के घोडो की सीमा में आ गया और वह भी अस्पताल पहुँच गया ।

“अब, शानुनोव ने अपनी छोटी-छोटी चुधी आखो से मुझे देखते हुए बड़े विश्वास के साथ कहा, तुम देख लेना कोई-न-कोई मुसीबत आयेगी । जब कोई दुर्घटना घटती है तो उसके बाद दो और आवश्यक होती हैं—हमेशा तीन हुआ करते हैं । हजरत ईसा से लेकर सेट निकोलस और सेण्ट जार्ज तक । फिर पुनीत माता उनसे कहेंगी बस काफी ह बच्चो !” और फिर वे सत्यथ पर आ जायेंगे ।”

निकान्दर का कोई जिक्र न हुआ । वह उनके लिए अजनबी या हमारे कारखाने का आदमी न था । लेकिन फायर ब्रिगेड के घोडो की रफ्तार, ताकत और सहिष्णुता के बारे में बड़ी-बड़ी बातें होती रहीं ।

अनी हम खाना खा ही रहे थे कि गारास्ना आया । वह एज चुस्त

व चालाक, खूबसूरत लडका था। आँखें उमकी व्यभिचारियों और चोगे जैसी निटर थीं मानो कह रही हो—डरता कौन हूँ—उसने बड़ी गम्भीरता से घोषणा की कि मुझे निकान्दर की जगह देकर छोटा नानवाई बनाया गया है और मेरी तनस्वाह छ रूवल मासिक हो गई।

“बधाई !” यास्का खुशी से उछल पड़ा। फिर फौरन ही भवे सुकेड कर पूछा

“यह है किसकी आज्ञा ?”

“मालिक की !”

“लेकिन वह तो नशे में धुत्त है ना !”

“विल्कुल भी नहीं !” गारास्का ने चहक कर कहा। “मरने वालों की स्मृति में कल जरूर एक दौर चला था। लेकिन आज होश व हवास विल्कुल दुरस्त हैं वल्कि इससे भी ज्यादा और आज आटा खरीदने गया है।”

“तो अभी सुअरो वाला मामला खतम नहीं हुआ ?” बजारे ने दबी आवाज में भुंभला कर कहा।

सब लोग मुझे मँह फलाये देख रहे थे और जलन के मारे बुरे-बुरे ताने दे रहे थे। कठोर तथा असह्य अपशब्दों में कारखाना गुँज रहा था।

“हाथ मार रहा है खूब !”

“निराला पछी सदा निराला होता है !”

शातुनोव अपनी विशिष्ट भाषा में चवाचवा कर कह रहा था

“काँटों की अपनी जगह होती है, फूलों की अपनी !”

और कुज़िन ने अपने विचार उन्हीं शब्दों में छिपाये जिन्हें वह अपनी दुर्भावनायें छिपाने के लिये सदैव इस्तेमाल करता था।

“अरे शैतानो ! कितनी बार तुमसे कहूँ कि मूर्ति को ज़रा साफ कर दिया करो !”

केवल आर्तम ने बलन्द आवाज में कहा

हा गई शरू—वही काट-छांट बोलियाँ, ठिठोलियाँ !”

डबलरोटी की बेकरी में काम करने के बाद पहली ही रात को जब मैं एक बारी का आटा प्ध कर और दूसरी बार का भिगोकर कित्त व लिये हुए चिराग के पास बैठा था कि आका आ गया। नीद के मारे आखें बोझिल थी और वह उन्हें जल्दी-जल्दी झपका कर अपने होट झपकाये जा रहा था।

‘पढ रहे हो यह बड़ी अच्छी बात है। पड कर सो रहने से बेह-तर ह। ज्यादा देर तक आटा पडे रहने का खतरा ही नहीं।”

वाते वह धीरे-धीरे कर रहा था। फिर बड़ी सावधानी से मेज के नीचे नजर दौडा कर जहाँ नानवाई पडा खरटि ले रहा था वह मेरे करीब, आटे के एक बोरे पर बैठ गया। कित्ताव मेरे हाथ से लेकर बन्द कर दी और अपने मोटे-से घुटने पर रख कर उस पर अपनी हथेली जमा दी।

क्या कित्ताव है यह ?’

‘रूसी जनता के बारे में ।”

कौन-सी जनता ?”

रूसी जनता कहा ना !’

उनने कनअखियो से मुझ देखा और नमस्कारते हुए बोला

‘हम काजान के लोग भी रूसी ह—तातारियों के अलावा—तिबस्क के लोग भी रूसी हैं। कित्तके सम्बन्ध में लिखा है इसमें ।”

इसमें हरेक के बारे में लिखा है ।”

उसने पुस्तक खोली। पुस्तक वाल हाथ को फैलाकर पुस्तक को जाचते हुए फिर हिलाया और अपनी नजरी आख से पृष्ठों को जाना और निणय सुना दिया

‘पता चल गया, तुम इन कित्ताव को समझ ही नहीं सकते ।”

‘ यह कैसे जान गये तुम ? ’

‘ वात विल्कुल साफ है चित्र कहाँ है ? एक भी तो नहीं है । तुम्हें तो ऐसी किताबें पढ़नी चाहिये जिनमें तम्बीरे हों । शक्तिया कहता हूँ उसमें ज्यादा मजा आता है । जनता के बारे में क्या कहती है यह किताब ? ’

‘ इसमें उनकी थद्दा, उनके रस्म व रिवाज और उनके गीतों के बारे में बातें लिखी हैं । ’ मालिक ने किताब बन्द कर दी और अपनी टांग के नीचे सरका दी । और एक लम्बी-मी जम्हाई ली । उसका मुँह यद्यपि भाड-सा खुला हुआ था लेकिन उसने उस पर क्राम का चिन्ह* न बनाया ।

‘ य तो आम बातें हैं जो सब जानते हैं । ’ उसने कहा । ‘ लोग भगवान पर आस्था रखते हैं । उनके यहाँ अच्छे गाने भी हैं और बुरे गाने भी । और उनके रीति-रिवाज सब सड-पडे । उन सबके बारे में तुम मुझ से पूछ लो । रीति-रिवाज तो मैं तुम्हें इतनी अच्छी तरह ममभा दूँ कि क्या कोई किताब बतायेगी । उनके बारे में किताबें पढ़ कर तुम्हें जानने में ज़रूरत नहीं । सडक पर निकल जाओ, बाज़ार में चले जाओ, शराबखाने में जा बैठो या त्योहार के दिन गाव चले जाओ । वहाँ तुम्हें सब रिवाजों का पता चल जायगा । या जी चाहे तो किसी ज़दातत में चले जाओ । ठोटे-मोटे अपराधों की अदालत में भी । ’

‘ तुम तो बुरी बातों का जिक्र कर रहे हो । ’

उसने धूर कर गुस्से में मुझे देखा और कहा

‘ हा, हा मझ दालूम हूँ मैं क्या कह रहा हूँ । रह गई ये किताबें तो य मत्र मनगटन्त किस्में कहानिया हैं, विल्कुल मूर्खतापूर्ण । तुम

क्या मुझे यह समझा रहे हो कि एक किताब में पूरी कौम का हाल लिखा जा सकता है ।”

“एक से ज्यादा किताबें हैं ।”

तो क्या हुआ, कौम और जातिया भी तो हजारों-लाखों हैं । इन में से हरेक के बारे में एक एक किताब तो लिखने में रहा कोई ।”

उनके स्वर में तुशी थी और उसकी आंखों के ऊपर के पीले रोए गुस्से के मारे खड़े हो गये । यह बातचीत मुझे भयानक सपना-सा मालूम हो रही थी और मैं उससे उन्ता गया था ।

“तुम भी अजीब आदमी हो, विल्कुल आंधी खोपड़ी के । उसने एक लम्बी-सी साँस लेकर खरखराते हुए कहा, “तुम्हारी समझ में नहीं आता कि यह सब व्यर्थ की बकवास है । किताबें किसके बारे में हैं ? लोगों के बारे में । लेकिन कौन लोग हैं जो अपने सम्बन्ध में सच-सच बातें बता देंगे ? तुम बता दोगे ? मैं तो हरगिज न बताऊँ । अगर तुम मेरी जिन्दा खाल उबड़वादी तब भी न बताऊँ । मैं तो भायद भगवान के सामने भी कुछ न बोलूँ । वह कहेगा—हा तो वासिली अपन पापों की सूची तो पेश करो ।—और मैं जवाब दूँगा—हे परमपिता परमेश्वर वह तो तू मुझसे अधिक जानता है । यह आत्मा तो तेरी ही है मेरी नहीं ।”

उसने मुझे कुहनी मारी और हँसकर आँख मरते हुए पट्टे में नीची आवाज में कहता गया

हाँ, मैं तो यह भी कह सकता हूँ—किन्की है यह आत्मा ? उनकी है । उसने मुझसे लेली, और वन अब उनका जिक्र क्या !

उसने एक हाथ की और दोनों हाथ मुँह पर इस प्रकार फेर वन मुँह खो रहा हो फिर उन्ती उत्साह व उमंग से अपनी बातें जारी रखी

बोलो, क्या उसी ने नहीं दी थी मुझ आत्मा ? निश्चय ही उनका ही है । और बाद में क्या उसी ने फिर वापस नहीं लेली ? निश्चय ही

उसीने ली । वस तो फिर हिमात्र बेवाक और हम बरी ।”

मेरा मर चकराने लगा । लैम्प हमारी पुस्त पर और हमसे ऊपर दीवार पर नटका हुआ था और हमारी परछाईया मामने हमारे कदमों पर पड रही थी । कभी-कभी आका अपने मिर को झटका देता और ज़द गेशनी उमके चेहरे पर चमकने लगती । नाक दिखाई देती जिसे विभिन्न परछाईयो ने असलियत से ज्यादा लम्बा कर दिया था । और आँखों के नीचे स्याह हल्के नजर आते और उसके मोटे चेहरे के उतराव-चढाव भयानक मालूम होने लगते । हमारे दाहिनी ओर दीवार में एक खिटकी थी जो हमारे सिरो के बराबर ऊँचाई पर थी । खिटकी के धून-धूमरित शीशो में से मुझे नीले आकाश और मटर के छोटे-छोटे दानों की तरह ज़द मितारों के एक झुमके के अलावा और कुछ नजर नहीं जारहा था । आलसी, सुस्त नानवाई खरटि ले रहा था भीगर भ्न-कना रहे थे और चूहे कही कोई चीज खुरच रहे थे ।

“लेकिन क्या तुम्हे भगवान पर विश्वास नहीं है ?” मेने अपने मातिक से पूछा । उमने अपनी मुर्दा आँख तिरछी करके मुझे देखा और काफी देर तक कुछ जवाब न दिया ।

‘यह तुम मुझसे नहो पूछ सकते । तुम्हे मजाल नहीं ह कि अपने काम की बात के अलावा और कुछ बात मुझसे पूछो । जो कुछ मेरा दिल चाहेगा मे तुमसे पूछूँगा । और तुम्हे जवाब देना पडेगा आखिर तुम चाहते क्या हो ?’

यह मेरा अपना मामला ह ।”

बह मोच में पड गया और मुँह भीचे नाक से वीरे-वीरे सास लेता रहा ।

‘यह क्या जवाब हुआ ? वदनमीज । शैतान ।’

उमने अपन नीचे से फिताव निकाली और अपने घुटनों पर बपबपा कर फर्श पर फेंक दी ।

“कहानी ! कौन जान सकता है मेरी कहानी । और तुम्हारी—
तुम्हारी कोई कहानी ही नहीं है और न होगी कभी ।”

वह एकदम हँस पड़ा—एक बेपरवाह हँसी । इस अजीब सुबकी-
की-सी हल्की और मगी हुई आवाज से । मेरे दिल में मुर्झाहट और
मालिक के लिए सहानुभूति का भाव पैदा होता था । और वह अपने बेंडोल
जिस्म को लिए झूम-झूम कर व्यगपूर्ण और तीखे स्वर में कहता रहा

मैं यह सब कुछ जानता हूँ । तुम जैसे मैंने बहुतेरे देखे हैं । मेरी
एक रखेल है जो मेरी एक दूकान में सौदा बचती है । उसका एक
भतीजा है जो ढोरो की डाक्टरी पढता है, घोड़ो और गायो का इलाज
करना सीख रहा है । अब वह पक्का शराबी है और शराबी बनाया
है मैंने । गाल्किन है उसका नाम, कभी-कभी आता है मेरे पास शराब के
लिए दस कोपेक लेन । बिल्कुल फक्कड है । उसने यह जानने की कोशिश
की थी कि दुनिया के कारोवार कैसे चलते हैं, वह भी बकवास किया
करता था । लोगो में कही-न-कही सच्चाई जरूर होगी । मेरे दिल की
गहराइयो में यथार्थ की खोज की धुन समाई हुई है तो फिर दिल की
उन गहराइयो के बाहर भी कही सच्चाई मौजूद है । और मैं उसे शराब
पिला-पला कर नशे में धुत्त करता रहा । कम्बस्त पक्का शराबी बन
गया, दीर्घे निकाल-निकाल कर मुझे घूरा करता । आँखें उसकी कोमल
रमणी की-सी थी पर मैं यह नहीं कहूँगा कि उनमें मक्कारी थी, वह
अपने आप ही में न रहता था । कहा करता, ‘वासिली सेम्योनोव तुम
कुहरा हो । जिन्दगी में तुम एक भगानक मनुष्य हो ।

तेंदर गर्म करने का समय हो गया था । मैं उठ खड़ा हुआ और
मैंने मालिक को यह बात बताई तो वह भी खड़ा हो गया । नाँद खोल
कर आटे को थपका और बोला ‘अच्छा तो यह बात है । ’

वह टहलता हुआ मेरी ओर देखे बिना ही वहाँ से चला गया ।

मैंने सन्तोष की साँस ली कि उसका चक्की-चुपड़ी और शीखी

नरी आवाज रुक गई थी और बेहूदा बातचीत का नूमार बेकरी में बाहर चला गया था ।

त्रिस्किटो की बेकरी में नंगे पाँव चलने की आहट हुई और गुप्प जघेर में जातेंम मुझसे टकरा गया । उसके बाल बिखरे हुए और उदास जाँत्रे फटी-फटी-सी थी जसे कोई नीद में चलने के रोग का शिकार हो ।

“जच्छा तो इस प्रकार तुम्हे काव् में फिया जा रहा है ।”

“हाय, तुम सोए नहीं ?”

“मालूम नहीं, दिल में कुछ दद-मा हो रहा ह । ही ही तो इस तरह वह । ”

‘उमकी भी बड़ी मुश्किल है ।’

हा, गायद ! बेकार आदमी है और सौदेबाजी में नीचता करता ह । ’

जब उसके ने नदर के सहारे खडे होत हुए परिवर्तित स्वर में जैसे प्राही नरमरी तौर में कहा

‘मेरे नाई प्रचारे का इन लोगो ने अवमुजा कर डाला ह । क्या न्यान ह तुम्हारा ? जिन्दा निकत जायगा वह जस्पतात से ?’

क्या प्रात कही ? हे भगवान दया कर ! ”

वह एक भटके के साथ नदर में जतग होकर गटा हुआ और उदास स्वर में वह कहता हुआ त्रिस्किट की बेकरी में चला गया ।

‘भगवान ने हमें कुछ नहीं मित्रेगा । ”

साक्षि ने रात की ये बात एक निरन्तर और भयानक सपन की तरह चारी रही । हर रात पिउठे पहर जब मूर्ग जतान दे रह हान तो

जहन्नुम में सैतान उछल-कूद करते होत । और में आग सुलगाने के बाद किताब हाथ में लिय पढ़न को बैठता होता तो वह बकरी में कहीं से आ टपकता ।

गोल-मटोत और आलसी की नाई वह अपन कमरे स लुढ़कता हुआ निकलता और एक हाथ के साथ तद्दूर के किनार पर बैठ जाता । और तद्दूर के अन्दर उसकी टांग इस तरह लटक रही होती जैसे कि तब में । अपना छोटा-सा पजा फंला कर लपटों के सामने करके अपनी मजरी आख चुबी करके देखता और पीली खाल में से झलकते हुए सुख चून को देखकर आप ही सराहता और फिर दो घण्ट तक अजीब आर उकता देने वाली बातचीत जारी रहती ।

साधारणतया बातचीत की शुरुआत अपनी बुद्धिमत्ता की डींगों न आर अनपट गवार की शक्ति स करता जिसन एक बड़ा कारामार सडा कर लिया जिसे वह मूखों और चारों का काबू में करके उनकी मदद न चला रहा ह । इस विषय पर वह बड़ी लम्बी-चोड़ी बातें करता रहता लेकिन एक प्रकार की ऊब के साथ । बीच-बीच में एक तम्बे ज्व-नास के बाद और बार-बार सदा आह इस तरह भर कर माना साटया बज रही हो । कभी-कभी ऐसा मालूम होता था जैसे वह अपनी व्यव-सायिक सफलताये गिनाते-गिनाते थक गया हो । और अपन ऊपर बडा जन्न करके उनका जिक्र कर रहा हो ।

उसका वास्तव में अनुपम प्रतिभा पर अचरज करते-करते में काफी समय हुआ थक चुका था । सड-बुसे जोर सील हुए आटे का नाव-ताव करके सस्ते दानों खरीद लेने, फफूद हुए सराब विस्किट मनो की मात्रा में गाव के व्यापारियों के हाथ बेच दन में उसे कमाल हासिल था । धोखेभरा साम्य और लज्जास्पद सादगी के साथ सादागरी की ये शोइदा-वाजिया विफल होकर रह गई थी और उन्होंने मनुष्य के लोभ व नखना को बड़ी निर्दयता से नग्न कर दिया था ।

तन्दूर में जलनी हुई लकड़ियों में से लपटे निकल रही थी। मैं और मेरा मालिक तंदूर के आगे बैठे थे। उमकी तोड़ की मोटी-मोटी शिकने उसके घुटनों तक लटकी हुई थी। भडकती हुई आग की लाली उसके अंधियारे चेहरे पर काँदे की तरह लपक रही थी। घाड़ के जुए की धातु की तरह उमकी फुल्ली, पथराई हुई और डबडवाई हुई आँख, किमी बूढ़े-फूस फकीर की आँखों के तुल्य थी। और मजरी, विल्ली के दीदों की नाई चमकती हुई आँख बड़ी तेजी के साथ झपक रही थी और उसमें एक विचित्र प्रकार के जीवन की झलक आती थी। उसकी अजीब आवाज—कभी स्त्री की आवाज की तरह तेज और महीन हो जाती और कभी भारी चीख बन कर निकलती—सतोपपूण और ग्लानि पूण शब्द निकाल रही थी।

“तुम दूमरों पर हृद से ज्यादा भरोसा करते हो और बहुत-सी ऐसी बातें कह जाते हो जो तुम्हें नहीं कहनी चाहिये। लोग दगावाज होते हैं, उन्हें बड़ी सावधानी और खामोशी के साथ सम्हालना चाहिये जादमी को शर की निगाह से देखो और एक शब्द न कहो। अपनी जवान बिल्कुल बन्द रखो। जरूरत ही नहीं कि वह तुम्हारी बात ममझे। जरूरत उस बात की है कि वह तुमसे डरे और यही अन्दाज लगाना रहे कि तुम्हारा मक़द क्या है।”

“मेरा तो यह इरादा बिल्कुल भी नहीं है कि मैं लोगों को नभानूँ।”

‘भूठ ! उसके बिना तुम्हारा गुज़ारा ही नहीं हो सकता !”

उमने मुझ समझाना शुरू किया “कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें काम करना पड़ता है और बाकी ऐसे जो इन्तेजाम करते हैं। और अफ़सरी को इस बात की निगरानी करनी पड़ती है कि काम करने वाले व्यवस्थापकों की आज्ञा का बिना चू-चरा के पालन करें।”

‘जितनी जरूरत न हो उन्हें लात मार कर निकाल बाहर करो। तेरे-मेरे का क्या काम ?”

“और वे जाये कहा ?”

“मेरी बला से कही जाये । आवारा मर्द और चोरो के लिए—
तमान निकम्मे लोगो के लिए ही तो अफसर-हाकिम है । जो आदमी
किसी काबिल होता है उसे अफसरो की जरूरत ही नहीं होती, वह
खुद अपना हाकिम होता है । अब गवनर-जनरल से तो यह आशा नहीं
की जा सकती कि उसे यह मालूम हो कि मेरे लिए कौन-सा आटा अच्छा
है और कौन-सा नहीं । उसका काम तो यह जानना है कि कौन-सा
आदमी काम का है और कौन-सा बेकार ।”

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता कि उसकी आवाज में भावुक उत्साह
है । शायद यह किसी और ही चीज की लगन थी, किसी ऐसी वस्तु की
अभिन्नापा जिसे वह स्वयं भी नहीं जानता था । और मैं उसकी बात-
चीत पूरी एकाग्रता के साथ और बड़ी उत्सुकता से सुनता ताकि उसका
मतलब नमस्क में आजाय । और नये-नये शब्द सुनने की मैं सदैव प्रतीक्षा
करता रहता ।

तन्दर के नीचे से चूहो, जली हुई चटाई और धूल आदि की दुर्गन्ध
आ रही थी । चीकट दीवारो में से गर्म और सीले हुए भभके निकल
रहे थे । फर्श बहुत ही गन्दा और पुराना हो चुका था । खिडकी में से
छन-छन कर आन वाली चाँदनी ने फर्श की काली दरारो को और भी
अधिक स्पष्ट बना दिया था । खिडकी के शीशो पर जगह-जगह
मक्खियो के गुच्छे चिपके हुए थे । मालूम होता था कि मक्खियो ने खुद
आन्नाश को भी दागदार बना दिया है । यह जगह बड़ी घुटी हुई, गु जान
और इतनी गन्दी थी कि उसका साफ करना असम्भव था ।

क्या एक आदमी का इस प्रकार जीवन व्यतीत करना शोभनीय
है ?

मेरा मालिक एक-एक शब्द आहिस्ता-आहिस्ता टटोन कर बोल
रहा था । इस तरह बोलते हुए देखकर सहसा उस अंधे फकीर की आकृति

आँखा में फिर छाजाती थी जो अंधेरे में अपनी कपकपाती हुई उगलियो में अपने कासे में पैसा-धेला टटोल रहा हो ।

“विज्ञान—अच्छा भई मान लिया ठीक है ! तो फिर कोई वैज्ञानिक मुझे आकर बताये कि मिट्टी या कीचड़ से आटा कैसे बनता है । और हाँ, देखो तो सामने एक भव्य इमारत है—विश्व विद्यालय कहते हैं उसे । वहाँ के छात्र युवा और दिल्लीवाज हैं, शराबखानों में मारे-मारे फिरते हैं । पी-पीकर बदनस्त हो जाते हैं और बाजारों ऊधम मचाते फिरते हैं । सेंट बेलाम के वारे में अश्लील व गंदे गाने गाते हैं, पेस्की बाजार में वेश्याओं के यहाँ जाते हैं और आम तौर पर उनकी जिन्दगी पावन पादरियों की-सी होती है । ”

और फिर उसके बाद अचानक कोई डाक्टर बन जाता है तो कोई जज, कोई शिक्षक बन जाता है तो कोई वकील । क्या तुम मुझमें आशा करते हो कि उन पर विश्वास कर ? क्यों वह तो शायद मुझमें भी ज्यादा बेईमान हैं । मुझे तो किमी पर भरोसा नहीं । ”

और भुट्टाचारियों की तरह होठों पर जवान फेरते हुए उमंगे अन्वयनाडे तथा ग्लानिपूर्ण विवरण के माय बनाना शुरू किया कि विद्यार्थी लड़कियों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करते हैं ।

स्त्रियों के सम्बन्ध में वह बड़ी देर तक बातें करता रहा । उसका टंग बड़ा अरोचक एवं ब्रसा था । एक विनम्र एकाग्रचित्तता के साथ वह बोल रहा था और उसकी आवाज शन शन कीमी होत-होते मात्र खुर-पुमर में परिणत होगई थी । भारतो की शक्ति व मृत्यु का वह कभी जिक्र नहीं करता था बल्कि उनकी छानियो, जापो और टागो का विवरण में बणन करता था । उसके ये किम्मे मुझे बड़े अमह्य मालूम होने थे ।

‘तुम तब देवों अन्न करण की और खरेपन की बातें करते रहन हा । मैं तुमने ज्यादा बरा जादमी है, तुम उद्भूत तो पन्हा हा लेकिन गरे

या स्पष्टनादी नहीं, जर्ग भर भी नहीं । मुझे तुम्हारी दो-एक हरकत मालूम हैं । अभी थोड़े ही दिन हुए तुमने शराबखाने में एक अखबार के प्रतिनिधि से कहा था कि मेरे यहाँ आटे की नाँदों में सड़ाँद है आटे का खमीर उठता है तो सारा फर्श पर वह निकलता है । भीगरो की भरमार है और कारीगरो को आतशक है, हर जगह गदगी है । ”

तुमसे भी तो कहा था यह सब कुछ मैंने । ”

हँ, कहा तो था । लेकिन यह तो नहीं कहा था कि तुम यह सूचना अखबारों को देना चाहते हो ? अच्छा अखबारों में ये सब बातें प्रकाशित हुईं, पुलिस आई, मफाई के महकमे वाले भी आये । मैंने पाँच-पाच के बीस नोट उनमें बाँट दिये । और देख लो, क्या विगाड लिया किनी ने मेरा ?” उसने अपना हाथ चक्र की तरह अपने सीने पर फिराया और बोला देखा तुमने ! जो पहले था सो अब भी है—भीगर सब मौजूद हैं, मजे से उछलते-कूदते फिरते हैं । बरे रह गये तुम्हारे अखबार, तुम्हारा पिन्ना, तुम्हारा अन्त करण ! अरे बाँडम, तेरी समझ में यह नहीं जाता कि उल्टा तुम्हें पर ही वार हो जाता । आम-पास की सारी पुलिस मेरी जब में है । सब अफसर मेरे इशारों पर नाचते हैं तुम्हारी एक नहीं चलेगी । और तुम इसके खिलाफ डट कर खड़ा होना चाहते हो जैसे कोई भीगर कुत्ते के मुकाबिले में आखड़ा हो, हह ! तुमसे बातें करने से तो मुझे मतली आने लगती है । ’

वास्तव में ऐसा प्रतीत होता था कि उसको मतली हो रही हो उनका मुँह उतर जाता, सारे यकावट के उसकी आँखें बन्द हो जातीं और वह एक हल्की-सी आवाज के साथ जम्हाई लेता । उनसे खूले हुए मुखें जवडों में कुत्ते जैसी पतली-नी जवान दिवाई देने जाती ।

उससे मुलाकात होने से पहले मैं इन्तानी गदगी, निदयता और मूर्खता बहुत कुछ देख चुका था । और भलाई तथा वास्तविक मनुष्यता ने भी कुछ कम मेरा वास्तव न पडा था । मैं कुछ अल्पन्त मुन्दर पुन्तने

पढ चुका था और मैं जानता था कि मुद्दतों से और हर जगह लोग एक विभिन्न प्रकार के जीवन के स्वप्न देख रहे हैं और यह भी कि कुछ जगहों पर उन्होंने अपने सपनों को व्यावहारिक रूप देने के लिए काशिश भी की थी । और अब भी वे उनकी पूर्ति के लिए सचेष्ट थे । और वर्तमान परिस्थिति से अमन्तोष के मेरे दूध के दात अमा हुआ टूट चुके थे और अपने उम मालिक से मुलाकात हॉल से पहले तक मुझे विश्वास था कि मेरे ये दांत काफी मजबूत हैं ।

अब ऐसी हर बातचीत के बाद मुझे पहले से ज्यादा अच्छी तरह और अफमोस के साथ अनुभव होता कि मेरे विचार और स्वप्न कितने क्षीण और क्रमहीन हैं । मेरा मालिक उन्हें किस तरह तार-तार कर रहा था, उनके ग्रंथकारमय पहलू मुझे दिखा रहा था और मेरा दिल दुःखद मदेहों ने ड्रगन लगा था । मैं जानता था, मुझे अनुभव था कि मेरी हर जान्था का सतोष के साथ विरोध करना उसकी गलती थी और मैंने एक क्षण के लिए भी अपने सिद्धांतों की सत्यता पर शक नहीं किया । लेकिन इस सच्चाई पर वह जो कीचड उछाता था उससे उसे बचाना मेरे लिए कठिन था । अब प्रश्न यह नहीं था कि मैं उसे झुटलाऊँ बल्कि अब समस्या थी अपनी जन्मदन्ती दुनिया की सुरक्षा की जिस पर मालिक के नरकचट्टेपन के मामल मेरी अपनी अयोग्यता की घातक भावना जाग्रमण कर रही थी ।

उसके भद्दे और भारी मस्तिष्क ने पूरी जिन्दगी को इस तरह टुकड़े-टुकड़े कर दिया था जैसे कोई किसी जिस्म को कुन्हाड़ी से काट डाले और उन टुकड़ों का एक ढेर-सा उमने मर सामने लगा दिया था ।

जात्मा और परमात्मा के बार में उमकी बातों ने मेरी तन्त्र उत्सुकता को चगा दिया था । मेरी हमेशा यही कोशिश होती थी कि बात-चीत का तब दन समस्याजा की जाए मोउद । शायद मेरी दन कोशिशों को महसूस न करने हुए मेरा मालिक यह मानित करने लगता कि

जिन्दगी के रहस्यो और घातो से मैं कितना अनभिज्ञ हूँ ।

‘ जिन्दगी तेर करना बडी सावधानी का काम है । जिन्दगी इन्सान ने हर चीज की माँग करती है—यो समझो जैसे कोइ रखेल, लेकिन उससे क्या तुम् कुछ अधिक मागते हो ? नहीं, सिर्फ एक चीज—मजा । मक्कारी और चालाकी भी जीवन के लिए अत्यावश्यक है । खशामद-दरामद से काम निकल सके तो निकाल लो अगर यह न कर सको तो झपट लो या लेकर डण्डा मारो—तडाख ! और फिर जिन्दगी तुम्हारी लौंडी है । ’

यदि उसकी बातो पर झुल्लाकर मैं सीधे प्रश्न करने लगता तो तो वह उत्तर देता

‘ इससे तुम्हारा कोई वास्ता नहीं । मैं भगवान में विश्वास रखता हूँ या नहीं इसका उत्तरदायी मैं हूँगा, तुम नहीं । ’

और जब मैं अपनी मनोनीत समस्याओ पर बातचीत शुरू कर देता तो वह अपना सिर इस तरह हिलाता मानो कोई सुभीताजनक स्थिति ज्ञात करना चाहता हो । अपना छोटा-सा कान मेरे मुँह की ओर झुका देता और बड़े सन्तोष व धैर्य के साथ बैठा सुनता रहता । इस स्थिति में हमेशा ही उनकी पकौडा-सी नाक वाले चपटे चेहरे पर उदासीनता के भाव उभर आते । उस चेहरे को देखकर ताँवे का बैसा ही टंकना अनायास स्मरण हो आता जिसके बीच में एक मुठिया लगी हो ।

वेदना का एक कटु भाव मेरे हृदय में जम गया था, उनका कारण मेरा व्यक्तित्व न था । घृणा करते-करते जब मैं थक चुका था और जिन्दगी की ठोकरें काफी खामोशी के साथ सहन कर लेता और उन्हें हेय समझ कर उनके नामने डट जाता था । वल्कि इस अनुभव का आधार वह सत्यता थी जो मेरी आत्मा में घुम आई थी । और वही विकसित हो रही थी ।

जब मनुष्य अपनी प्रिय और जीवन की महत्वपूर्ण तथा प्राप्य वस्तु

की उसके लिए शोभनीय सुरक्षा करने का अपने को अपात्र समझता हो तो उसका अनुभव अत्यन्त दुःखदाई और उसकी वेदना व कर्मक निन्तात तीव्र हो जाती है । मनुष्य के लिए उसके दिल की बेजबानी से ज्यादा तेज और कोई चीज नहीं होती ।

चूँकि हमारा मानिक रात को आकर मझसे बातचीत किया करता था इसलिए कारीगरों की निगाहों में मुझे एक विशिष्ट महत्व मिल गया था । राज लोग जो मुझ खतरनाक जादमी समझते थे और बाकी जो एक पिचित्र व्यक्ति तथा सनकी समझा करते थे अब उन्होंने अपनी राय बदल दी थी । अधिकतर कारीगर मेरे साँभाग्य पर मुझसे अपनी नफरत व जलन छिपाने की जमफत चेष्टा करते जाते मुझे एक अत्यन्त प्रत व्यक्ति समझते थे जो अपनी स्यायपूर्ति के लिए कोई बड़ी गहरी चाल चल रहा हो ।

कुत्तिल ने अपनी मैली, बून भरी टाटी-मी दाडी पर हाथ फरते और अपनी चंचल आंख को कहीं एक जगह में छिपाने हुए जादर के साथ कहा

अच्छा भाई, अब तो तुम पट्टन लदी हकन बना दिये जा जाग, और अब गदचन की काले बात भी क्या है उममे ? ”

जिनी न और न उमका साथ दिया

हमें डराने-पमकाने से लिए ।”

भरी पीठ पीछ और भी नई कट्टे बाधन मुगारें दिये

जिनके मूट ने जवान हा नह ना लीव क्या कही जात जात ना

रास्ता भी तनाश कर सकता है ।”

‘घन खिलाओ इसे ।’

और बहुत-से तो अब मेरी आख के इशारे की प्रतीक्षा करते कि फौरन ही एक अनेच्छा भरी आज्ञाकारिता से आज्ञा का पालन करें ।

आतँम, वास्का और उनके अलावा दो-एक और कारीगरों ने जिनसे मेरी मित्रता हो गई थी अब अपने इन सम्बन्धों में मेरी बातों पर अति-शयोक्ति पूर्ण गौर करना भी शामिल कर लिया था । एक दिन मेरा सन्तोष समाप्त हो गया और मैंने नाराज होकर बजारे से कहा कि मैं इस हरकत को बिल्कुल अनावश्यक और बहुत ही दोषपूर्ण समझता हूँ ।

अच्छा बस रहने दो, मेरी बात मानो ।” उसने मेरा मतलब समझते हुए कहा और शरारत में अपनी आँखें चढाली । “अगर हमारा मालिक जो हम सबसे ज्यादा चालाक है तुमने अपने मामलों पर बहस करता हू तो मेरा विचार है कि तुम्हारे पास भी बड़े-बड़े घर हैं ।”

झरी ओर शतुनोव, जो सदैव खिचा-खिचा और खामोश रहता था अब मेरे बहुत निकट आ गया और दिन-प्रति-दिन अधिक विश्वास करने लगा था । जब कभी हमारा आमना-सामना हो जाता तो उसकी उदास और रहस्यमयी आखें चमक उठती और उसके मोटे-मोटे होठ आहिस्ता-आहिस्ता फैल कर मुस्कराने लगते और उसके कठोर, पथरीले चेहर में परिवर्तन झलक उठता ।

क्यों, अब तो आराम से हो ?’

‘आराम से तो नहीं हा सफाई से ।’

‘सफाई अगर है तो उसका अर्थ है आराम ।’ वह उपदेशों की तरह कहना, फिर एक कोने की तरफ निगाहें फेरकर जैसे बिना किसी इरादे के पृष्ठता

‘नादरसन नाम् क्या है, जानते हो ?’

ऐसे ही शब्दों का उसके पास भण्डार था । और जब वह अपनी

भारी व भयानक आवाज में उनका उच्चारण करना तो बड़ा ही विचित्र-सा लगता । और उनमें एक प्रकार की प्राचीन, कल्पित कथा का आभास होने लगता था ।

“ये शब्द तुम कहाँ से नील लेते हो ?” मैंने एक बार चकित हो पूछ ही लिया । मेरी उत्सुकता चरम सीमा को पहुँच चुकी थी । उनमें भी जरा सम्हल कर प्रश्न किया

“तुम्हें आखिर यह जानने की लालसा क्यों है ?”

फिर दुबारा मानो मुझे गच्चा देने की चेष्टा करते हुए वह अचानक एक सवाल और कर बैठे

“हर्ता का क्या अर्थ है ?”

कभी-कभी किसी दिन शाम को काम के बाद या किसी छुट्टी के दिन नहाने-धोने से निपट कर बजारा जीर आर्सेम मेरे पास आ बसते और उनके पीछे ही पीछे ओसिप शतुनोव भी आ घुसता । हम एक प्रविष्टाने कोने में तदूर के मुँह के इर्द-गिद बैठ जाया करते । मैंने यह कोना काट-पाठ कर और धो-धुला कर माफ व आरामदह कर लिया था । दाहिनी बाजू जीर पीठ के पीछे बड़े-बड़े ताक थे । उनमें उबल रोटियों के माचे रखे थे, जिनमें तमीरी जाटा फूट कर उभरा हुआ था । उन्हें देख कर यह गुमान होता था कि जैसे जैसे मिर छिपे हुए हैं और दीवारों से भाक कर हमें देख रहे हैं । टीन की एक बड़ी चायदानी ने मे गहरे रंग की चाय निकान-निकान कर हम लोग पीने लगने । यादका सनाह देता

जच्छा तो अब हमें कुछ सुनाओ, या ऐसा करो दो-चार कविताएँ ही सुनादा !”

स्टोत्र के ऊपर रखे हुए मेरे मन्दक म मेर पाम पुश्किन श्वरविना और सुरिकोत्र की कविताओं के नग्रह थे—मद्दे और छोटे छोटे गण्ड जो मैंने पुरानी कविताएँ बेचन जाओ की दुकान में खरीद थे । मैंने उन्हें जोशोने टा में गुनगुना कर पढ़ने लगता

किस कदर ऊचे हैं ऐ इन्तान तेरे सारे काम
 तुने दुनिया को दिया है एक जैसा ही निजाम
 कितने दिलकश, कैसे हैरतखोज, कितने शानदार
 पड रही ह खुद खुदा के नूर जी जैसे फुहार
 न ही देता है हमें सच्ची मुहब्बत बेहिसाब
 और सबको अपने-अपने काम का सच्चा जवाब

पाशक ने आहिस्ता-आहिस्ता आखे झपकाते हुए डवर-उधर से
 फिताव को भाक कर देखा और आश्चर्यचकित होकर वडवडाया

‘वाह क्या खूब ! बिल्कुल वायविल की तरह ! अरे, गिरजे में
 यही गीत गाया जा सकता है तो भगवान मेरी सहायता कर ।”

कविता लगभग सबदा ही उसके भावों में उत्तेजना-ती उत्पन्न कर
 देती थी और उस पर एक पश्चाताप की स्थिति छा जाया करती थी ।
 कभी-कभी जो पद उसे बहुत अधिक प्रभावित करते उन्हें वह हाथ
 हिला-हिला कर अपने धुंधरियाले वालों को मृत्ती में भीच कर और
 बडी निर्भीकता ने गालियाँ देकर, जमा-जमा कर दोहराता

वाह, वाह क्या खूब कहा है ।”

जब लिखी है मेरी किस्मत पर सदा यह मुफलिसी

मारी उम्मीदें भुलादे अब तो अच्छा है यही

अरे वाह ! क्या कहा है ! भगवान की कसम कभी-कभी तो भाई
 अपनी जिन्दगी पर ऐसा ही दुख होता है । बरवाद हो जाती है व्यर्थ
 नष्ट हो जाती है । ऐसी कसक होती है कि दिन को मनोम कर रख
 देती है—ऐसी कि नरक से भी बदतर । कोई करे तो क्या करे ? डान्
 बन जाय ? एक छोट्टे-से पत्थर से तो चिडिया भी नहीं मारी जा सकती
 और तुम हा कि हमसे कहते रहते हो—नडकों मिल-जुल कर रहा
 करो ! दोस्तों की तरह रहो ! हे भगवान ।”

आर्तम कविता सुनते समय ऐसी आवाजे निकालता जैसे कोई चीज

निगल रहा हो। होंठों पर इस तरह जीम फेरता मानो कोई गरम-गम
 म्वादिष्ट चीज खा रहा हो।

प्रकृतिक दृश्यों के वर्णन पर वह भवदा चिन्ता होकर रह जानर
 था।

मिरो पर सुनहरे दरन्त जगमगाये
 दरन्त भील पर हैं खडे मर भुकाये

‘ठहरो! उसने विस्मित होकर और खूशी में उछल कर कहा।
 धार जब उसने मेरा कवा पकड कर मुठ्ठी में भीचा तो उसका चेहरा
 मार खुशी के दमक रहा था, मैंने भी देखा ह। आर्म्क के समीप।
 यहा के एक मामन्त के दााके मे। हे परमात्मा मरी मदद कर।”

‘अच्छा तो इसमें क्या हुआ?’ याशका ने झल्लाकर पूछा।

‘बेचिन तुम समझा क्यों नहीं?’ मैंने यह हाथ देखा ह और र्मी
 पर यह पद भी लिखा हुआ ह।”

मी। मे मा पोता। बेहार बहाम लगा रती ह।”

एक बार जानम सुरिहाज की कविता ‘गाव मे’ ने बडा प्रभावित
 हुआ। जार काई तीन-चार दिन तक वह उस कविता को एक पुरानी
 मलित गीत की तय पर गाता फिरा यहा तक कि योग सुनते-सुनते
 उन्ता गये

जमने योही जारी ह मफर
 जा रहा ह मे गुदा जाने फिर
 ह दिन परगाह हुउ ही क्या नही
 जमना फिरता रह चाह फिर
 जानता ह एत मफर का पान्मा
 सुन्ता पदुमा दमा जागिर अपन पर

जातुनाव पदा व कविता का व तय भी प्रभावित न हाता था। जार
 मर कविताए मिठुन उदा गीत। मे सुनता रहता था। पर। मी। न

वह एक शब्द को ही पकड़ कर बैठ जाता और उसके अर्थ को समझ-बाये बिना पीछा न छोड़ता था ।

‘एक मिनट ! एक मिनट ठहरो ! वह क्या है ?—कम ?’

शब्दों के पीछे उसकी इस भाग-दौड़ से मैं बड़ा अचम्बित या आश्चर्यचकित इनका पता लगाने की उत्सुकता हुई कि आखिर वह मालूम क्या करना चाहता है ।

एक बार नवाले व आग्रहों की बौछार समाप्त होने के बाद ओसिप ने कुछ बड़प्पन-भरी मुस्कान के साथ यह रहस्य भी खोल ही दिया

‘क्यों तुम भी कारण जानने के लिए उद्विग्न हो ?’

फिर रहस्यमय ङग में चारों ओर देखते हुए उसने आहिस्ता-आहिस्ता खमर-पुसर के स्वर में कहा

‘दरअनल एक ऐसा रहस्यमय पद है कि जिस किसी को भी मालूम हो जाय वह जो चाहे सो कर सकता है । लेकिन कहते हैं कि जब तक पूरा पद किसी को मालूम नहीं है । इस पद के सारे शब्द विभिन्न तोगों में बाट दिये गये हैं और ये लोग सारी दुनिया में फले हुए हैं और उन समय तक फँसे रहेंगे जब तक कि नियत घड़ी न आ पहुँचे । अच्छा—तो भई इन तमाम शब्दों को एकत्र करना है और उन्हें जोड़ कर पूरा पद बनाना है ।’

उसकी आवाज और भी धीमी हो गई और वह विलकुल ही मेरे ऊपर झुक गया ।

‘अरे इस पद को हर तरफ से पटा जा सकता है, चाहे जादि स पटो चाहे अन्त से अर्थ एक ही निकलता है । मेरे पास कुछ शब्द तो एकत्र हो चुके हैं । अस्पताल में एक खानाबदोश न भरने से पहल मुन्-बताये थे । समझे भाई, तो ये खानाबदोश दुनिया भर न मार-मार फिरते हैं और जहाँ कहीं भी इन्हें ये गुप्त शब्द मिनते हैं वे याद कर लेते हैं । जब वे सब शब्द याद कर लें तो फिर सभी को इसकी खबर

हो जायगी ।”

“वह कैसे ?”

उमने अविश्वाम मे मुझे सिर मे पाव तक गीर मे देखा और कुछ नाराजगी के स्वर में कहा

“कैसे, कैसे ! तुम खुद भी तो जानते हो ।”

“भई धर्म-ईमान मे कहता हू मुझे कुछ भी तो नहीं मालूम ।”

“अच्छा, अच्छा ।” वह जाने के लिए मुड़ते हुए गुरिया, “बस वनी नही ।”

जोर एक रोज सुबह आतेम दीडा-दीडा मेरे पास आया । वह बड़ा ही गज था, उसकी मांस फूली हुई थी । हापते हुए बोला

“प्रउपडिये मैंने भी अपने आप एक पद रचा है, मचमुच रचा है ।”

“अच्छा ?”

‘म भट मान ना जो चोर की मजा सो मेरी । गायद मैंने अपने मे दना था मरि कि म साकर उठा जोर लो पद तैयार । मेरे दिमाग मे रिमो पडिअ पडिअ की तरह लगा रहा है चक्कर । जो मुनी ।”

उस वन पर लड़ रहा उमने उठे जोरदार प्रदाज मे लड़िनि गडिस्ना-गडिस्ना गनगनात हुए पडता शुभ किना

हा रहा है गक दीरिया म प्रह रगी आफलाव

तानता म डरने जाता है अब उमता गदाव

गार गडरिया अपन गवन का मभाव चल पाउ

गार प्रह पाव

उसो प्रह कविता तैनी रही ?”

उमने बच गी म उत की गार देखा, उमहा चटका पीता हा मपु म । हा उ चदा चदा कर चह बासागी गार मायगी त माय जान मप- गन वना । रिम उमर टुडि-मनर तरे जाय हा मुह मर । गार उम

घबराहट से तग आकर हाथ हिलाते हुए कहा

‘भूल गया, मारो गोली । विल्कुल ही याद नहीं रहा ।’

और बेचारे की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे—उसकी बड़ी-बड़ी आँखों से आँसुओं की सरिता—सी बहने लगी । उमका भयभीत, मुझिया हुआ चेहरा भाँवका—सा हो गया था । और उसने सीने के ऊपर मे दिल को सहलाते हुए अपराधी की नाई कहा

‘देखो तो, च च कितना अच्छा पद था दिल को लगता था हाय तुम समझते हो मैं मजाक कर रहा हूँ ?’

सिर झुकाये वह एक कोने की ओर चल दिया और वही कधे व कमर झुकाये खड़ा रहा । फिर चुपचाप अपना काम करने चला गया । सारा दिन वह खोया-खोया और उदास रहा । और शाम को शराब इतनी पी, इतनी पी कि वदमस्त होगया और वात-वात पर लड़ने-मरने को तैयार होगया । चीख कर बोला

‘कहाँ है याशका, ? क्या होगया मेरे छोटे भाई ? अरे भगवान तुम्हे समझे ’

कारीगर उसे खूब पीटना चाहत थे लेकिन बजारे ने उसका पन्न लिया और हमने वदमस्त आर्तम को बोरियो मे लपेट कर सुला दिया ।

सपने में जो पद उसके मस्तिष्क मे आये थे वे उसे फिर कभी याद न आये ।

बेकरा और हमारे मालिक के कमरे के दरम्यान लकड़ी के पतले-पतले तख्तों की एक दीवार थी जिन पर कागज चटा हुआ था और

अक्सर जब मैं जाँ जोर से पढ़ना शुरू कर देता तो मालिक तानों की शीशर पर जोर से मुझका रसीद करके मुझे भी चाका देता जोर भीगरी का भी । मेरा नानी चपचाप सोने चने जाने । उछलने-कूदने कीगर चटे हुए कागत में नमरात रहते ओर म अकेला रह जाता ।

लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता कि हमारा मातृक अचानक बार ब्रे पात्र चामोनी के साथ काते बादल के एक टुकड़े की तरह वैरना हुआ दरवाने में दाखिल होता ओर जिना जागा कि इमारे करमट में न चडा हाता ओर दात कटकटा कर कहता

जागी-जागी रात तक गडे रहो कमरानो ! ओर मुग्रह न जाने तब तक पर चरिटे चैने रहना ।'

तब पास्ता भार हमरे चोषा के लिए था । मक पर वह जो गुराना अरे जाये त रात का गाण्डिया फिर जन्म करदी तुमने ? देगो तो मुझसे लिगात मुझ-मुझ कर उनके दिमाग गरात्र न हा जाय ओर जत तामरना पर उतर जाय ता कही तुम्ह ही सयस पहच अपना विशास र जाता ।"

इ तब यह एक उदासीन डग म रहता-महा दिगात्र के लिए । न-विदि दिगार विदिग हरा के लिए नहीं । यह चद भी हमारे पास कर्ज पर चद जाता ओर वातावरणी त कल्या

हता कदा मैं भी गया तु । आदिमक भी कुछ जात जा तब ।

जाता ।

और कभी ऐसा होता कि वह वकी हुई गमगीन आवाज में यह कहता हुआ हमारे साथ शामिल हो जाता ।

“अरे लडकी, नींद नहीं आती चूहे खडबड-खडबड कर रहे हैं, कमवस्त ! बाहर बर्फ चुरचुरा रही है ।—लानत हो इन विद्यार्थियों पर, मटरास्त करते फिर रहे हैं ।—दुकान के अंदर-बाहर लडकियाँ—ही—लडकियाँ हैं । अन्दर आती हैं आग सेकने वेश्याए कहीं की ! तीन कोपेक की एक खरीदी और आध घण्टे तक आग तापने को अन्दर ही दहलती फिरो ।’

बस फिर क्या था हमारे मालिक की फनसफावाजी शुरू होजाती ।

सब ऐसे ही होते हैं दो कुछ नहीं और लो सब कुछ । तुम भी—तुम लोग भी बस इन फिज़ में रहते हो कि कोई आसान-सा काम मिल जाय । बस यही तुम्हें आता है । जितनी जल्दी हो सके काम छोड़-छाड़ चल दो । और खाक छानते फिरा गली कचो की ! ”

पाशका च्कि कारखाने का मरदार या इसलिये यह बात उने काट की तरह च्भती और वह तडप उठता, फिर स्वामरवाह की वहन छिट जाती

तुम अब भी सन्तुष्ट नहीं हो, वासिली सेम्योनिच ! अब भी हम जिन्नात की तरह काम करते हैं, ससभे ! हाँ, यह सम्भव है कि जब तुम स्वयं काम करते थे तब वंसा ही ”

हमारा आका भूली-बिसरी बातों का स्मरण पसन्द नहीं करता था । जोड़ी देर तक तो वह नानवाई की दाने खामोशी से मुनता रहा, उनमें हँठ भिन्न गये और मँजरी आख कठोरता से उठे घ्रती रही फिर उमका मेटक-जैसा मुँह खुला आर अनुनामिक ध्वनि में उमका भाषण उमड पडा

“वर्ती ताहि विमार दे आगे की सुन ले । पहले की पहने मे रही,
तो में तुम्हारा आका ह और जो मुझे नचे, कर सकता ह—कानून
क तुम्ह मेरी आज्ञा का पालन करना पडगा ममके ? हा बडबडिये
पडे जाओ ।”

एक दिन मैंने 'डाकू बन्धु' शीपक कविता पडी । सपने यह कविता
पमन्द की और उमने रम लिया । यहा तक कि हमारे मातिक ने भी
विचार-मग्न होकर सिर हिलाते हुए कहा

‘ऐसा हुआ होगा क्यों नहीं ? हो सकता था ऐसा । इमान मत्र
हुउ हो सकता ह सत्र कुछ ।”

पत्रारे ने नाक-भो मिहोडी और सिगरेट अपनी उगलिया मे दवा
तर उन पर जोर म फर मारी और आर्तेम एक हल्की-सी मुस्कराहट
क साथ कविता के कण्ठाय करने के लिए सनेष्ट था ।

भाई मेरा जोर म ! तम ये फलत दो ही जने
जोर न था प्रचपन राशी मे पुर अपने लिए
शा सुता न दर क अन्दर क पडे का पर रहा था, जोर वही परते
रूप मी म

मुक्त डाल अन्धरी कविता जानी है । ”

र-श ता फिर मुन तम भी ।” हमारे मातिक न रात्र दी जोर
पनात विन्म के अन्ध रात्र पर टाटी समाकर व्यग्रपूर्ण ढग म आन-
मन क कर फटा । आगिप डाना पत्रा गया कि उन ही गदन तक लान
श पडे जोर उनके जान फुरेरिया नन लग ।

मुक्त रात्र नही जा रही अत्र ”

‘अत्र पना, अत्र ना दरा ।” पत्रारे न पड अताटे, “काई तुम्हारी
उत्रान नही पन्डे ने रहा ।”

अत्र न आगिप रा विअया

अत्र न ना ? ता आज्ञा फिर मुना मना ना । मीन क का म

ली । ”

शातुनोव ने लाचारी और अपराधी की-सी निगाहों से मेरी ओर देखा, फिर मालिक की ओर, और एक गहरी सास ली ।

“अच्छा तो सुनो ।”

अब भी तँदूर की खोह में घूरते हुए—जहाँ डबलरोटी के टूटे हुए साँचे, लकड़ियाँ और झाड़ुएँ विखरी पड़ी थी और जो एक ऐसे अधखुले काले मुँह की भाँति दिखाई दे रहा था जिसमें बिना चवाया हुआ ग्रास पड़ा हो । उसने अपनी भारी आवाज में गाना आरम्भ किया

बोला के करीब एक रहजन
झड़ियों में पड़ा था खस्तातन
उसके सीने पर था जल्म कारी
और हगामे मौत था तारी
आखीरी वक्त में दुआ के लिए
जल्म अपना दवा के हाथों से
पहले घुटनों के बल वह बैठ गया
गिडगिडा कर यह फिर खदा से कहा
रूह बदकार है मेरी यारव
यह गुनाहगार है तेरी यारव
तू मेरी रूह को जुदा कर दे
जिस्म की कैद से रिहा कर दे
कितनी बदकार है यह मेरी रूह
हाँ गुनाहगार है यह मेरी रूह
जबकि अह्दें शवाव था मुझ पर
मुझको अनन्ग था राहिने खुशदू
आज मैं बन गया मगर डाकू

शातुनोव गुनगुनाकर कविता पढ़ रहा था । अपनी कमर दुहरी करके

आर अपने नग पाव का अंगूठा हाथ में दबोचकर उमन अपना चेहरा छिपाया हुआ था और न जान था वह अपना पाव निरन्तर उठावता था । ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह कोई जादू कर रहा हो और मान-मान काई मंत्र पड़ता जाता हो—

कारनामो मे मरफरोशी ते
 उन्न अनी गुजार दी मेने
 जो वरादुर हो तोफ क्या जान
 मुक्तो अच्छे नगे न हगामे
 जिन्दगी काट दी ममभने मे
 मेने उस बूढ़ को परगने मे
 मुरह तस्वी की साम कर डाली
 अपी कान वगाम कर डाली
 उन्न नर योवता रहा हँ मं
 मं न पूडा रहा हँ मं
 ता वश ने सिफा मुक्त दी हँ
 मुक्त न ता वागियत हँ वरी हँ
 पात रियम क ताहफण नायात्र
 मुक्त न नगे हँ जातमतात्र
 नीरहि ता हँ निव यहादा
 नगे जात रिजम ता दिनसदा
 नाल न नगे ना गवा मुक्त म

‘ठहरो तो, वासिनी सेम्योविच !’ बजारे न उसको बात काटकर झुल्लाकर कहा, “सतम तो कर लेने दो उसे !”

परन्तु मालिक सुनी-अनसुनी करने हुए भावावेश मे कहता ही गया “यह तो विलकुल नीचता है ! तेरी आत्मा, मेरी आत्मा पहले तो खूब गुलछर्रे उडाए, फिर डर गया और हाय-तोवा करने लगा हे भगवान, हे भगवान ! भगवान का इससे क्या वास्ता ? पहले तो खूब छककर पाप किये और अब उसके परिणाम से नानी मरती है ! ”

उसने जम्हाई ली और मैं समझता हूँ, जान-बूझकर ली । फिर भर्राई हुई आवाज मे कहा

‘आत्मा, आत्मा ! और ह नही कौडी वरावर महत्व की !’

वर्ष का तूफान खिडकी के शीशे को अपन कुत्प पजो से खुरच रहा था । मानिक ने खिडकी को कनखियो से देखा और फिर एक ही साँस में कहना शुरू किया

“मुझसे प्यो तो जो व्यक्ति अपनी आत्मा की वड हाँकता है, उसे जरा भी अयत नही है । उससे कहा अच्छा भई, तुम्हे यह काम इस तरह करना चाहिए और वह कहता है मेरी आत्मा ने इसकी अनुमति नही दी ।—अन्त वरण कहो या कुछ और जब तक कोई किनी काम के करने से भेषता रहे उनका फत एक ही जैसा होता ह, उसे आत्मा कहो या अन्त करण । कोई समझता है कि हर चीज निपिट है । वह जाता है और साथ वन जाता है । कोई और व्यक्ति है जो समझता है कि कोई वस्तु निपिट नही है—वह डक वन जाता है । ये दो प्रकार के मनुष्य हैं, एक प्रकार के नही । और उन्हें एक इमरे के साथ गडबड नही करना चाहिए । जो काम करने का है वह तो करना ही होगा । और जब कोई काम करना ही है तो अन्त वरण तन्द्र मे जाकर ही छिप जायगा और आत्मा पडोसिन से मिलने वगी जाएगी ।”

बहुत बेडगेपन से उमने अपनी टांगे घसीटी और खडे होकर किसी पर नजर डाले वगैर ही अपने कमरे में चला गया ।

‘अच्छा, अब जाओ सो रहो । बैठे हुए उपदेश दे रहे हो, हह ! आत्मा ! भावान से पायना करना बड़ी साधारण बात है और डाह बन जाना बड़ी बहादुरी नहीं है, हरगिज नहीं । अरे मर्खा ! कुछ काम करो काम ! हाँ ॥’

क्लवाड बन्द करते जब वह चला गया तो बजारे ने शातुनोव के कुहनी मारते हुए कहा

‘हा तो फिर आगे सुनाओ वह गीत ॥’

शामिप ने अपना सिर उठाया, एक सिरे से दूसरे सिरे तक सत्र पर डूँड रोडाई जोर फिर दूजे स्वर मे कहा

‘क्या है यह ॥’

‘हो ! इमारा मातिका ॥’

‘अ, आन्वा वा है उसके भी । लेकिन उसे सुख-चैन नसीब नहीं है । नून नम मा एम है ॥’

‘अमा हम का मरज ? तुम कहो क्या कहत हा ?’

शामिप उमरा गया वह तन्दूर मे स रगता हुआ निकला जोर अपने अन्त-मिग हा कटका दहर आला

‘मे ना नम ही गया ॥’

‘अ-अ, अम कड मत आवा ॥’

‘नही, नही अन्तम मे मुक नीद जा रही है ॥’

‘अर तुम्हारी मद हस्त ही काशिश ना करा ॥’

‘नही, अब ना नीद बना रही है ॥’

अम दन्दर न नम मिट्टी न शिप गया, हू लीयो आता मे मना

‘अरे न देना ! यह हिन्दी मे वडी मृनोवन हा है मनाये ॥’

“वास्तव में ?” आर्तम वडवडाया । “और हमें पता ही नहीं—
धन्यवाद !”

वजारे ने वडी सफाई से अपने लिए एक सिगरेट बनाई और
ओसिय की परछाई प्रंधेरे में लुप्त होती देखते हुए सरगोशी के अन्दाज
में कहा

‘इस आदमी का दिमाग कुछ कमजोर मालूम होता है ।’

फरवरी का बर्फानी तूफान आया हुआ था, हवा चिघाड रही थी,
खिडकियाँ तिर पीट रही थी, धुँआकश में तेज हवा घुसकर नीटिया
वजाने लगती थी । बेकरी के निविड अन्धकार में तन का टिमटिमाता
लैम्प रोशनी पैदा करने की असफल चेष्टा कर रहा था और अपेरा
काँपता हुआ नजर आ रहा था । सर्द हवा की लहरे कहीं ने बराबर
अन्दर आ रही थी और टागें ठण्डी बर्फ हुई जा रही थी । मैं आटा गूध
रहा था और मालिक नाँद के पास आट के एक बोरे पर बैठा कह रहा
था

‘जब तक तुम जवान हो, हर बात पर गौर करो । जब तक कोई
पेशा-विशेष न अपना लिया हो, हर प्रकार के काम के बारे में सोचो ।
हर पहलू पर दृष्टपात करो । शायद कोई ऐसा काम सूक्त जाए जो
तुम्हारे लिए उचित हो । बस जरा सोचलो—ऐसी कोई जल्दी नहीं
है ।’

बोरे पर बैठे हुए उसने अपने घुटने फैला रखे थे । एक पर उसने
शराब का एक कन्स्टर टिकाया हुआ था, और दूसरे पर गदनी शराब

बहुत बेढगेपन से उसने अपनी टांगें घसीटी और खड़े होकर किसी पर नजर डाले बगैर ही अपने कमरे में चला गया ।

“अच्छा, अब जाओ सो रहो । बैठे हुए उपदेश दे रहे हो, हूह ! आत्मा ! भगवान से प्रार्थना करना बड़ी साधारण बात है और डाकू बन जाना बड़ी बहादुरी नहीं है, हरगिज नहीं । अरे मूर्खों ! कुछ काम करो काम ! हाँ ! !”

किवाड वन्द करके जब वह चला गया तो बजारे ने शातुनोव के कुहनी मारते हुए कहा

“हाँ तो फिर आगे सुनाओ वह गीत !”

ओसिप ने अपना सिर उठाया, एक सिर से दूसरे सिर तक सब पर दृष्टि दौड़ाई और फिर दवे स्वर में कहा

“भूठा है वह !”

“कौन, हमारा मालिक ?”

“हाँ, आत्मा तो है उसके भी । लेकिन उसे सुख-चैन नसीब नहीं है । मुझे खूब मालूम है !”

“उससे हमें क्या गरज ? तुम कहो क्या कहते हो ?”

ओसिप घबरा गया, वह तन्दूर में से रेंगता हुआ निकला और अपने बड़े-से सिर को झटका देकर बोला

“मैं तो भूल ही गया !”

“अच्छा, अब झूठ मत बोलो !”

“नहीं, नहीं वास्तव में मुझे नीद आ रही है ।”

“अरे तुम्हारी याद करने की कोशिश तो करो !”

“नहीं, अब तो नीद सता रही है ।”

अब अंधेरे में वह विल्कुल छिप गया, हल्की-सी आवाज में बोला

“अरे भाईयो ! यह जिन्दगी भी बड़ी मुसीबत की है हमारी !”

“वास्तव में ?” आर्तम वडबडाया । “और हमें पता ही नहीं—
धन्यवाद ।’

वजारे ने वडी सफाई से अपने लिए एक सिगरेट बनाई और
ओसिय की परछाई अंधेरे में लुप्त होती देखते हुए सरगोशी के जन्दाज
में कहा

“इस आदमी का दिमाग कुछ कमजोर मालूम होता है ।’

फरवरी का बर्फानी तूफान आया हुआ था, हवा चिघाड रही थी,
खिडकियाँ सिर पीट रही थी, धुँआकश में तेज हवा घुसकर सीटिया
वजाने लगती थी । बेकरी के निविड अन्धकार में तेल का टिमटिमाता
लैम्प रोशनी पैदा करने की असफल चेष्टा कर रहा था और अग्रा
कांपना हुआ नजर आ रहा था । सर्द हवा की लहरे कहीं से बराबर
अन्दर आ रही थी और टागें ठण्डी बफ हुई जा रही थी । मैं आटा गव
रहा था और मालिक नौद के पास आट के एक बोरे पर बैठा कह रहा
था

“जब तक तुम जवान हो, हर बात पर गौर करो । जब तक कोई
पेशा-विशेष न अपना लिया हो, हर प्रकार के काम के बारे में सोचा ।
हर पहलू पर दृष्टिपात करो । शायद कोई ऐसा काम चुन जाए जो
तुम्हारे लिए उचित हो । उस जरा सोचलो—ऐसी कोई जल्दी नहीं
है ।”

बोरे पर बैठे हुए उसने अपने घुटने फैला रखे थे । एक पर उसने
शराब का एक कन्स्टर टिकाया हुआ था, और दूसरे पर गदती गरम

से आवा भरना हुआ एक गिलाम मँले-कूचैले फर्श पर झुके हुए उसके वेडोल चेहरे पर मैं कभी-कभी चुपके में घूर कर देख नेता और जलकर दिल-ही-दिल में सोचता

“गुरु-आव ग्लाम मुझे भी दे दे ।”

उमो मर उठाया, बाहर की चिंघाटे गीर से मुनी और वीमी आगज में पूछा

‘ क्या तुम अनाथ हो ?’

‘ यह तो पहले भी पूछ चुके हो मुझ ।’

‘ भगवान कसम, कितनी ककश आवाज है तुम्हारी ।’ उमने एक ठण्डी साँस भरके और अपने सिर को झटका देते हुए कहा, ‘ आवाज तो है ही, तुम्हारी बात भी ।’

काम समाप्त कर चुकने के बाद, मैं अपन हाथों में चिपका हुआ सूखा आटा खुरच कर साफ कर रहा था । होठ चाटते हुए उसने शराप पीकर ग्लास खाली किया और दोबारा भरकर मेरी ओर बढ़ाया ।

“ली, पियो ।”

“शुक्रिया ।”

“हाँ, हाँ लो, पियो । मैं झट से बता सकता हूँ कि काम करना कौन आदमी जानता है । और ऐसे आदमी की गलतियों को मैं अनजर अनदेखा कर जाता हूँ । अब मसलन याशका ही को ले लो । वह मूख भी है और चोर भी । लेकिन फिर भी मैं उनका आदर करता हूँ । उसे अपने काम से शौक है । शहर में उससे अच्छा नाई कहीं नहीं मिलेगा । जो शरस काम करना पसन्द करता है, जिन्दगी में उसके लिए रियायत करना और मरने के बाद उसका सम्मान करना हमारा कर्तव्य होजाता है । निश्चय ही ।”

नाँद को ढँक कर मैं आग सुलगाने चला गया । मेरा मालिक कराहता हुआ उठा और एक भूरी गेद की तरह लुढ़कता हुआ चुपचाप मेरे

पास आया और बोला

“जब कोई आदमी अच्छा काम कर रहा हो तो उसके अनेक दोष व त्रुटियाँ क्षम्य हैं। उसके अवगुण उसकी मृत्यु के साथ समाप्त हो जाएंगे किन्तु उसके गुण जीवित रहेगें।”

तद्दूर में टांगे लटकाते हुए वह धम्म से जमीन पर बैठ गया, शराब का कनस्टर अपनी बाजू में रख लिया, आग को देखने के लिए झुका और देखकर बोला

“लकड़ियाँ काफी नहीं हैं। देखो तो जरा।”

‘बहुत हैं, सूखी बँने हैं और फिर आधी उसमें चीड़ की है।’

“हैं उख।”

वह धीरे से कहकहा मारकर हँसने लगा और मेरे कंधे पर हाथ मारते हुए बोला, “बड़े होशियार हो। यह न समझना कि मैंने यह देना नहीं चा। बहुत काफी हैं लकड़ियाँ। हर चीज पर नजर रखनी पड़ती है। लकड़ी और आटा, और बाकी सब कुछ।”

“और आदमी की नहीं ?”

‘आदमी की बात भी बताऊँगा, घबराओ नहीं। मेरी बातें तब गौर से सुनो, तुम्हें कोई खराब बात नहीं सिखाऊँगा।’

अपने नीचे पर हाथ मारते हुए, जो उसकी तोड़ की तरह फटा हुआ और मोटा था, उसने कहा

‘मैं अन्दर से अच्छा आदमी हूँ। मेरे सीने में भी दिल है। ऐसी बातें समझने के लिए अभी तुम बच्चे हो, और बेवकफ भी। लेकिन फिर भी अच्छा है कि ये बातें तुम्हारे कान में पड़ जाएँ। जार मुन मेरे भाई, आदमी जो है ना वह किसी मैनिक की पत्नी या बहन नहीं है। आदमी विविध प्रकार से चमकता है। और हा यह तुम्हारा मुँह तो उतरा हुआ है।’

बात दरअन्त यह है कि मुझे नींद आ रही है और मुन का

नही देते । वडी दिलचस्प होती है तुम्हारी बातें भी ।”

“अगर दिलचस्प है तो फिर मत सोओ । जब मालिक वन जाओगे तो बहुत समय मिला करेगा नोने के लिए ।”

उसने एक ठण्डी साँस भरी और कहा

“नही, तुम मालिक नहीं बनोगे कभी । तुम हरगिज व्यापार नहीं करोगे । आवश्यकता से अधिक वाचाल होना । बातों-बातों ही में तुम अपने आप को समाप्त कर लोगे । और यो ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा तुम्हारा सारा जीवन । किसी को तुमसे कोई लाभ न होगा ।”

अचानक उसने एक जोर की साँस खींचते हुए एक बहुत गद्दी गालो दी । उसके चेहरे का माँस इस प्रकार थिरक रहा था जैसे फालूदे के भरे हुए प्याले को किसी ने जोर से हिला दिया हो । और गुत्से की एक रौ उसके जिस्म में दौड़ गई, उसका चेहरा और गर्दन सुर्ख हो गए और आँखों की पुतलियाँ भयानक रूप धारण करके उबल पडी । हमारा मालिक वासिली सेम्योनोव धीरे-धीरे और कुछ विलक्षण ढग से हुंकार रहा था । मानो बाहर जो बर्फानी तूफान आ रहे भर रहा था और जिमक साथ सारी धरती बड़े दयनीय ढग से आँसु बहाती प्रतीत हो रही थी वह उसकी नकल कर रहा हो ।

“अरे गोली मारो इसे ! काश मेरे पास अच्छे विश्वासपात्र आदमी होते ! फिर मैं तुम्हे दिखाता कि कारोबार किमे कहते हैं । सारा जिला, और वोल्गा का पूरा इलाका दाँतो तले उँगली दवाता ! लेकिन ऐसे लोग मिलते ही नहीं । सबके सब गरीबी के कारण या अपनी व्यक्तिगत निर्वलता के कारण शराबी बन गए हैं । और अधिकारी लोग, वे मर-दूद अफसर धिक है उन पर ”

उसने अपनी गठीली कलाइयों की मुठ्ठियाँ मझ पर तान कर उगलियाँ खोली और हवा में इस तरह पजे चलाए जैसे वह किमी के जाल पकडकर उसे नोच-खसोट रहा हो । और इसी दौरान मे वह भूखे शेर

की नाई गुरा-गुरा कर और मुंह से भाग छोड़ते हुए बोलता रहा

“बचपन ही से देखना चाहिए कि किसी की पसन्द और रुचि क्या है यह नहीं कि किसी भी पुराने काम पर अंधाधुंध लगा दिया। इसी का तो यह नतीजा है कि आज कोई व्यक्ति सौदागर है तो कल वही भिखारी बन गया। आज नानवाई है तो एक सप्ताह बाद उसे किमी के यहाँ लकड़ियाँ चीरते हुए पाया। स्कूल खोले और हर ऐरे-गैरे-नत्-खूँगे को घेरकर वहाँ ले गए कि जाओ पढो। हरेक को एक ही लाठी से हाँकना शुरू कर दिया। हर आदमी को मौका देना चाहिए कि वह अपना रुझान खद मालूम करे।”

उसने मेरा वाज् दबोच कर अपनी ओर घसीटा और बड़ी भयानक सिनियाती हुई आवाज में कहता रहा

“यही तुम सोच रहे होगे और इसी की वाने कर रहे होगे कि हरेक को ऐसी जिदगी बसर करने पर मजबूर किया जाना है जो उनको नाप-सद हो वल्कि इस तरह की जैसी कि बसर करने का उनके अफसर हुअन दें। आखिर हुअन देने का अधिका कितको है ? उने जो काम कर रहा हो। यानी मुझे हुअन देने का हक है। मैं खब समझ मकता हूँ कि कौन किस काम के लिए उचित है।”

फिर मुझे धक्का देते हुए उसन अपनी बवसी प्रकट करने हुए हाथ हिलाया।

“लोगो के व्यक्तिगत मामलो ने अधिकारीगण यदि हस्तक्षेप करेगे तो उससे कोई फायदा नहीं होगा। कोई काम नहीं चलेगा। मन्ने अच्छा तो यह है कि सारे बखेडे को तात मारकर जाल में निअर जाओ। नव कुछ छोड कर भाग जाओ।

अपने गोल-मटोल जिस्म को इधर-उधर नृताने हुए उनने नी-धीरे और चवा-चवाकर कहना शुरू किया

‘एक आदमी तक नहीं मिलता। सब चापलन आर जी हन् रो

करने वाले हैं, किसी में जरा भी हिम्मत नहीं। जाने के लिए कहो तो वह गया और रुकने को कहो तो फौरन रुक गया। ठीक वैसे ही जैसे रगहट करते हैं। और जब कोई शरारत करने की सूझती है तब भी रगहटों की-सी हरकत करते हैं और असल में डममे मिलता मिलाता खाक नहीं। और सब कहता हूँ मैं तुमसे भगवान आसमान पर बैठ-बैठा यह सब भगडे-टण्ट देखता रहता है और आप ही आप सोना करता है—अरे मूर्खा ! भर पाया मैं तुमसे ! दुनिया के किसी मसरफ के भी नहीं हो तुम ।”

‘तो तुम अपने आप को दुनिया के किसी मसरफ का नहीं समझते क्यों ?”

अब भी वह पहले की तरह अपने शरीर को झुलाता रहा और फौरन जवाब न दिया।

“मेरे मेरे वारे मे कह रहे हो तुम हर चिंगारी तो ज्वाला नहीं बन जाती, सम्भव है कि करध्वे में चमक कर रह जाये। मुझे कहते हो तुम, मैं तो चालीस से कुछ ही ऊपर हूँगा और जल्दी ही शराब की लत मेरा काम तमाम कर देगी। और शराब की लत पडती है जिन्दगी का उलझनो और परेशानियों से। और परेशानियाँ अब देखो क्या मैं सिर्फ इसी काम के लायक हूँ ? मैं तो दस हजार आदमियों के किसी कारोवार को चताने की योग्यता रखता हूँ। और यदि ऐसा हो जाता तो मेरा सारा काम इस ख्वसूरती के साथ चलता कि देश के सारे बड़े-बड़े गवर्नर हक्का-वक्का रह जाते ।”

उमने शान में आकर अपनी मँजरी आँख चमकाई और फुल्ली आँख मलिनता से आग के शोलो को घूरती रही। फिर उसने अपने हाथ तेर्जा से जागे को पकते हुए कहा

“क्या महत्व है इसका मेरे लिए ? इसमें अधिक उपयोगी तो नृदेदान होता है। एक आधे दर्जन आदमी दो मुझे—ईमानदार आदमी।

इच्छा, चलो ईमानदार न सही चोर-चालाक तो हो। और मैं तुम्हें दिखा दूंगा कि क्या है मैं। और काम? अरे ऐसा शानदार कारोबार कायम करूँ कि जो देखे चकरा जाए। और फिर काम भी ऐसा-वैसा नहीं, जोखदार।”

थक-हारकर वह उस गद्दे फर्श पर ही लेट गया। उसने एक लम्बी अँगड़ाई ली और नाक से सू-सू करते हुए, अपने पाँव तेंदूर के मुह में लटका दिये जो भडकते-लपकते धोलो की रोशनी से दमक रहा था।

औरते भी।” वह सहसा गुरीया।

‘औरतो का क्या जिक्र?’

कोई एकाध मिनट तक छत को घूरते रहने के बाद मालिक निन्तनाह व उदासी नरे स्वर में कहते हुए बैठ गया

‘काश स्त्री बस यह समझले कि पुरुष किस तरह उनके बिना एक तदम नहीं बट सकता। कारोवार में वे जितनी बड़ी भूमिका अदा कर सकती हैं यह वे समझ ही नहीं सकती। कोई प्रेचारा अकेला है। यह तो भेड़िये का-सा जीवन हुआ न। जाडा हो, अघियारी रात हो, राग हो और वर्ष गिर रही हो पर वह एक भेड़ जट्टर हजम कर पाया। लेकिन फिर? क्या फायदा हुआ? पेट भर लेने पर भी उनकी हागत वही दयनीय बनी रही। वह बैठकर मनहस आवाज में राजेगा, अपनी तकदीर को कोसेगा।’

नदी से उनके शरीर में भरभरी पंदा हुई, उनको नट न - न अन्दर भाजा। घूर कर नेरी ओर। फर फौन ही नागिनी की भी - न दार आवाज बना कर गुरीया

कोयले झाडो, खडे देख क्या रहे हो? खडे-खडे जान फाँट - हो?’

तदूर में से उठकर वह उपर आया - नदी दे - न नदी से वाहन देखता और अपनी पनपिता सुनाता था। नदी - न नदी

सफेद भँवर पटाख-पटाख की आवाज निकाल रहे थे। दीवार पर लगे हुए लैम्प की लौ, धुँए में भरी चिमनी में विल्कुल ही छिप-सी गई थी। और वहाँ में लौ के भडकने और चटवने की आवाज आ रही थी।

मालिक 'हे भगवान, हे भगवान !' बड़बड़ाता हुआ, भारी-भारी कदमों से विस्कुटों की बेकरी में चला गया और जाते हुए वह ऐसा लगा मानो अघकारपूर्ण मेहराब ने उसे निगल लिया हो। जब वह चला गया तो मैंने तँदूर में डबन रोटियाँ जमाना शुरु की और फिर ऊँचते-ऊँचते सो गया।

“देखो दिन चढ़े तक मत सोते रहना।” मेरे मिर के ठीक ऊपर से किसी की जानी-पहचानी आवाज आई।

मालिक पीठ पर अपने हाथ बांधे खड़ा था। उमका चेहरा तर या और कमीस सीली हुई।

“बड़ी बर्फ पड़ रही है। ढेर-कै-ढेर लगे हुए हैं। सारा आगन बर्फ से पटा पड़ा है।”

उसने अपने होठ फैला कर लटका लिए और कुछ देर योही चुपचाप खड़ा मेरा मुँह चिढ़ाता रहा। फिर आहिस्ता से बोला

“एक दिन ऐसा आएगा कि ऐसी ही बर्फ-बारी पूरे हफ्ते, पूरे महीने सारे जाड़ो और सारी गर्मियों होती रहेगी। और धरती की हर चीज उसके नीचे दब जायगी। बेलचों से बर्फ कितनी ही क्यों न हटाओ कुछ भी फायदा न होगा। हाँ हा, सयाल कुछ बुरा नहीं है। तमाम नेबकूफों का एकदम खात्मा हो जायगा।”

भ्रमता-भ्रामता वह दीवार के पास पहुँच कर कुछ हिचकिचाया और फिर अंधेरे में गायब हो गया।

हर रोज सुबह पौ फटने ही ताजा डबल रोटियो की एक टोकरी लेकर मुझे कारखाने की एक और दुकान पर जाना पड़ता था। और मालिक की तीनो रखेलो से मेरी जान-पहचान हो गई थी।

उनमें से एक नौजवान, घुँघरियाले वालो और भरे जिस्म वाली दर्जन थी जो एक औसत दर्जे का चुस्त व सफेद गाउन पहने रहती थी। सप्ताह को वह अपनी मुर्दा मलिन और खाली-खाली, निराशामय आँखों से देना करती थी। और उसके पीले चेहरे पर वैधव्य का-सा गम छाया रहता था। मालिक के पीठ पीछे भी वह उसका जिक्र बड़े डरते-डरते और दबी हुई आवाज में करती थी, उसका नाम और प्यार का नाम लेकर याद करती। और जो चीजे मैं लेकर जाता उन्हें वह एक अजीब धवराहट के साथ लेती और जाँचती, मानो वह कोई चोरी का माल ले रही हो।

‘हय कितनी प्यारी-प्यारी डबलरोटियाँ हैं ? नन्ही-नन्ही !’ वह बड़ी मधुर आवाज में कहा करती।

दूसरी एक ऊँची, साफ-सुथरी, कोई तीस वर्षीय स्त्री थी—देखने में बहुत स्वस्थ व हृष्ट-पुष्ट तथा नेक नजर आती थी। उसकी चमकीली आँखें सदा झुकी रहनी थी और उसकी वाणी में बड़ा माधुर्य व विनम्रता थी। चीजे वसूल करते समय गिनती में वह मुझे टाने की कोशिश किया करती थी और मुझे पूरा विश्वास था कि एक न-एक दिन यह स्त्री अपने दुबले-पतले और प्रकट रूप में ठण्डे जिन्म पर जरूर कैदियों के धारीदार कपड़े पहनेगी। जेलखाने का सफेद रंग का लबादा उसके कंधों पर होगा और बालों पर सफेद ब्रह्मान बंधा होगा।

उन दोनों को देखकर घृणा का एक तूफान मेरे दिल में उमड़ पड़ता जो किसी हाल रोकने न रकता था। और मैं हमेशा यह काशिय

किया करता था कि मैं तीमरी औरत के पास ममान लेकर जाया करूँ।
उमकी हूकान आम रास्ते से जरा ज्यादा हटकर थी। और इन अजीब
औरत के पास जाने का सुखद अवसर हमरे लडके मुझे खुशी में दे दिया
करते थे।

उसका नाम सोफिया पनाखिना था, शरीर भारी और गान गुनाल
के से थे। और कुल मित्नाकर वह एक विलक्षण-मी ब्रेडोन औरत थी
मानो किसी ने इधर-उधर में बच्चे-खुचे टुकड़े जमा करके और जल्दी-
जल्दी में जोड़-जाड़ कर उसे घड दिया हो। उसके बात लहरिये और
भ्रवरे थे, काले भवर जैसे, जैसे किसी यहूदन के डे और वे हमेशा
उलझे रहते थे। फूले हुए गुलामी गातो के बीच में तोते की चोच की
तरह खमदार नाक थी और आँखें भी असाधारण रूप में सुंदर थीं।
गहरी, सुर्खी मायल, वादामा रंग की पुतलिया माफ-शफफाक डेलो पर
अजीब तरह से तैरती हुई नजर आती थी। और उनमें बच्चो की सी
मस्ती-भरी चमक थी। उसका मुँह भी बच्चो का-सा ही था—छोटा-
सा और सिकुड़ा हुआ। और उसकी ठोस मोटी ठोड़ी एक हृष्ट पुष्ट स्त्री
की वदनुमा, उभरी हुई छातियो पर धरी रहती थी। अपने फूहडपन के
कारण वह सदा एक मैला-कुचैला, वदबूदार ब्लाउज पहने मिलती थी
जिममें एक बटन भी न होता था। नगी टांगे और पैर में स्लीपर।
देखने में वह तीस वर्ष की स्त्री मालूम होती थी। हालाकि वह थी केवल
अठारह वर्ष की। जैसा कि उमने मुझे अपनी टूटी-फूटी रूसी भाषा में
बताया था। उसे यहाँ एक जनाय ममभ कर नैरोन्स्क से लाया गया
था और उमके मालिक ने उमे वेग्यालय में पहुँचा दिया था जहाँ से उनने
अपना रास्ता तालाश कर लिया। वह नहा करती

“ऐसा हुआ कि जिमकी कोख में मैं पैदा हुआ थी वह मेरा मा मर
गया, और बाबा एक जर्मन औरत से सादी कर लिया और वह भी मर
गया। उमर जर्मन औरत एकजमन मद रके साथ सादी कर लिया।

इस तरह मेरा एक आर माँ और एक और बाबा हो गया। पर उन दोनों में से मेरा कोई भी नहीं। वो दोनों खूब दारू पीता था। अब मेरा उमर तेरह वर्ष का हो गया और वह जर्मन मरद ने मुझे सताना शुरू करा इस वास्ते कि मैं शुरु से मोटा थी। वह मुझे खूब मारता, पीठ पर घुसे लगाता फिर वो मेरे साथ रहने लगा और मेरा पेट रह गया। फिर तो वो सब धवरा गया और घर छोड़कर भाग गया। सब कुछ खतम हो गया और कर्जे मे घर बेच दिया और मैं उस औरत के साथ जहाज में बैठकर यहाँ आया पेट गिरवाने। फिर मैं ठीक हो गई और उन लोग मुझे एक रण्डी खाने में दे दिया। वो बड़ा गदा, भयकर। वस मेरे को तो जहाज में अच्छा लगता था।”

ये सब बातें उसने मुझे उस समय बताई जब हम आपस में दोस्त बन गए थे और जिस तरह हमारी दोस्ती हुई वह भी ज़ीव थी।

उसका बेजोड चेहरा, उसकी टूटी-फटी बातें, उसकी सुन्ती आँसू उसका असह्य घमण्ड और बडबडिया बातें, मुझे ये कुछ भी पसन्द नहीं आया। दूसरी बार जब मैंने सामान उसको दे दिया तो उसने कहकहा लगा कर कहा

“कल मैंने मालिक को घर से निकाल दिया और उसका मुँह नाच लिया। तुमने देखा ?”

देखा तो था मैंने। एक गाल पर तीन खुराशे पड़ी थी और दूसरे पर दो। लेकिन उससे बात करने को मेरा जी न चाहा और मैं ज़ामोत रहा।

वहरे हो तुम ?” उसने पूछा, “या गूँ हो ?”

मैंने कोई जवाब न दिया। फिर उमने मेरे मुँह पर तार से पञ्ज मारी और कहा
उल्लू !”

वम उस मरतदा सिफ इतना ही हुआ। उसके दिन अब न बचनी

टोकरी पर झुका हुआ गुश्क जोर फफूदी हुई रोटियाँ, जो चिकी नहीं थी, छांट रहा था तो वह जाकर मेरी पीठ पर सवार हो गई। उसने अपने छोटे-छोटे नर्म बाजुओं से मेरी गदन कम ली और चिल्लाई

“चट्टी दो, मुझे चट्टी।”

मुझे बड़ा तँश आया और मैंने उममे कहा, ‘मुझे छोड़ दा।’ लेकिन वह और भी बौझ डाल कर लटक गई और कहने लगी

“चलो-चलो मुझे पीठ पर लेकर चलो।”

“हट जाओ वरना मैं तुम्हें पटखी दे दगा।”

‘नहीं।’ उमने वहम शुरू की, तुम मुझे नहीं पटख सकते। मैं नारी हूँ और तुम्हें एक नारी की बात माननी चाहिए। चलो।”

उसके चिकटे हुए बालों में से तेल की ऐसी बदबू आ रही थी कि दिमाग फटा जाता था और वह खुद भी उस तेज़ और चिबटी हुई बू में बसी हुई थी। जैसे कोई पुरानी प्रिंटिंग मशीन हो।

‘मैंने एक भटका देकर उसे अपने मिर के ऊपर से इस तरह उछाला कि उसके पाँव दीवार से जाकर टकराए। उमने बच्चों की तरह आहिस्ता-आहिस्ता विमूर कर रोना और कराहना शुरू कर दिया।

मुझे उस पर तरस भी आया और अपनी उस हरकत पर शर्म भी। फर्श पर मेरी ओर पीठ किए पठी भूम-भूमकर वह अपनी चिकनी-चिकनी खुली हुई टाँगों अपने दामन में छिपा रही थी और उसकी नग्नता में कुछ ऐसी बेचारगी थी जो दिल पर असर करती थी। विशेषतया अपने नगे पाव के अँगूठों को जिम तरह बल दे रही थी क्योंकि गिरते समय उसके पाँव के स्लीपर फिमल कर गिर पड़े थे।

“मैंने पहले ही कह दिया था।” मैं गडबडा कर बडबडाया और उसे उठाकर खड़ा करने लगा। उमने मँह बनाया जोर कराहते हुए कहा

“हाय, हाय गुस्ताख लडके !

और अचानक फर्श पर जोर से पाँव पटकते हुए उसने खुशमिजाजी से कहकहा लगाते हुए कहा

“जा जहन्नुम में जा ! चल भाग यहाँ से !”

में दौड़कर बाहर गली में आगया । मुझे बड़ी शर्मिन्दगी थी और मैं अपने आपको बुरी तरह कोस रहा था । छतों के ऊपर रात का जमा हुआ मटियाला कुहरा जो बाकी वचा था वह भी पिघल गया था और धुँदली सुबह रेंगती हुई शहर पर छा रही थी । लेकिन सड़क की लालटेनो की पीली रोशनियाँ अभी गुल नहीं हुई थी और सन्नाटे पर पहरा दे रही थी ।

“सुनो !” लडकी ने सड़क की तरफ का दरवाजा खोलकर मुझे आवाज देते हुए कहा, “डरना नहीं, मैं मालिक से कुछ भी नहीं कहूँगी !”

दो दिन बाद उसके यहाँ सामान ले जाने का मुझे फिर मौका मिला । उसने बड़ी सुखद मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया, फिर एक दम किन्नी सोच में पड़ गई और पूछा

‘तुम्हे पढ़ना-लिखना आता है क्या ?’

और नकदी रखन की दराज खोलकर उसने उसमें से एक खूबसूरत बटुआ निकाला और कागज का एक पुर्जा खींच लिया ।

“इसे पढो तो जरा !”

मैंने कविता के दो पद पड़े जो बड़े सुन्दर लेखन में थे

चदा खा जाने में पिताजी हैं बड़े बदनाम

कम-से-कम भी वह चरा बैठे हैं शायद एक लाख

“उफ कँसा जानवर है !” वह चिल्लाई और कागज का पुर्जा उतने मेरे हाथ से छीन लिया । फिर जल्दी-जल्दी और गुस्ते में बहने लगी

“एक उल्लू के पट्ठे ने लिखकर दी है यह कविता । वह ह तो

बड़ा उदण्ड लेकिन अभी विद्यार्थी ही है । मुझे विद्यार्थियों से बड़ी दिल-चस्पी है । वे भी फौजी अफसरों की तरह होने हैं और वह तो मुझमें इस्क लडा रहा है । अपने बाप के बारे में ऐसी ही बातें किया करता है । उसका बाप कोई बड़ा आदमी है । बड़ा-बूढ़ा है, सीने पर तमगे लगाए कुत्ते को साथ लिए फिरा करता है । हाय हाय, मुझे कितनी घृणा होती है जब कोई बूढ़ा आदमी कुत्ते साथ लिए फिरे । कोई और नहीं मिलता उन्हें साथ ले जाने को ? इधर उसका बेटा उसे बुरा-भला कहता है, चोर कहता है यहाँ तक कि लिख भी दिया—यहाँ !”

“तुम्हें उनकी क्या परवाह ?”

‘ओह !” उसने कहा और उसकी आँखें दुखी होकर फटी-की-फटी रह गई ।’ अपने बाप को बुरा-भला न कहना चाहिए । और उसे खुद को तो देखो दुश्चरित्र स्त्रियों के साथ चाय पीने जाता है ।”

“कौन है वह ?”

“क्यों मैं जो हूँ !” उसने अचम्भे और क्रोध मिश्रित आवाज में झल्ला कर कहा । “कितने बूढ़े हो तुम ?”

एक विचित्र प्रकार की कहना चाहिए जवानी जान-पहचान हममें पैदा हो गई थी । हम हर मसले पर बातचीत करते थे । लेकिन यह बात सदिग्ध है कि हम एक-दूसरे के स्वभाव को विल्कुल समझ सके हो । कभी-कभी तो वह बड़ी गम्भीरता के साथ लडकियों की बातें बड़े राजदाराना अंदाज में मुझे बताती और आपीआप मेरी निगाहें झुक जाती और मैं सोचने लगता

“कहीं वह मुझे औरत तो नहीं समझती ?”

लेकिन असल में यह बात नहीं थी । जवसे हमारी दोस्ती हुई थी वह मेरे सामने मैली-कुचैली पोशाक में कभी न आती थी । उसके ब्लाउज के बटन लगे हुए होते, बगलों के नीचे फटी हुई आस्तीनों की

सिलाई की हुई होती थी । यहाँ तक कि वह लम्बे मोजे भी पहन लिया करती थी । मेरे सामने वह दयापूर्ण मुस्कान अपने चेहरे पर बिखेरे आती और ऐलान करती

“मैंने समावार तैयार कर दिया है ।”

अल्मारी के पीछे हम चाय पिया करते थे जहाँ उसकी एक छोटी चारपाई बिछी हुई होती थी । दो कुर्सियाँ, एक मेज और कपडा रखने की एक पुरानी बदनमा अल्मारी जिसके नीचे की दराज बंद ही न होती थी । आते-जाते सोफिया की पिडलियाँ उस दराज से अक्सर टकराती रहती थी । और जब कही उसे वह जोर से लग जाती—जोर खान छिल जाती—तो वह पाँव को सहला-सहलाकर, मुँह बनाकर बुरा-भला कहने लगती थी

“तोदू कही की, मूर्खा ! ऐसी ही जैसे सेम्योनोव है । बलबल, घृणित और मूर्ख !”

“तो क्या तुम्हारे ख्याल में मालिक मूर्ख है ।”

उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए अपने कंधे उठाए और उसके बड़े-बड़े कान भी साथ ही धिरकते हुए उठ गये ।

“निश्चित रूप से ।”

“क्यों ?”

“इसलिए कि वह है ।”

“नहीं, लेकिन क्यों ?”

अब चूँकि वह जवाब न दे सकी तो उसे गुस्सा आगया

‘क्यों, क्यों ? इसलिए कि वह बेवकूफ है । .हर तरफ से बेवकूफ है ।’

लेकिन एक दिन उसने मुझे समझाया और समझाते हुए कुछ नाराज-सी हो गई .

‘क्या तुम समझते हो, वह मेरे साथ रहता है ? बस दो बार वह

मेरे साथ रहा। उन दिनों में वेग्यागृह में थी। लेकिन यहाँ ऐसी कोई बात नहीं है। मैं उसके घुटनों तक पर बैठती थी और वह मुझमें थोड़ी देर तो छेड़छाड़ करता और फिर कहता, 'भाग जाओ।' वह तो उन दोनों के माय रहता है। मझ में न मालूम वह चाहता क्या है ? उस दूकान में कोई आमदनी नहीं होती, मैं अच्छी दूकानदार भी नहीं और न ही मुझे यह पसन्द है। न जाने क्या मसलेहन है ? मैं पूछ लेती हूँ कभी तो वह चीख पडता है, 'इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं।' ऐसी-ऐसी हज़ारों बेवकूफियाँ गिन लो !"

आँखें बन्द किये हुए उसने अपना मिर हिलाया और उनका चेहरा विल्कुल खाली-खाली-सा लगा जैसे कि लाश का।

"उन दोनों को जानती हो तुम ?"

"क्यों नहीं। जब वह पिये हुए होता है तो उनमें से किसी एक को मेरे यहाँ लाता है और पागलों की नाई चीखता है, 'लगे एक इसके लाल-लाल मुँह पर।' छोटी वाली को तो मैं हाथ नहीं लगाती, तरम आता है उस पर। वह हमेशा थर-थर काँपने लगती है। लेकिन वह दूसरी—उसे एक बार मैंने मारा था। मैं खुद भी नशे में थी और मैंने उसे मारा। मुझे फूटी जास नहीं भाती वह ! और फिर मेरी तबियत बड़ी खराब हो गई। और मैंने उसके भी खूब निहट्टे मारे।"

अपने विचारों में वह गुम हो गई, मूर्तिवत जकड़ी हुई बैठती रही। फिर उसने धीरे-धीरे कहना शुरू किया

"उसे मारने का मुझे जरा भी अफसोस नहीं सूअर कहीं का ! लेकिन फिर भी वह बनवान है। अच्छा होता कि वह भिसारी या बीमार होता। मैं कहती हूँ उसने, 'अरे मूर्ख ! तुम इस तरह कैसे रह सकते हो ? किसी-न-किसी तरह अच्छी जिन्दगी बसर करो। अब क्यों नहीं तुम किसी अच्छी औरत में शादी कर लेते कि बच्चे हो ।"

"लेकिन वह तो शादी-दा है।"

तोफिया ने ऋधे सिकोड कर सादगी से कहा
 उमरो का किनी को जहर देकर नहीं मारा ? अपनी पत्नी का
 भी वह जहर दे सकता है अब तो वह वैकार ती बुडिया है न !
 वह तो बिल्कुल पागल आदमी है । न वह कुछ चाहता ही है ।
 मैंने उसे समझाना चाहा कि किनी को जहर देना अच्छी बात नहीं
 लेकिन उसने बड़े इत्मीनान और सुकून के साथ जवाब दिया
 ' मगर यह तो होता ही रहता है । '

उसके कमरे की खिडकी में से गलमोहदी का पीया दिग्या देना
 या । खूब फूल आये हुए थे । एक दिन उसने बड़े गव से पूछा
 कितना सुन्दर है यह सुरजमुखी ? "

'हाँ, खासा है । लेकिन यह सुरजमुखी तो नहीं है ।'
 उसने अपना सिर हिलाने पर बहुत जोर से इन्कार कर दिया ।

'नहीं, नहीं यह ठीक नहीं । मामूली फूल तो यही होते हैं या
 छोट पर छपा होता है । लेकिन सुरजमुखी तो देवता का फूल होता
 है । सूर्य देवता का । ये सब सुरजमुखी के फूल होते हैं । फल निक
 रंगों का होता है ।—गुलाबी नीले, लाल सब रंगों की मुझे पट-
 जान है । "

इस प्रकार के दिखावे भरे सादे लेकिन असल में अजीब व
 बहुत ही गडमड लोगों के साथ जीवन बिताना नन्हे दिन-ब-दिन जनम
 मालूम होने लगा था । वास्तविकता एक नयानक स्वप्न बन रह
 गई थी । मिताबों में जो बातें पढ़ी थी उनकी जाव व ताव व उनकी
 सुन्दरता में और भी वृद्धि हो गई थी । और वह नदिया के तारों की
 तरह आकाश में दूर से दूरतर होती जा रही थी ।

एक दिन मालिक ने मेरी आँखों में अपनी मँजरी आँखलाडकर जो उस समय तपे हुए ताँबे की तरह घु घली हो रही थी, मुझसे बड़े उदास स्वर में पूछा।

‘मैंने सुना है कि आजकल तुम छोटी दूकान में जाकर चाय पिया करते हो?’

“हाँ।”

‘मेरा भी यही ख्याल था। सँभल जाओ तो बेहतर है।’

वह मेरे पास बैठ गया और कुछ बेखुदी के आलम में बातें शुरू कर दी। बोलते समय उसकी आँखें पुचकारी हुई त्रिल्ली की तरह जल्दी-जल्दी झपक रही थी और वह होठों को इस तरह चाट रहा था मानो एक-एक शब्द का मजा ले रहा हो।

“लडकी क्या है टमाटर है क्या? मुझसे पूछो, मैं बताऊँ। वास्तव में वह भगवान की पथभ्रष्ट सृष्टि में से नहीं है। जैसी बातें वह मुझसे करती है कोई पादरी भी क्या करेगा। हाँ, हाँ जान-बूझ कर, उसकी परीक्षा लेने के लिए मैं उसे धमकाता हूँ, डराता हूँ। अरी पगली, मैं तुम्हें मारकर निकाल दूँगा। लेकिन वह जरा बराबर भी तो परवाह नहीं करती, सच्ची बात कहने में जरा भी तो नहीं हिचकिचाती।”

“सच्चाई की तुम्हें क्या जरूरत है?”

“बिना सत्य के जीवन अजीर्ण हो जाता है।” उसने विस्मयपूर्ण सादगी से कहा।

फिर उसने एक गहरी साँस ली और मुझे धूर कर देखा। चिड़-चिड़े अन्दाज़ में मानो मुझसे कुद्व होकर बोला

“तुम शायद सोचते होगे जिन्दगी बड़ी सुगम चीज है।”

‘नहीं तो, जोर विशेषकर तुम्हारे जामपाम।’

‘तुम्हारे जाम-पाम! उसने मुँह चिढ़ाया और फिर देर तक मुँह

फुलाये खामोश बैठा रहा। गर्दन का ढीला ढाला मांस इस तरह लटक रहा था जैसे गर्मी के मारे हाँपते हुए कुत्ते के जत्रडे। कान झुक गये थे और निचला होठ बेजान होकर छीछडे की तरह लटक पड़ा था। आग के शोलो के प्रतिविम्ब ने उसके दाँतो में सुनहरी चमक पैदा कर दी थी।

“मूर्ख होते हैं वे जिन्हें जीवन सुखद नजर आता है। होशियार आदमी तो बोदका पीता है। उसको तो आस्तीनों चढा कर जिन्दगी से टक्कर लेना होती है। मुझे देखो! कभी-कभी तो मैं रात भर पड़ा रहता हूँ। सारी रात पड़ा रहता हूँ लेकिन कमवस्त एक जू तक नहीं काटती मुझे! जब मैं मजदूर था तो जुएँ भी बड़े शौक से मुझे वाटा करती थी। दौलत की निशानी होती है यह हमेशा! जैसे ही मैं साफ-सुथरा रहने लगा कि उन्होंने मेरा साथ छोड़ दिया। हर चीज मेरा साथ छोड़ रही है। वस्तु केवल घटिया, नस्ती चीजे शेष हैं—औरत! और वह तो बहुत ही दुखदाई और दुश्वार होती है।”

“और क्या तुम वही सत्य की खोज कर रहे हो?”

उसने झल्लाकर जवाब दिया

“तुम समझते हो कि क्या वे तुम लोगों से कम चलती हुई हैं? तुम लोगों से? कुजिन ही को देखो, भगवान से डरता हुआ नच वातो की त्वर देना उसको अच्छा लगता है। सोचता है कि शापद में उसका पारिश्रमिक दगा। मैं तो खुद ही सड़ी बूसी चीजे अच्छे दानो बेच डालता हूँ, समझे?”

फिर उसने आग की ओर ग्लानिपूर्वक सन्नेत किया और बोना

‘गेओर तो कुल्हाडी है। उल्लू की तरह बेवकूफ! तुम नी टम-टाय करते फिरते हो और हर घडी इस घात में रहते हो कि जरा कोई नौका मिले और अपने किसी साथी की गर्दन पर तबार टूट। तुम चाहते हो सब उसी तरह रहे-सहे जिन तरह तुम रहो। और मैं यह

नहीं चाहता । खुद भगवान ने मुझे बीच में धवार में छोड़ दिया और मानो कह दिया, जाओ मिस्टर सेम्योनोव, जैसे चाहो जिन्दगी बनर करो, मैं देखल नहीं देता । मेरी बना से जहन्नुम में जाओ तुम ।”

उसका मँवलाया हुआ सुर्ख चेहरा भडकते हुए शोलो की लपेट में दमक रहा था और पसीने में तर हो गया था । उसकी जाँचे ठहर गई थी । जैसे नींद आ गई हो और जबान में लडखडाहट आ गई थी ।

“लेकिन सोवका तो मँह पर कहती है—तुम आवारा की-सी जिन्दगी बसर कर रहे हो । आवारा की-सी ? हाँ और नहीं तो क्या ! तुम कोई भेडिये या सुअर नहीं हो । तो फिर इन्सान जिये किन तरह मूर्खा ? मुझे क्या पता ? वह कहती है तुम खुद ही मालूम करो । तुम काफी होशियार हो, अब बनो मत कि मुझे मालूम नहीं—लो यह है सच्चाई ! जिन्दगी इस तरह बसर नहीं की जाती । मुझे मालूम नहीं कि फिर दूसरा कौन-सा रास्ता है ? यह है त्रिकुल सच ! और तुम, तुम ।”

उसने एक मोटी-सी गद्दी गाली दी और फिर ओं भी ज्यादा तैश में आकर कहने लगा

“मैं उसे सोवका कहा करता हूँ । दिन के समय तो वह त्रिकुल जैसी मूर्खा-सी लगती है हाँकि रात के समय भी वह होती मूर्खा ही है । लेकिन रात के समय कम-से-कम वह चंचल और ठीक लो होती है ।”

उसके स्वर में स्नेह था और आवाज में वही मिठास मालूम आता था जो मैंने पहली बार सुअर के बच्चों से उसे बात करते समय पाया था ।

“तीन रत्न छोड़ी हैं मैंने ।” अब फिर उसने अपनी गाथा शुरू की । “एक तो गोस्त-पोस्त के आनन्द के लिए—नादिया घुत्राल वालो वाली । शोत्री और चंचलता तो उसमें कट-कट कर भरी है ।

* तमो भाषा में नावो (मात्रका का सक्षिप्त) का जग उल्लेख आता है ।

देखने में यो लगता है जैसे वह निहायत ही डरपोक है लेकिन दरअसल है वह विल्कुल निर्भीक । न तो भय को वह जाने कि किस चिडिया का नाम है और न यह जाने कि अन्त करण क्या बला है ।—वन लोन-तिप्ता उसका अन्त करण है । जोरु है वह जोरु ! कोई निजु या साधु-सत उसे देखे तो दग रह जाए । दूसरा कुरोचकीना है मानसिक व्यभिचार के लिए । इसके अलावा और कोई नाम उसके लिए जंचता ही नहीं । उसका नाम तो है ग्लाशा, ग्लाफरा लेकिन कहना उसको पडेगा कुरोचकीना ही । वस यही उसकी विशेषता है । उसे सताने में मुझे बडा मजा आता है । मैं कहता हूँ क- जाओ पूजा सब नरयो जलाए जाओ दिये इन मूर्तियों पर लेकिन भूत तुम्हारी ही ताक में बठ है । भूतो से उसे बडा डर आता है घिग्घी बंध जाती है उन्हीं डर के मारे । पर छोटे सिक्के खूब चलाती है चुपचाप । अभी कन ही तो आत है एक छोटा सिक्का उसने मुझे चेंप दिया था—तीन रुपय का या ५० और उससे पहले एक पांच स्वल बाता दमा दिया था उसने । मैं पूछता हूँ कहां से आते हैं तुम्हारे पास ? तो कहती है कोई आखो ने न भोक कर चलता बना । भठी है वह । जालसाजों की फिती टोपी ने मिली-भगत है मालूम होता है । शायद कमीशन नय कर लिया होगा । लेकिन भई है बडी घुन्नी । जब तक उसे गुस्ता न दिलाओ उनके नाय मजा नही आता । फिर तो उसका गरम होना देखो । कभी-कभी तो मुने भी फुरहरी आ जाती है । उसका बस चले तो आदमी का गला पाट कर दम निकाल दे । एक तकिये से दम घोटस जाती है, हा हा, सिन एक तकिये से । और जब काम तमाम कर चुकेगा तो दुजा मांगेगी । हे नयवान मुझे क्षमा करदो । तुम बडे दयालु हो भावन । हा हा वह गेमा ही करती है ।

शोले और भी ज्यादा नेज हो गये पानों नी खूब दट गये थी । आग की रोशनी में उसकी बदनुमा और उदरुत गवन तार नी नय नजर आने लगी थी जो घृणापूर्ण होगे के नाय दुखत्रद नी थी । दट ने

बचने के लिए उसने बलखाने शुरू कर दिए थे, पसीना वह निकलना था और साँस के साथ सड़ी हुई, चिकटी वदबू निकल रही थी जैसी कि गर्मियों में गंदे नालों से भभक उठती है । जी चाहता था कि खूब ही तो उसे मुनाई जाएँ, मरम्मत की जाएँ, गुस्सा दिलाया जाय ताकि यह शस्त्र किसी और अंदाज में वातचीत करे । लेकिन इसके साथ ही वह उन घृणित बातों में जादूभरी दिलचस्पी लेने पर मजबूर भी कर देता । उन बातों से गदगी टपकी पड़ती थी । लेकिन उनमें एक दर्द और एक प्रकार की चुभन का भी एहसास पाया जाता था ।

“भूठ सब बोलते हैं—मूर्ख अपनी मूर्खतावश और चालाक अपनी मक्कारी के लिए । लेकिन सोवका सच बोलती है सच बोलती है अपने लिए नहीं अपनी आत्मा के बहिष्कार के लिए भी नहीं आत्मा, ठि प्रकवास ! वस सच बोलती है, इसलिए कि वह सच बोलना चाहती है । मैंने सुना था कि विद्यार्थी सत्य की खोज करते हैं । इसलिए मैंने शराबखाने भाँके जहाँ वे मस्त होकर मदिरा-पान करते हैं । कुछ भी नहीं । ये सत्र मनगढन्त किस्से हैं । वे सब शराबी होते हैं, हाँ हाँ शराबी । ”

अब वह बड़बड़ाने लगा था । मेरी मौजूदगी का उसे जरा भी भान न था । मानो मैं उसके पास बैठा हुआ ही नहीं हूँ ।

“कुछ लोगों के लिए सच्चाई मानो मानो ऐसी होती है जैसे कि वह किमी ऊँचे घराने की सुन्दरी के प्रेम में ब्रज गया हो । एक ही नजर में त्रिन्दगी भर के लिए उमी का होकर रह गया हो और उम तक पहुँचा न जा सके जैसे उमे नहीं मपने मे देखा हो ।”

कोई कह नहीं सकता था कि मालिक नशे में है या होश में । शायद तत्रियत त्वरात्र हो । उमकी जवान और हीठ मुस्त थे जैसे कि वह उन मगोन शब्दों को नीचा करने का यत्न कर रहा हो । जो उमका दिमाग गूँट रहा था । उन वजन वह कुछ घृणित जान पड़ता था और मैं ऊँच-

ऊँध कर शोलो को घूर रहा था । अब उसकी भर्राई हुई आवाज मुझे सुनाई नहीं दे रही थी ।

लकड़ियाँ गीली थीं और तडख रही थी, सनसना कर भाग उगल रही थी, नीला और वोभिल धुआँ लगातार निकल रहा था । हल्के लाल रंग की लपटें लकड़ी के गुद्दों के इर्द-गिर्द लिपट गई थीं और भयावह आकृति बना कर भडक रही थी, साँप की जवान की तरह नीची मेहराव की ईंटें चाट रही थी । और तँदूर के मुँह की तरफ मुड़े हुए और और दबे हुए थे और धुआँ घनघोर घटा की तरह—काला और वोभिल धुआ—उन्हे छिपाये ले रहा था ।

“बडबडिये !”

‘जी ?’

‘जानते हो मझे तुम्हारी किस बात पर आश्चय हुआ ?’

“बताया तो था तुमने एक बार ।”

‘हा !’

अब फिर वह खामोश हो गया और फिर एक भिन्नमने ने-ने गिता-यत भरे स्वर में कहा

“तुममें इससे क्या कि आया मुझे सर्दी लग जाती और मैं मरजाता, या न मरता । तुमने तो यो ही कह दिया था विना सोचे-नमझे । महज मजाक के लिए ?”

‘तुम अब जाकर सोजाओ तो अच्छा है क्यों ?’

चुपके-चपके मुस्कराते हुए उसने अपना सिर हिलाया और इसी शिकायती अँदाज से बोला

“लो, और सुनो ! मैंने तो इसके साथ भलाई की और यह मैंने मुझे ही भगा रहा है ।”

यह पहला मौका था कि हमारे मानिक ने सहानुभूति प्रकट की थी और मैं उसकी हमदर्दी की मञ्चारी या प्रभावट की दरी में खरक

चाहता था ।

मैंने कटकपूर्ण मार्ग पर चलते हुए कह डाला

“क्यों न नन्ह याशका की कुछ मदद कर दो ।”

मालिक ने भारीपन से अपने कंधे सिकाड़े और खामोश हो रहा । इस बातचीत में दो-तीन दिन पहले भुनभुना बेकरी में गिर पड़ा था । उसके सिर के बाल सब जल गए थे और गजी टाँट निमल आई थी । आँखों की तरह उसका सिर भी विल्कुल सफ़ाफ़ हो गया था । अस्पताल में रहने से उसकी आँखें पहले से भी चमकीली और साफ़ हो गई थी । उसका दागदार नन्हों-सा चेहरा दुबला गया था । नाक और भी ज्यादा टेढ़ी और ऊपर की उठ गई थी । बच्चे के मुँह पर कुछ स्वप्निल मुस्कान खेतने लगी थी । कारखाने में वह कुछ अजीब चाल से चल रहा था मानो अभी लडखडा कर गिरने वाला हो । उसको डर लगा रहता था कि कहीं कमीस मँती न हो जाए । और अपने हाथ साफ़ देखाकर उसको शायद उतकन हो रही थी क्योंकि वह अपनी नई पतलून की जवों में हर वक्त ठूमे रहता ।

“यह सिंगार तुम्हारा किमने कर दिया ?” नानवाइयो ने पूछा ।

मिथ जूलिया ने ।” उसने अपनी नन्हों-सी मद्राम जागण में जनाय दिया और फिर चलते-चलते रुककर और अपना हाथ हाथ से निकाल कर हवा में नचाते हुए कहा

डाक्टरों है वह ! कर्नल की नेटी । तुम ने उसके पिता की टाँगें काट डाली—बुटना तक, मैंने भी उनको दगा है । याफ़ गजी टाँट है उनकी । बार बे कहते रहते हैं—कुछ नहीं, कुछ नहीं । उनमें झा होता है ।’

वाह वाह ! नाइयो, जस्पनात में तो बड़ा मजा है । जोर पूछो नई जोर कुछ पूछो ।”

दास्तिन हाथ में तुम्हारे मजा है ?”

“कुछ नहीं।” उसने भट से जवाब दिया और बेकसी के आलम में उसकी निगाहे चारो तरफ जा रही थी।

‘भूठ ! लाओ, लाओ हमें भी तो दिखाओ।’

बेचारा घबरा गया। उसने अपना हाथ जेब में और भी अन्दर ठूस लिया। और खुद भी दुहरा हो गया। अब तो लोगो को और भी उत्सुकता हुई और जेबो की तलाशी लेने का फैसला हुआ। सबने लपक कर उसे दबोच लिया और थोड़ी देर की कशमकश के बाद उसकी जेब से बीस कोपेक का एक नया और चमकदार सिक्का तथा एक मूर्ति ‘माँ’ व ‘बच्चे’ की निकली। सिक्का तो फौरन ही याशका को वापन कर दिया गया और मूर्ति हाथो-हाथ घूमने लगी। पहले तो बच्चा अपना नन्हा हाथ फैलाए और खिची हुई मुस्कान के साथ मूर्ति वापन मांगता रहा। फिर उसे गुस्ता आ गया और फिर रपता-रपता वह नी जाता रहा। जब सैनिक मिलोव ने मूर्ति वापस की तो याशका उभे लापरवाही से जेब में डालकर कही गायब हो गया। रात को नाने के बाद वह उदात्त व मजिन चेहरा लिए जगह-जगह गीले आटे के बाद चिपकाये और खुश्क आटे का उबटन मले मेरे पास आया। लेकिन उसकी वह पुरानी जिदादिली कही नजर न आई।

‘अच्छा तो लाओ देखें क्या भेट लाये हो?’

उसकी नीली आँखें कही और देख रही थीं।

‘मेरे पास नहीं है।’

फिर कटाँ गया ?”

“खो गया।”

“सचमुच खो गया क्या ?”

याशका ने एक ठण्डी सास ली।

“वह कैसे ?”

“फेंक दिया।” उसने मरी हुई आवाज में कहा।

मेरी शकल देखकर वह समझ गया कि मुझे विश्वास नहीं हुआ, इसलिए उसने अपने सीने पर क्रास बनाते हुए कहा

“भगवान मेरा साक्षी है। तुमसे मैं झूठ हरगिज नहीं बोलूंगा। उसे मैंने आग में फेंक दिया। पहले तो वह लाख की तरह पकने लगा, फिर जलकर खाक होगया।”

फिर वह एकदम सिसकियाँ ले-लेकर रोने लगा और मेरे दामन में हँसते छिपाकर और हिचकियाँ ले-लेकर कहने लगा

“थूअर कहीं का, नीच ! हमेशा हर चीज झपट लेता है वह फौजी ने ऐसी उँगलियाँ गड़ाई कि उथकी एक किरच उखड़ गई। गल जाये उँगलियाँ इथकी। मिथ जूलिया ने जब वह मर्ति मुझे दी थी ता पहले उथको चमा था और बाद में मुझे भी कहा था, “लो, यह तुम्हारी है। यह तुम्हारे काम आएगी।”

मारे सिसकियों के उसका जी हलकान हो गया और बड़ी देर तक मैं उसे चुप न कर सका। मैं नहीं चाहता था कि बेकरी के नानवाई उसको रोता देखले और उसके दर्दनाक माने समझ जाए।

अचानक मालिक ने पूछा, “वह याशका वाली क्या बात थी ?”

“वह बहुत कमजोर है और बेकरी में तो वह वैसे भी काम करने योग्य नहीं है। उसे तो कहीं दूकान पर काम करने को लगा दिया जाए।”

मात्रिक किमी सोच में पड़ गया और होठ चमकते हुए बड़ी गम्भीरता के साथ बोला

“अगर कमजोर है तो दूकान पर भी किस काम का ? वहाँ ठण्ड है, उसे सर्दों लग जायगी और गारास्का भी उससे दुर्व्यवहार करेगी। सोवका वाली दूकान पर भेज दो तो अच्छा है। वह है भी फूटड। मारी दूकान बूल में अटी रहती है। वहाँ जाकर वह उमका हाथ बटाए। यह कोई सब्त काम भी नहीं है।”

तेंदूर के अन्दर अंगारो के सुनहरी ढेर पर नजर डालकर उनने गढे मे से पाँव निकाल लिये ।

‘ राख भाडो, वस अब वक्त हो गया । ’

मैं लम्बी छड तेंदूर मे डाल कर राख भाडने लगा और उनने धीरे-धीरे जैसे त्वाब में वडवडाते हुए कहा

तुम भी हो बुद्ध ! देखो तो सही तकदीर खडी तुम्हारी राह देख रही है । जो चाहे बन जाओ । और तुम हो कि उह हमारी बना से, अजीब आदमी है । ’

पुराने, टूटे-फूटे मकानो के गहरे सायो वाली सकीर्ण एव अँधियाँ गलियो में मार्च का सुर्य बडी सतर्कता के साथ जरा नाक-नी चडातर झाँक रहा था । सुबह सवेरे से रात गय तक शहर के बीचो बीच गलियारे तहखानो में कँद रहने के कारण हमें वसतागमन का अनुभव नीन पँदा हो जाने से होता, जो दिन-ब-दिन बटती चली जाती ।

दोपहर के बाद कोई बीस मिनट के लिए सुर्य की एक किरण नार-खाने की आखिरी खिडकी मे से अन्दर भाकती और मुइतों का मँता व गदा शीशा कुछ देर के लिए ख्वसुरत और चमकदार दिखाई देने लगता । छोटे-से रोशनदान में से बिना पट्टियो की गाडी चनाने वाले घोडो की टापों की आवाज सुनाई देने लगती क्योंकि अब बस चिन्नलन से सडक के पत्थर उभर आते । बाजार का कोनाहन नी अब व्हने न तेज और ज्यादा सुनाई देता ।

बिस्कुटो वाली बेकरी में गानों की आवाज जातानार गुजनी रहती ।

लेकिन अब उनमें जाड़ों की-सी न रही थी । समूहगान मंद पड़ गया, हर व्यक्ति अपने पसन्द के गीत अपनी-अपनी पसन्द की लय में गाने लगता । बार-बार घुने व तर्जें बदनी जाती, मानो वसन्त के उम दिन की आत्मा के साथ एक सुर होने वाला कोई गीत ही न मिल रहा हो ।

छोड़कर मुझको विरह में प्रियतम

तँदूर के पास से वजारे ने गाना शुरू किया और बानुक ने अगली पन्क्ति मानो बड़े यत्न में पूरी की

मेरे चरणों में पड़ा है मेरा यह निराश जीवन

गीत उसने अबूरा ही छोड़ दिया और जिम सुर में गा रहा था उमी सुर में बोला

“इस दिन और है फिर हमारे गाँव में लोग हल चलाना शुरू कर देंगे ।”

शानुगोत्र अभी जाटा गूबकर उठा था । उसके नमन शरीर पर पसीना चमक रहा था, और जागुले नेत्रों में गिड़की की निनिमेष देखते हुए वह अपना बागों का छान के एक फीने में बाध रहा था ।

उमली उदाग बाणी बड़े मन्द स्वर में गरजी

भगवान के ये नन्ह, ये कामत यागी जगमर है,

जावन कुछ भी नहीं चुपचाप चले जा रहे हैं ।

जातम एक क्रान्ति में बैठे फटी हुई बोरियों की मरम्मत कर रहा था जोर सुरिकाव की एक कविता जा उसे कटाग्र थी उसने जनानी जाशान में त्वाभ-त्वाभतर गाना गारहा था

तु हमारे जन्मिन्त हृदय मित्र

नकड़ी के मद्रक में पड़ा चुपचाप

तिर से पंग नरु कफन में टंका

पीना चेहरा त्रिण पडा देहास

‘हृदय’ । कृतिन न उमली नरु मद्रक मद्रक मद्रक, “क्या विहाता ह गीत

कन्न में से खोदकर .उत्कृष्टी का, गया अरे शंतानो ! हजार बार
तुमसे कहा ।'

“हे भगवान !” वजारा गाना अधूरा छोड़ कर चीखा ।
मजा आने वाला है इस दुनिया में अब !”

अपने पाँव से ताल देते हुए उसने ऊँचे सुरो में गीत शुरु किया
एक मदमस्त सुन्दरी आरही है
दूर ही से मुस्काती फूल बरसाती हुई
यह वही गुडिया तो है जिन पर
मेरा सर्वस्व न्योछावर है आज
अगली पक्ति उलानोव गाता है

है वही गभीर मंगी प्यारी ऐन
जिसने सारे कबीले को बश में किया
जब यहाँ आता है मौसम वनत का
वह हरेक चीज में जादू भर देती है

इन क्रमहीन गीतों और छीना-भ्रपटी की वातचीन में वनत की
मस्तियों और नवीनता की तडपती हुई उन्मीदों का जननव ताता ।
भाति-भाति के गीतों और तरह-तरह के गानों का अन्वर्तन क्रम चारों
रहा । ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि ये सब लोग किसी नमहागान का
अभ्यास कर रहे हों । जिन बेकरी में मैं काम कर रहा था वहाँ विविध
प्रकार की इन आवाजों का मानो एक धारा बहता हुआ जा रहा था ।
मत्र आवाजें एक दूसरे से कितनी भिन्न थीं किन्तु जन्मे चुना वन
वाले आकषण में कितनी समान थीं ।

और चूँकि मेरे मस्तिष्क पर भी बहार आई हुई थी इसलिए मैंने
कल्पना में एक ऐसी स्त्री भी जो पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु में जनक प्रकृति
करती थी अतः मैंने धारका को सम्बोधित करते हुए सुन्दर आवाज में
कहा

है वही गम्भीर

शातुनोव ने मैली-कुचैली खिडकी की तरफ से मुह मोड़ लिया और वजारे के जवाब को अपनी पाटदार आवाज में गूँग करते हुए गाने लगा

और मजिल सस्त

तस्ते की दीवार की दरार में मे मालिक के कमरे में मे वूढी माल-किन की आपत्तिपूर्ण और भिखारिन की-सी आवाज आई

‘वासिली प्यारे, वासिली जानी !’

एक हफ्ते से भी ज्यादा हो गया था कि मानिक बुरी तरह बी रहा था । लेकिन अब भी मदिरा-पान का यह दौरा थमता नजर न आता था । नशे में वह इस हद तक चूर हो गया था कि जमान से एक शब्द भी स्पष्ट नहीं निकलता था । हल्कों में उभरी हुई आँखें बाली और अप्रतिभ-सी हो गई थी क्योंकि वह अपने आदमी की नाई तनकर जोर मीठा हाकर चलने लगा था । उसका मारा जिस्म इस तरह फूटा हुआ जोर नर्म था जैसे जमी-जमी नदी में से तमीट कर निकाला गया हो । उसके फान पहले में उसे चलने लग थे और खड़े हुए मान्म देते थे । हाठ पिचक गए थे जोर चेहरा वसे ही इतना भयकर हा गया था कि खुले हुए जत्रों में से नजर जान हुए दात फागतू मान्म देते थे । रुभी-रुभी वह अपनी छाटी-छोटी टागा को तडखडाता खामरवाह नारी-भारी रुदम खना हुआ अपने कमरे में बाहर जाता जोर जा भी फोटे उनके रान्ने में जाता उमी पर बुरी तरह डह पडता । जोर अपने अप्रतिभ नत्रों में उसे ऐसे नयानक टग में खरना कि मतली जान लगती । उनके पीछे पाटका में बरी टुई एक सुराही और एक गाम अपने बड-बड राजा में दवाच जोर नश में उना रुद मदमस्त यगाए जाता । उसके चेचक नर चेहर पर जात जोर नफर उब्र हात । मानिक जान्व अत्रवरी हातीं जोर मुह इन तरह खुता हाता जैसे कि किना ।

अपने जिस्म पर चहका लगा लिया हो और सांस लेने के लिए वेदम हो कर मुँह फाड़ रखा हो ।

मुँह खोले बिना ही वह नह-ही-मुँह में वडवडाता 'हटो, हटो रास्ता दो । मालिक आ रहा है ।' और नवसे आखिर में वूढी मालकिन सिर झुकाए आती । उसकी आँखों से पानी इस कदर रिसता होता मानो अब फौवारा छूटा । जार जो ट्रे उसके हाथ में है उसको भरना शुरू किया । ट्रे के जन्दर रखी हुई नीली रकावियों में मछली के कवाव जोर इसी किस्म के पात्र बिखरे हुए होते ।

फारखाने पर मौत का सा सन्नाटा छा गया था । मानूम हाता था कि यहा दम्घोट रात ने डेरे डाल दिए हैं । सामान्य मतवाता ही यह टुकड़ी अपने पीछे तीखी और असह्य दुगन्ध के भनके छाड जाती । उन्हें देखकर भय और ईर्ष्या के मिश्रित भाव उत्पन्न हान जार तय न दरवाजे में से अदृश्य हो जाते तो दो-तीन मिनट तक फारखाने में नरा वह स्तब्धता छाई रहती ।

फिर दबी-दबी आवाज में व्यग्य कसे जाने लगत ।
पी-पीकर मर जायगा ।'

'वह ? तुम्हारे जीने जी तो मरना नहीं ।'
'ऐ लडको ! तुमने देखा कितने कवाव न ?
खुशव् वडे मजे की थी ।'

अपने को तवाह कर रहा है वासिली सेन्जोनिच ।
कितनी बोलते पी जाता है गिने तो मजा आय ।

अर तुम तो उतनी एच महीने में नी न पी नता ।
तुम नरा जानो ? 'नैनिक निलाव ने नरा । उननी - दान न

पद्यपि विनम्रता जी पर साथ ही अपनी शक्ति पर विस्मय न नी । नरा
आजमाकर देखो । एक महीना अपने पाप ने दिया नरा दान न

“अरे दीवाने हा जाओगे ।”

“चलो अच्छा ह । जब तक दीवाननगी रहगा तब तक की मोज ही सही ।”

मालिक को देखने के लिए मैं कई बार उठकर बाहर परामदे में गया । येगोर ने बाहर आंगन में एक पुराना पीपा उलट कर बूँप में रख दिया था जो दूर में ताबूत मालूम होता था । मालिक नगे मिर था और बीच में बैठ गया था । उसके दाहिनी तरफ कवात्रो बगैरह की ट्रे रखी हुई थी और बाई तरफ सुराही । मालिकिन भी इठलाकर नीचे के एक कोने पर बैठ गई । येगोर मालिक के पीछे उसकी बगलो में हाथ डाले और पीठ को अपने घुटनों का सहारा दिए उसको मम्हाल हुए सड़ा था । खद मालिक ने अपना सारा बोझ पीछे की तरफ डाल रखा था । जोर बड़ी देर में पाता खाये हुए पीले आकाश को टिकटिकी तगाए घूर रहा था ।

“बगो क्या तुम माम ले रहे हो ?”

“जी हाँ ।”

“क्या हर माम भगवान की महिमा प्रकट नहीं करती ? हम पढ़ते हैं ।” नहीं प्रकट करती क्या ?”

“नहीं नहीं चुन्कर करती ह ।”

“क्या भरा ।”

मालिकिन ने एक भयभीत मर्गा ही तरह फड़फड़ाते हुए मोजा का एक ग्लान अपने पति के हाथ में थमा दिया । उसने ग्लान अपने मह में पैर रख लिया और उसकी तबियत के चिन्ता में लगी । मालिकिन ने बड़ी कर्तों के साथ ज्ञान के अट्टे-अट्टे चिन्ह बनाये और हाथ उस तरफ मुड़े । जैसे चन्द्रमन्त्र के विण । यह दुःख दुःखद भी था और हास्यास्पद भी ।

फिर उसने आदिश्रुति-आदिश्रुति मितमिनाना शुरू किया

येगोर ने जोर से हाथ देते हुए ताबूत सहारा इन ही बातें कही ।

‘तुम मत धबराओ मा । भगवान की इच्छा के बिना कुछ नहीं होता ।’ येगोर ने ऐसी आवाज़ में कहा जैसे मुर्छा में हो ।

वसन्त ऋतु का सूरज बड़ी आव व ताव ने चमक रहा था । बाहर गढो में पानी की सतह और पन्थरो का प्रतिबिम्ब चमचमा रह था ।

एक दिन मालिक ने आकाश और मकानों की छतों को जाँचते हुए इतने जोर की झोकेली कि आँधे मुँह गिरते-गिरते बचा । फिर सभल कर पूछा

“वह किसका दिन है ?”

‘भगवान का ।’ येगोर ने बड़ी कठिनाई से उत्तर दिया । क्योंकि अभी वह मालिक को गिरते-गिरते बचा ही रहा था । सेम्योनोव ने अपनी टांग दिखाते हुए पूछा ।

“यह टांग किनकी है ?”

“तुम्हारी ।”

‘झूठा । मे किसका है ?’

सेम्योनोव का ।”

“झूठा !”

भगवान के ।”

‘ह ह ह !’

मालिक ने पाँव उठाया और कीचड़ में जोर का छपका दिया । कीचड़ की छींटें उड़कर उसके सारे चेहरे और नीचे पर आईं ।

‘येगोरी,’ बुढ़िया गुनगुनाई ।

येगोर ने उँगली से इशारा करते हुए कहा ‘मे मालिक नी जाना ना उल्लंघन नहीं कर सकता मा ।’

मालिक ने आखे झपकाते हुए और अपने चेहरे से कीचड़ की छींटें पोछने की परवाह किए बिना ही पूछा

‘या उसकी इच्छा के बिना एक बाल भी नहीं गिर सकता ?’

“हाँ अगर उम परम पिता की इच्छा न हो तो।”

“लाजों इधर लाओ।”

येगोर ने अपने झुंघरे वालो वाला मिर मालिक के आगे झुका दिया। मालिक ने उस कोमेक के घुँघरियाले वालो का एक गुच्छा अपनी मट्टी में दबोच कर कई बाल नोच लिये। रोशनी में उन्हें बड़ी गीर में देखकर अपना हाथ येगोर के सामने कर दिया।

“छिपालो इन्हे, कहीं गिर न पड़े।”

येगोर ने बड़ी सावधानी से तमाम बाल अपने मालिक की मोटी-मोटी उगलियों में से चुन लिये और हथेली पर रख कर, दोनों हाथों को मलकर उनही एक गोनी भी प्रनाली और अपनी ढीली-ढाली जाम्बूट की जेब की तह में कहीं डूब दी। उसके चेहरे को देखकर हमेशा ही से ऐसा मानस होता था जम बरुडी की तराशी हुई कोई मूर्ति है। उसकी जान मुसी थी। जम यह टटो। टटो न कर कपकपाते हुए एक-एक चीज दसना ता पता जाता कि पीने पिछान। के मामल में वह जीर भी बदतर है।

हाथियारी न रखना।” मालिक हाथ का उशारा करते हुए बड़-बड़ाया।

हर बात के लिए उत्तरदायी होना पड़ता है। हर क बात के लिए।

मानस होता था कि य। मम हरकत पहल भी कर चुके है। उनके सार क्रिय-कलाप में एक यात्रिस्ता नजर आती थी। ऐसा लगता था कि मानसिन का उसमें हाई भी दिव्यस्वी नहीं है सिर्फ उभर जात नार बात हाट निरन्तर हिंड रहे थे।

गाता।” नट्टा मालिक की मसह हुई जाया जाता है।

उगार न अपनी टापी पात्र विनता थी नार बडा ही नमाना चेहरा बना दिन। नार मालिक के पास बहुत हुए मम जाया। न

गाना शुरू किया ।

देखो लडके आरहे हैं डान के

मालिक ने अपना हाथ फँला दिया जैसे कोई भिखारी भीख माँग रहा हो ।

हो तरुण कोमेक तुम हो शूर-वीर

मालिक ने अपना सिर उठाया और हू कारने लगा । और उसके भयावने अप्रतिभ मुख पर बहते हुए आसुओं की लडियाँ देखकर ऐसा जान पडता था कि वस अब वह पिघलने ही वाला ह ।

इन्ही तमाशो के दौरान मे एक वार ओसिप ने, जो मेरे पान ही वराम्दे मे खडा था, आहिस्ता से मुभसे पूछा

‘देखा कुछ ?’

‘अच्छा फिर ?’

उसने मेरी ओर देखा और फिर मुस्कराने लगा । यह मुन्फान बडी दयनीय ओर निराशाजनक थी । कुछ दिनो से वह बडा ही निटान दिगार देने लगा था । उसकी मगोलियन आखें मालूम होता था जे पडी होगई ह ।

‘हैं क्या यह ?’

ओसिप ने भुक कर मेरे कान ने कहा

‘मालदार ह कयो हैना ? मुख चाहिए ? लो यह ह मुख । मार ह वह

जव मालिक का शरावनोशी का दौर चल रहा होता तो बरक साम्दा भी कारखाने मे इस तरह लडखडाता फिरता जैसे कि वह भी नग मे था उसकी आखें परपराती और भपकती रहती । हाथ लटकने रजन जन ट्ट गये हो । और उनकी मुर्ख लटे चपचपाती हुई नाभे पर पिरकनी रहती । ताइका चोट्टेपन के बारे मे कारखाने मे हरेक कारई खुने बडा वार्त करता और स्वीकार मुचक मुस्कराहट से उनका स्वान करता ।

कुजिन तो और भी चिकनी-चुपड़ी बातें मिलाकर क्लर्क के गुण गाता ।

“अरे वह ? वह तो बाज की तरह है बाज की तरह ! और देख लेना यह हमारा अलेक्जान्द्र पेन्नीव कितनी ऊँची उड़ान मारता है लिख के रखलो यह बात ।”

हर शस्त्र ने अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार चोरी की । चोरी की और वह भी बड़ी शान व लापरवाही के साथ । और यह आमदनी फौरन शराबखोरी पर खर्च हो गई । तीनो-की-तोनो बेकरिया नशे में मस्त थी । ऊपरी काम करने वाले छोकरो को जब शराबखानो से बोडका लेने भेजा जाता तो वे भी कुछ बिस्कुट अपनी कमीमो में छिपाकर लेजाते और उनके प्रदले में कहीं से मिठाई की गोतिया ले आते ।

‘इस तरह से तुम लोग सेम्योनोव का जल्दी ही दीवाला पीट डोगे ।’ मैने एक दिन प्रजारे से कहा । वह अपने खूबसूरत सिर को दिनाले हुए मोता

अरे भया, मेरे हर कपल के पीछे वह तो ३६ कोपेक कमाता है ।”

यह तो इस तरह बातें करने लगा जैसे उसे अपने मानिक के कारोबार का पूरा-पूरा जोर ठीक-ठीक ज्ञान हो ।

मैने हट्टहा लगाया । पाशा ने मुझे इस तरह घूरा जैसे उने मरा हट्टहा अच्छा न लगा है और फिर मुँह बनाकर प्राता

तुम्हें तो हर छोटी-मोटी बातों की फिक्र हा जाती है । यह क्या हो गया है तुम्हें ?”

‘अरे भई फिक्र हा जाने की बात नहीं । कलिन यहाँ की गडगड मेरी नमक में तो ब्याक नहीं जाती ।”

अरे भई तब गडगडी है तो फिर नमक में क्या आवणी ?” शालु-नोव ने विन्मिन्त हाकर कहा । बाग कारमाना हमारी प्रात पीत बडी बार ने सुन रहा था ।

“तुम ही तो मालिक की बड़ाई करते हो कि बड़ा होशियार आदमी है । इतना बड़ा कारोवार सँभाले हुए है । तुम्हारी मेहनत के बन् पर । समझे ?—लेकिन फिर भी तुम ही हर मुमकिन कोशिश उने तवाह करने की कर रहे हो ।”

कई आवाज़ो न एक साथ जवाब दिया

‘उसे तवाह करना असम्भव है ।’

‘जो हाथ लगे हडप कर जाओ । बस यही बेहतर है ।’

‘हम तो खुलकर सास ही उस घड़ी ले सकने हैं जब वह शराब के नशे में घुत्त हो । ’

मेरी बातचीत का साशका को फौरन पता चल गया और वह लपटा हुआ बेकरी में आया । वह हल्के कथई रंग का सूट पहने हुए बड़ा नच रहा था । दात निकोस कर गुरति हुए बोला

“मेरी नौकरी पर दांत है तुम्हारे, क्यों ? कोई डर नहीं । हो तो तुम बड़े चालाक पर अभी कच्चे हो जरा । ”

हर शरूत भूखे शेर की तरह उसकी ताक में था कि उन पर टट पड़े और उससे एक झडप हो जाय मगर साशका मन्नेद तो था पर साथ ही सावधान भी । उसके अलावा हमने भी फँसना कर लेने की कोशिश की थी । उसकी निरतर छडछाड और व्यय में तो साशक एक दिन मैंने उससे साफ कह दिया था कि वह अपनी इन हरकतों में वाज आजाय वरना मैं अच्छी तरह मरम्मत कर दगा । एक बार उसी के दिन शाम के वक्त का जिक्र है । सब लोग चले गये थे । मैं जार बर आगन में अकेले रह गये ।

‘आ जाओ तो फिर !’ उसने अपना कोट उतार कर बर बर देकर दिया और ललकार कर कहा आम्नीने चटारि आर टटने का नैदना हो गया । हो जाय आज । मुँह पर मारने की नहीं है बस निष्क बदन पर । यह मुँह तो मुझे कारवाने के लिए चाहिए तुम तो आम्नीने

सेम्योनोव की क्या हस्ती है ? अरे उसे तो देखकर कै आती है । अजीब भोड़ू-सा शस्त्र है । देखो तो भला यहाँ मौज करता है । पडा होता कहीं दलदल में तो अच्छा भी लगता । इस हालत में तो वह मुझे बड़ा खटकता है ।’

उसका लाल लालची मुँह गोल हो गया—बट्टे के मुँह की तरह और उसमें से सीटी की-सी आवाज निकली ।

‘हाँ तो यार मेरे ! ईमानदारी की जिन्दगी अगर किसी की हा सकती है तो वह पादरी है । लेकिन हर शस्त्र जानता है कि पादरी हमेशा कुछ सुस्त-मुस्त और उदास रहते हैं । और उनका शरीर भी दुबल होता है । थाने के मुर्दुर्रि को जानते हो ? वह जोशियन ? उनीने लिखी है वह कविता जिसका शीर्षक है ‘पादरी की गाथा । उदा का विद्वान व्यक्ति है । हालाँकि है पक्का शराबी । और तो उदा कि न न पादरी ने साफ कहा है हे भगवान तू भी बड़ा अन्यायीन । तारा विना जीवन बिता देना भी स व ही नहीं ।”

यह चुस्त व सुडोल जिस्म और उस पर सुख निर मुक्त प्राणि भाले का-सा नजर आ रहा था । एक अग्निबाण की भांति उदा कस्तु जो रात्रि के समय मृत्यु और सवनाश का अपना वाय नम्यन कर रहा हो ।

मालिक की शराबनोशी के इन दिनों में साइका जहाज की उदा पूरी तीव्रता के साथ जारी थी । छोटे-छोटे परिन्दा पा नवटन सु शिकरे की तरह उसे दौडते और खल एकत्र करत देखकर बड़ी दु होती थी । पर साथ ही वह दृश्य आफपक भी होता था ।

अब तो यहा जेलखाने का-सा वातावरण पैदा हो गया था । सातुनोव ने एक दिन मेरे कान में कहा । जरा बचकर रहना । तुम भी लपेट में न आजाओ ।”

अब दिन-ब-दिन वह मेरा ज्यादा रमाव रहत रहता था ।

मेरा काम करने के लिए हर वक्त मेरे इर्द-गिर्द ही मूमता रहता जैसे कि मैं कोई लगडा-लूला या अपगू हूँ। कभी आटा लिये चला आरहा है तो कभी मेरे वास्ते लकडिया लारहा है और कभी आटा गूवने पर जिद कर रहा है।

“आखिर मतलब क्या है तुम्हारा ?”

मुझसे निगाह चुराकर बडबडाते हुए उसने कहा

कोई हज नहीं, तुम्हारी ताकत कहीं और अधिक और उपयोगी जगहों में काम आयेगी। पुम्हे इसका ध्यान रखना चाहिए। अच्छी मेहनत उन्नत को जिन्दगी में बस एक बार मयस्सर होती है।”

और फिर सदा की भाँति उसने दबे स्वर में पूछा

“माँ का क्या जय है ?”

या फिर वह कोई अजीब-सी बात कह देता

। अस्मिता सम्पन्न के साथ थीर कहते हैं कि हमारी माँ (ईसा-समाप्त ही माँ मारणम) एक नहीं बल्कि कई हैं।”

माँ माँ ?”

उसके मन पर न जाना, बस।”

बहिन तुम मुझे ही तो कहते कि भगवान सदा का एक है ?”

माँ का है। बहिन नाम का विभिन्न है। व उसका अपनी सदा सदासदासदा बना देते हैं। उदाररक्षण के लिए माँ माँ, मोड ती-नियत ! बस यही पाप है।”

एक बार रात का बस मर पाप तदूर के नामने में डाला हुआ था कि बोना

माँ ही अशा है कि एक बार दूरे पाप ! या अब दूरे पाप ! या फिर कभी कीमती है या या दिखाई दे।”

बस बस !”

मेरा मतलब है किसी प्रकार का कोई नाम या नाम

समझे ?”

‘दिमाग तो ठीक है तुम्हारा ?’

विल्कुल !”

चारों ओर दृष्टि डालकर उसने अपने कथन की व्याख्या आरम्भ की, “मेरा क्याल था कि मैं जादूगर बनूँगा। मुझे बड़ा ही शौक था उसका। मेरे नाना जादूगर थे और पिता के चाचा भी हमारे गाँव में उनके चाचा मशहूर जादूगर थे। और गाँव में भ्राड-फूँक और इनाज भी किया करते थे। शहद की मक्खियाँ भी पाला करते। जिले का हर आदमी उनको जानता था। यहाँ तक कि तातारी और च्वाशी और चरेमेसी भी उनका लोहा मानते थे। अब वह कोई सौ से भी उपर है। कोई सात वर्ष हुए उन्होंने एक नवजवान लडकी रखनी थी—एक अनाथ तातारी लडकी। और उससे उनके सन्तान भी हुई अब जंग शादी वह नहीं कर सकते। तीन शादियाँ उनकी पूरी हो चुकी।”

एक गहरी साँस लेकर उसने आहिस्ता-आहिस्ता और मोप मोप कर फिर बयान करना शुरू किया

“भला बतलाओ, तुम उसे ढोंग कहते हो, सौ बरस तक कोई ढोंग नहीं रचा जा सकता ढोंग तो कोई भी कर सकता है लेकिन एक आत्मा सन्तुष्ट नहीं होती।”

पर सुनो तो लंगडा-ल्ला क्यों बनना चाहते हो नुम ?

हा हा, जी तो किसी और तरफ लगा हुआ। मैं दुनिया भर की सँर करना चाहता हूँ। एक-एक कोना छानना चाहता हूँ। देखना चाहता हूँ कि आखिर दुनिया की क्या हालत है। कौसी जिन्दगी वह बसर करती है क्या-क्या उसकी उम्मीदें हैं। मगर नुम जैसा हट्टा-कट्टा आदमी क्या बहाना बना सकते हो ? यात्रा को जाने को लोग कहेंगे क्या बात है ? क्यों मारे मारे जिन्दगी हो ? क्या बहाना बना सकते हैं कुछ भी नहीं। रनिए

रहा था कि मेरा ब्राजू कट कर गिर गया होता या फोड़े पक-पक कर
नानूर हो गए होने का नानूर तो और बुरे है लोगों को उनमें वहशत
शक्ती है ।”

वह जवानक सामोश हो गया । उसकी तिरछी आंखों आग को
पर रहीं थी ।

तो तुम उनका पतला निश्चय कर चके हो ?”

अगर निश्चय न कर चुका होता तो मैं उनका जिक्र ही न करता
तबत तब तक तो तुम सदा, 'बड़ जो कहत है ना कि निष्पत्त किय
जाय तब तबकर सा नातो-पती रोय जमाना है, वसे ही । ”

उस जवानक सामोश भ अपना हाथ ठिठान और नामाश
करता ।

गलियाँ बक रहा था गालिया उनके मँह से ऐसे निकल रही थी कि चने फटे हुए बोरे में से चने के दाने। वह भी एक में एक बड़कर गया। उसी क्षण मालिक के कमरे का दरवाजा भी एक ढक्के के साथ खुला और कर्क साइका दरवाजे की चौखट पर पड़ना हुआ था। मालिक उस पर बरी तरह पिना हुआ था-कभी नीचे पर कभी पडा। मालिक उस पर बरी तरह पिना हुआ था-कभी नीचे पर कभी पडा। मालिक उस पर बरी तरह पिना हुआ था-कभी नीचे पर कभी पडा। मालिक उस पर बरी तरह पिना हुआ था-कभी नीचे पर कभी पडा।

नेम्योनोव बड़े नन्तोप के साथ लात रनीद करना चार फिर इत्मेनान के साथ हुकारता। इतनी देर में साइका जमीन पर दुहरा गया लुडकता रहता लेकिन जब भी कभी वह उठकर खड हाग ही ताकि करता वह उसे वही उठाकर जमीन पर पटक देता।

सब मजदूर बिल्कुटों की बंफरी से निकल कर साउट हुए पट्टे का चामोशी क साथ एक गुट-सा बनाकर खडे हा गये। मुसद 1-ता जा और उस नुरमई रोशनी में कली क चहर साफ नजर रहा जा ता य। लेकिन उनमें एक सनसनी और नय उप्पन्न हा जाने जा जा-द जन्तर मालूम होता था। साइका हाफता-बराहता उनके बरसा ता पडा।

नाउयो ! वह तो मुक मार डालगा !

वे सभक सब पीछ हट गये जब अभी व एक नोके में सनी दु-दहनियो की वाड काला खाकर गिर पड। इतन ही ने सनसनी आतेम भीड को चीरता हुआ बाहर आता चार सनसनी के मड-टीक पान जानर पोला बन पस हा च्ती !

सन्मोनाव ठिठक गया। नाहा नाव ना मइत नु-नी कि

कड़का जोर भीड़ में गात्रव हो गया ।

एकदम सन्नाटा छा गया । कई मेकन्ड तक भयानक स्तब्धता छाई नहीं । जोर कोई फैसला न कर सका कि जीत किमती हो गी—इम्मान की या दैवान की ।

कौन है ?" मालिक ने भराई हुई आवाज में पूछा आर हाथ उठाकर आत्म को गौर से देखने लगा । इस अर्म में उमका हाथ फिर ने ऊंचा उठ गया था ।

ने हू ! आत्म न आग्रहता से अतिक जोर लगा कर कहा तार एकदम पीढ़ हट गया । मालिक ने उस पर भी हाथ छोड़ा तब तक सामन्य फौरन ही तपकर आग बडा और उमने मुका अपन र पर राहा ।

कर रहा था। लेकिन जब कोई शल्स दाँत निकाले उसके ठीक सामने आजाता तो वही हिस्सा प्रकाश में आकर ऐसा लगने लगता जैसे कि जिस्म के बाकी हिस्से से कटकर अलग हो गया हो। सब-के-सब चीख-चीख कर आस्मान सिर पर उठाए हुए थे। मगर फिर भी निकिता की आवाज उन सब में बुलन्द थी।

“तुमने मेरी सारी शक्ति चूस डाली। भगवान के सामने क्या मुँह लेकर जाओगे ? हाय रे इन्सान, हाय !”

गालियाँ बढते-बढते बहुत ही गदी हो गई थी और कभी-कभी तो लोग धूसे तान-तानकर सेम्योनोव को धमकियाँ देते और वह तो मालूम होता था जैसे खडे खडे ही सो गया हो।

“तुम्हें बनवान किसने बनाया ! हमने ?” आत्म चिन्ताया। और बेचारा कित्ताव खोलकर पढने लगा।

‘याद रखो, हम सात बोरे आटे के हर रोज विस्कुट बनाने के लिए हरगिज तैयार नहीं हैं।’

आखिरकार मालिक मूडा और अजीब अन्दाज में सिर को हिलाता हुआ खामोशी के साथ चला गया।

विस्कुट की बेकरी में शांतिपूर्ण किन्तु उत्साह भरे उत्सव का दृश्य उपस्थित था। हर व्यक्ति अपने-अपने काम में लगन नज़र आता था। और सब-के-सब एक-दूसरे को जैसे नई आँखों से देख रहे थे—विश्वास, नर्मदिली, और कुछ उत्कण्ठ से। और बजारा तो चहचहा रहा था।

‘चलो यारो ! तग जाओ काम पर कान फडफडाकर !’

‘चल जवान हमेशा ! त्रिलकुल ठीक-ठीक और न्याय के साथ हम भी दिखा देंगे कि काम किसको बहते हैं। चलो जूट जानो नान में।’

लापतेव आटे की बोरी रुधे पर लपटे नारखाने के बोचो बीच चला

अपने होठ चाट-चाट कर चूम रहा था।

“देखा क्या होता है जब तुम सब एका कर लेते हो
तो ”

शातुनोव जो नमक तोल रहा था, हुमक कर बोला

अरे, बच्चे एका करले तो अपने पाप को भी पीट सकते हैं।”

सब लोग ऐसे व्यस्त नजर आ रहे थे, जैसा कि तमन्त गल्लु में शहर
को मल्लिया आर्सेम विशेषतया प्रमुख था। सिर्फ बूढ़ा कुजिन
स्नगा ही तरह अपनी गगनी आवाज में कह रहा था

“बो बानो ! क्या सोच रहे हो तुम, कमबख्तो !”

शातुनोव के शरा मीनारो और मकानो की छतों पर सुरमई
दूध और दूध आ। यारा शहर मु श-म डा मा नजर आता था। ओर
डा डा रू डा प्य मा म होता। जेम मिर फटे फिर रहे हो। वायु-
हवा पर पर मद गो तोअर अई हई थी ओर माम केना तक मुश्किल
म रू डा। माय माय को हर रोज पर मा गुजा-मा सफेद रंग बड़ा
दूध आ। ओर मा नवो डा प्य की ज भी हुई मशानिया मुक्काइ नही
कर रू रू डा डा डा डा अई हई थी।

एक घोड़ा गर्दन ताने, अगली टाँगें उछालता धुध मे से निकला और मेरे पास से होता हुआ गुजर गया।—घोड़ा बड़ा मोटा-ताजा और कत्थई रंग का था जिस पर काले दाग पड़े हुए थे और उसकी लाल आँखों में दुख व उदासी की एक झलक। बगधी पर गाड़ीवान की जगह पर येगोर बागे ताने ऐसा तना हुआ बैठा था जैसे कि लकड़ी पर नक्शा खुदा हुआ हो। बगधी के अन्दर मालिक हिचकोले खाता दिखाई दिया। उस समय वह लोमड़ी की खाल का कोट पहने हुए था जबकि गर्मी काफी हो रही थी।

यह तेज व तरार घोड़ा कई बार बगधी के टुकड़े-टुकड़े कर चुका था। अभी पिछले दिनों येगोर और मालिक को कीचड़ और तृण में लथपथ घर लाया गया था। पसली की हड्डियाँ चुर-मुर हो गई थीं लेकिन फिर भी दोनों को इस मोटे-ताजे जानवर से बड़ी महत्त्व थी।

एक बार जब येगोर घोड़े को साफ कर रहा था तबिन अभी एक मिनट पहले ही उसके कंधे पर काट खाया था, तो मैंने सोचा कि अच्छा तो यह हो कि इस जानवर को तातारिया के हाथ में दिया जाय ताकि वे उसे जिवह कर डाले। यह सुनते ही येगोर तनवर खड़ा हो गया और भारी खरेरे से मेरे सिर को निशाना बनाया।

“नाग जाओ!”

वह शरत्त मुझसे फिर कभी न बोला और आरंभ में उसने बच-चीत शुरु करनी भी चाही तो वह बैत की तरह निरन्तर चल-चल तरह चल दिया सिर्फ एक बार उसने अचानक पीछे ने जाकर नगा रखा दबोच लिया और झिझोउते हुए बोला

अरे बुद्ध! मैं तुमसे कई गुना ज्यादा ताकतवर हूँ। तुम जब-जब मैंने निपट साता हूँ और तुमसे तो सिर्फ एक हाथ का नुकसान होता है।

मानिक निफ " "

यह बातचीत उसने बड़े भावुक ढंग से की और उसका इस पर
जितना अनुर हुआ कि वह वास्तव तक पूरा न कर पाया। उसकी क्ल-
पट्टियों पर नीली रंगे उभर आई और माथा पसीने से तरबतर
हो गया।

नवानदस्ता रुहा पारहा उसके बारे में रुहा करता था

का जो उनके तीन जबर हैं मगर खुद वह योगी है।"

उत्तर भी तम होती गई। हा और ज्यादा तम हो गई थी
उसका हा नाल भी तम हो गई थी। थोड़े ही टापों ही आजाज
उसका हा हा हा जोर इस बीज एक आशाजनक स्तब्धता म
हो गई।

उसका हा हा हा मुझी हा हा हमीस पहने और सफेद एप्रन
उसका हा हा हा जोर हाकरी उतरात हुए उसने मुझ
उसका हा हा हा हा हा

बाधे एक लाल और मसले हुए तकिये पर बिखरे पड़े थे। नडकी का छोटा-सा घुटना अपने हाथ में लेकर दूसरे से उसके पाँव की उगलियों के लाल नाखूनो को भीचा।

“बैठ जाओ ! अच्छा तो आज हम गभीरता में बात कर ले।”

सोफिया के पाँव को थपथपाते हुए उसने आवाज दी

‘यास्का, समावार ! चलो सोवा उठ बैठो !’

उसने जम्हाई लेते हुए धीरे से कहा

“मेरा तो जी नहीं चाहता।”

“आओ, चलो उठ भी जाओ।”

उसने उसकी टांग अपने घटनो पर से नरकानी और आहिस्ता से खींचते हुए कहा

“बाज बातें ऐसी हैं जो हमें करना ही पड़ती है चाहे हमें पसंद न आए या न लगें। खुद जिन्दगी ही हमारे स्वभाव के विपरीत होती है।”

सोफिया बेढंगेपन से फिसलकर फश पर लोट गई और उसका घुटना घुटनो से ऊपर तक खुल गई। मातिक ने उसे डाटते हुए कहा

‘तुम्हें इतनी भी शर्म नहीं आती, सोवा !’

उसने अपने बात सँवारते मुँह कर दिये और जम्हाई लेते हुए बोली

‘तुम्हें मेरी शर्म की क्या परवाह ?’

अकेला तो नहीं हूँ मैं ही ? सामने तडका बँटा है।

उससे मेरी जान पहचान है।

नीर नाय-नगिमा तिये, नवे चुन्डे आर गान कुरान हुन के कौ समावार लेकर अन्दर दाखिल हुआ। समावार इज्जत में बिन्दु का नाक जैसा ही था वैसे ही छोटा-सा साफ-सुपरा और जम्हेर !

उहू नालायक !" बोफिया ने झटके के साथ अपनी तृटिया
बोचकर जार अपने उहरिपेशर वान कने पर उलते हुए रुहा ओर
नगर नेन के नामने आकर बैठ गई ।

पर जो मानिक ने कहना शुरू किया । इस समय उगकी
न कनी मनी गत जागती ओर हमरी सुरागती अल मिदकुन
गती ।

आखिर गुजारा कैसे करोगी ?”

“मैं तुमसे कुछ नहीं सीखूंगी, खातिर जमा रखो ।

वह अपनी कुर्मी पर आराम से लेटी हुई थी । चाय की एक छोटी-सी नीली प्याली में पाँच उल्लियाँ शकर की डालकर मजे से घुला रही थी । उसकी सफेद चोली सामने से खुल गई थी और बड़ी-सी सुडौल छाती नजर आने लगी थी जिसकी नीली र नसों में रक्त-संचार तेज मालूम होता था । उसके मूर्खतापूर्ण चेहरे से नींद के लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे थे । या फिर मान्म होता था कि वह किसी गहरे मोच में है । होठ उनके इस तरह खुले हुए थे जैसे किसी वच्चे के ।

“अच्छा तो खैर !” मालिक ने बातचीत का क्रम जारी रखते हुए कहा और उसकी चमकदार आँखों में चेहरे के भाव टटोलने लगी ।

“मैं तुम्हें सास्का की जगह लगाना चाहता हूँ क्यों ?”

“धन्यवाद ! पर मैं कर नहीं सकता वह काम ।”

“नहीं क्यों ?”

“वह उचित नहीं है मेरे लिए ।”

“मगर कैसे, कुछ बताओ तो सही ।”

“यही, मेरा दिल नहीं चाहता उस काम के करने को ।”

‘फिर वही दिा !’ उसने एक ठण्डी नास खींचते हुए कहा और बड़े ही सुन्दर शब्दों में दित जान और आत्मा का नास-पुस कहकर वह जरा जोश में आ गया और चीखते हुए उसने बोलना शुरू किया

‘हाय, कहीं यह आत्मा मुझे देखने को भिा जाय एखबार फिर परा अपने नाखून से कुरेदकर देख नला नाहे की ननी वर । यह सब सज्जीवन नहीं तो और क्या ? ? जिने देखे वनी ननी बात करता है ! मगर देखा जिनी ने नहीं ननी । न नना के नतिरित और तो कुछ नजर आता नहीं । उपको ! अगर वही क रीना नदनी

मिन भी जाम जनमें ईमानदारी जरों बराबर भी डा तो आशय ही
बड़ मूर्ख निकलता है ।”

नोकिया ने आहिस्ता-आहिस्ता अपनी पलके उठाई । भती के मा-
ना-अन्याया डा ने मुन्कराई जोर पूछा

सचारां ? कभी तुम्हें कोई ईमानदार आदमी भी मिला ?”

भे पर ईमानदार मा अपना जसानी म ।” उमने हूठ आजागी-
ने उसा न हय जोर अपने पीने पर जोर से हाथ मारा । फिर
उसा उसा मरामाये ।

उदासी व विपाद इतना कष्टकर था कि रोने को जी चाहता था व्यर्थ ही दिल भारी-भारी-सा रहता, एक टीस सी उठती। क्या इन्हीं लोगों के साथ जीवन व्यतीत करूँ ? साफ मालूम होता था कि ये लोग एक स्थायी विपदा में फँसे हुए हैं। उनके दिल व दिमाग में कोई बुनियादी कमजोरी है, उनको देखकर अफसोस होता, दिन कटने लगता। उनकी मदद करने की कोई सूरत न देखकर तबियत निडाल होने लगती और खुद भी इस वेनाम रोग का असर होने लगता।

“बीस खल बुढापे तक—है मजूर ?”

“नहीं।”

‘पच्चीस ? बोलो ! मौज करना, लडकिया मिलेगी और हर तरह के ऐश रहेंगे।’

जी चाहा कि मैं किसी सूरत से उसे यह समझाऊँ कि हमारा साथ-साथ रहना मिल-जुलकर काम चलाना कितना अनन्वय है। लेकिन मुझे समुचित शब्द ही न मिल सके और उसकी भारी तानु एव अविश्वसनीय आखों की ताव न ताकर मैं रुसमसा रहा था।

“छोडो भी बेचारे को।” सोफिया ने प्याली में चीनी डालते हुए कहा
मालिक ने सिर का इशारा करते हुए कहा

“अब चीनी क्यों ठूसे जा रही हो इतनी ?”

“तुम क्यों जलते हो ?”

“अरी मूर्खा ! यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसी-सी कैसी फूलती जा रही हो। अच्छा तो है हमारी तुम्हारी न नही सकती।”

तुम हमेशा के लिए मेरे खिलाफ हो गये।

‘मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे बर्झित कर दो।’

“अच्छा अब चलदो ।” मालिक ने रूखाई के साथ कहा, जाओ अच्छा हुआ ।”

बाहर गली अब भी कुहरे में लिपटी हुई थी । मकानों की दीवारों से गदले आंसू बह रहे थे । अधियारी परछाइयाँ भीगे हुए अँगूठों में अकेली भटक रही थी । कहीं दूर लोहारखाने में काम हो रहा था । वहाँ हथौडों की आवाज एक बघे हुए वक्त के साथ लगातार सुनाई दे रही थी । और यह पूछती हुई मालूम हो रही थी, क्या ये लोग इन्मान हैं ? क्या इसी का नाम जिन्दगी है ?”

मैंने अपनी आखिरी तनख्वाह शनिवार को ली । और उन चार ठेकेदारों के दिन सब लड़कों ने मिलकर विदाई पार्टी का आयोजन किया । एक गदबे किन्तु आरामदायक और गर्म मयखाने में शान्तुनोव, आर्नेन, याराग नाजुक मिजाज लापतेव सैनिक मिलोव, निकिता और यानुश उगातार एकत्र हुए । उलानोव एक सस्ते मगर भडकीले कपड़े का पतलन पहना था, लंबे जूतों में पायचे दबे हुए थे और नई फर्मीस पर बड़ी वास्कुट थी जिसमें काच के बटन लगे हुए थे । उसकी पोशाक और नयेपन ने उसकी बेशम आँखों की उड़ण्डता माद कर उसके मुझाए हुए छोटे-से चेहरे पर कायरता के नाबू प्रतिबिम्ब उसकी एक-एक हरकत से सावधानी और प्रवराहट के लक्षण देते थे । मानो उसे हर वक्त डर लगा हुआ हो कि किसी ठेकेदार ने न हो जायें या कोई आकर वास्कुट उतरवाकर न तो

एक रोज पहले शाम को सबने स्नान किया था और मैंने खूब तेल लगा कर आप से इस वजह ने

कहा

“हालांकि रहोगे तो तुम इसी शहर में लेकिन अब तो हमारे खटमल तुम्हारे खून में हिस्ता न बढ़ा सकेंगे।”

आर्तम ने बड़ी मृदुल मुस्कान के साथ दवे स्वर में कहा

‘अब तुम हमारे गीत के बोल नहीं रहे।’

शराबखाने में गर्मी हो रही थी। स्वादिष्ट पदार्थों की खुशबू नयुनों में घुसी चली आ रही थी और तम्बाकू का घुँआ नीनी नीनी धुँधली लहरों में तैरता फिर रहा था। कोने वाली त्रिडकी में बने वनन के साफ दिन की बुलंद आवाजें अदर स्पष्टता मुनाई दे रही थीं और रगविरगें फूलों से लदी हुई डालियाँ मस्त होकर झूम रही थीं।

मेरे सामने दीवार पर एक दीवार-घड़ी लगी हुई थी। उसका पेण्डुलम मानो थक-हार कर रुक गया था। नुशरा गायत्री की ओर घड़ी का डायल शातुनोव के चौड़े-चकले चेहरे की तरह मालम था रहा था जो आज हमेशा से कही अधिक मलिन व उदास था।

“इन्तान में कहता हूँ आनी-जानी चीज है।” उसने अपना सिर दोहराया। “इन्तान अपने रास्ते तक आता है और गुजर जाता है।”

उसके चेहरे पर जर्दी-सी आगई थी। एक मुस्कराहट के बाद उसकी आँखें आहिस्ता-आहिस्ता बन्द हो गईं।

शाम के समय बाहर दरवाजे पर आकर बैठना और राहगीरों की सुरतें देखना, मुझे बड़ा अच्छा लगता है। अनजान लोग किन्हीं-कुछ मञ्जिलों की ओर लपके चले जा रहे हैं। और उनमें से एक बंदूक ऐसे ही जैसे जो नेकदिल भी हो। भगवान नलाऊँ उनका।

उसकी आँखें डबडबा आईं और पलका में दो उड़ते-उड़ते मन्त्रिलभिलाने लगे और फौरन ही गायत्री हो गये जन्म उनका बन्दूक हुए चेहरे पर पड़ते ही भाप बन गये हो। उनका नरसरी दुःख-दुःख न फिर कहा

जहाँ आनन्द-मग्न हो लोग हँसी-दिल्लगी कर रहे थे वहाँ उन शब्दों पर किसी ने भी ध्यान न दिया जैसे खुद यह बात कहने वाला उन मंत्र लोगो में दिखाई ही नहीं दे रहा था। अब उसकी हालत बहुत ही बुराव और खस्ता हो चुकी थी और वह एक तरफ बँठा ऊबे जा रहा था उसकी आँखें बूझ गई थी। उसका भ्रियोदार चेहरा मुर्झा हुआ उद पत्ती की तरह नजर आ रहा था।

“शक्ति तो मित्रता में है।” लापतेव आर्तम से कह रहा था।

शानुनोव ने मुझे से कहा

‘ ध्यान से सुनते रहो सब बातें और घाद भी रचना। नारद उता से वह कविता बनती हो ।’

“मुझे मालम कैसे होगा कि कविता इन्हीं ने बनती है।”

“पता चल ही जायगा तुम्हें तो ।”

“और अगर इनसे कोई और ही कविता बनी तो ?”

कोई और ?”

ओसिप ने मुझे नदेहपूर्ण दृष्टि से देखा और फिर ध्यान करने के बाद कहा

“और कोई कविता हो ही नहीं सकती। नम लोगो ने खुद ही सुशहाली के लिए एक ही कविता है, कोई आर ह ही नहीं है।”

“लेकिन मुझे पता कैसे चलेगा कि यह वही है ?”

उसने निगाहें नीची करली और कुछ रहस्यमय बातें कहा

भगवान इन पर दया करे । और आओ अब हम दोस्ती प्रेम और घनिष्टता के लिए मदिरापान करे ।”

हमने प्याले टकराये और पीगये । फिर एक-दूसरे को हवाई चुम्बन दिये और इस दौरान मे मेज पर रखी हुई तमाम चीजों को गडमड कर दिया । मेरे मीने के अन्दर बुलबुले चहचहाने लगी और दिल में एक तीव्र वेदना अनुभव करते हुए मुझे उन तमाम लोगों पर बड़ा प्यार आया । बजारें ने अपनी मूछों पर हाथ फेरा और साथ ही हल्की सी व्यग्यपूर्ण मुस्कराहट भी जो उसके होठों पर खेल रही थी, मिट गई । और उसने भी इसी तरह एक भाषण आरम्भ कर दिया

‘ भगवान जी कसम कभी-कभी तो भाइयो, अपना दिल भी इतनी गानदार तय निहायता है कि जैसे कोई मार्टिनियन बाजा बजा रहा हो । अब वही दिन याद करलो जब हम सत्र सेम्योनोव के खिलाफ उठ पड़े हुए थे । और आज यहाँ अब कोई कर ही क्या सकता है ।” धम जी भर आता है । कोई अच्छी बात कहने को जी चाहता है । लेकिन हम जभाग कह नहीं सकते कि क्या हमारा जी चाहता है । भगवान नाहीं है मैं भले-मानुसों का-सा जीवन बिताऊँगा और किसी से परा नहीं दूँगा । तुम्हारा जो जी चाहे कहो । साफ-साफ कहो ! जो कुछ मर विन्दु शिकायत हो मुह पर कहो । मैं जरा भी घुरा नहीं मान्गा वहीन ही नहीं दूँगा, इसलिए मैं नाराज नहीं होऊँगा । और मैं जिदगी का सम्मान जानता हूँ जोसिप ! तुमने लोगों के बारे में जो कुछ कहा था वह बिल्कुल नहीं है । मैं सोचा करता था भाई कि तुम कूडमगज हो लेकिन वह मेरी भ्रम है । तुम बिल्कुल ठीक कहते हो । हम सत्र अच्छे और योग्य लोग हैं ।”

निजिता ने मरी हूँट आवाज में उस रोज पहली बार बोलते हुए कहा

‘ हम सब बहुत ही नाखश और खंजार हैं ।”

जहाँ आनन्द-मग्न हो लोग हँसी-दिल्लगी कर रहे थे वहाँ उन गब्दा पर किसी ने भी ध्यान न दिया जैसे खुद यह बात कहने वाला उन सब लोगों में दिखाई ही नहीं दे रहा था। अब उसकी हालत बहुत ही खराब और खस्ता हो चुकी थी और वह एक तरफ बैठा ऊँचे जा रहा था, उसकी आँखें बूझ गई थी। उसका भुर्रियोदार चेहरा मर्माई हुई जड़ पत्ती की तरह नज़र आ रहा था।

“शक्ति तो मित्रता में है।” लापतेव जातम से कह रहा था।

शातुनोव ने मुझे से कहा

“ध्यान से सुनते रहो सब बातें और याद भी रखना। नायद उगा से वह कविता बनती है।”

“मुझे मालम कैसे होगा कि कविता इन्हीं में बनती है ?”

“पता चल ही जायगा तुम्हें तो।”

“और अगर इनसे कोई और ही कविता बनी तो ?”

“कोई और ?”

ओसिप ने मुझे सदेहपूर्ण दृष्टि से देखा और फिर धप न म, 4 करने के वाद कहा

“और कोई कविता हो ही नहीं सकती। नव लोगों की मूर्ति 4 खुशहाली के लिए एक ही कविता है, कोई आर है ही नहीं।”

“लेकिन मुझे पता कैसे चलेगा कि यह वही है ?”

उसने निगाहे नीची करली और कुछ रहस्यमय उगा 4 न न कहा

घबराई हुई आवाज में कहा -

“शिशू मालिक !”

बजारे ने बोटका की भरी हुई बोतलें उठाकर भट मेज के नीचे छिपा दी। लेकिन फिर फौरन ही वापस मेज पर जमाकर रखते हुए झुल्लाकर बोला

“यह तो है ही शराबखाना !”

“है तो सही !” आर्तम ने जरा जोर से कहा। और फिर सब यो-खामोश होकर बैठ रहे मानो किसी ने भीमकाय मालिक को मेजों के दरम्यान से बच-बचकर निकलते और हमारी महफिल की तरफ रोबदार डग से चढ़ते हुए देखा ही न हो। आर्तम ही ने सबसे पहले आंखें चार की। और अपनी कुर्सी से उठते हुए बहुत ही तपक से कहा

“नमस्कार, वासिली सेम्योनिच !”

दो-चार कदम के फासले पर रुकते हुए सेम्योनोव ने खामोशी के साथ हमारे समूह को अपनी मंजरी आंख से जांचा। सब आदमियों ने भी चुपचाप सिर के इशारे से उसे सलाम किया।

“कुर्सी !” उसने धीरे से कहा।

मंत्रिक उठकर खड़ा हो गया और उसने अपनी कुर्सी पेश की।

“पाउका पी रह हा ?” उसने कुर्सी पर बैठकर एक लम्बी सांस लेते हुए कहा।

“चाय पी रहे हैं ?” याशका ने दात निहोमते हुए कहा।

“बोनो मे ने निकाल कर ?”

नारे कमर में एक सन्नाटा-सा डायल हुआ था जैसे कि अब किसी भी क्षण तू-तू-मै-मै शुरू हुई। लेकिन जोसिम शातुनोव ने उठकर अपना नाम बोटका ने भरा और मंत्रिक को पेश करने हुए बहुत ही नम्रता से कहा

हमारे साथ हमारे स्वास्थ्य के लिए पियो, वासिली सेम्योनिच !”

मालिक ने धीरे-धीरे और सोच-नोचकर अपना छोटा-ना ब्रॉन्च हाथ उठाया। हम सब की तबियतें बौकिल हो रही थीं। किनी का यकीन था कि यह हाथ जो उठ रहा है वह ग्लान को मटक कर फकने के लिए है या उठाने के लिए।

“क्यों नहीं?” आखिरकार उसने ग्लान का अपनी उँगवियों के सहारे उठाते हुए कहा

“और हम आपके स्वास्थ्य के लिए पियगे।”

मालिक ने अपनी मँजरी अँत से ग्लान का गौर में देना और अपने होठ चूसते हुए कहा

“क्यों नहीं, अच्छा तो फिर पिया।”

उसने अपने मुँह के मेढक जैसे सूराल में वादा लटका दिया। उसका काला चेहरा दागदार-सा हो गया। कॉर्पोरेशन हुए ग्लान ने

“बुरा न मानना वासिली सेम्योनिच, हम भी आखिर-आखिर तुम तो जानते ही हो। तुम खुद भी तो मजदूर थे, तुम्हारी भी मजदूरी होना चाहिए।”

“बस-बस, ज्यादा चालाक न बनो।” आका ने बतलाने शुरू किया।

ग्रमनाक लहजे में कहा। वारी-वारी हमने से हल्की-सी चहरे पर गौर से देखा और फिर मेरे चेहरे पर नजर जमा कर के

‘इन्सान। तुम लोग इन्सान नहीं हो। तुम तो इन्सान के पक्षी हो। लो अब आओ पिये।’

हस्ती मुस्वभाव जो चालाकी से खाली नृत्य हाता उतारी बस न टिमटिमा रहा था। और उस मिलमिलाहट ने हमें दिना

भडका दिये थे। हल्की-सा मुस्कराहट से न क चहरे पर नोट डू... उनकी आँसो में लज्जा व परचाताप एक पर... ल... लगा।

हमने ग्लास टकराए और पी गये । बजारा फिर फट पडा

“मैं सच बोलना चाहता हूँ ।”

“बम-बम, ज्यादा हाड-हाड न करो ।” हमारे मालिक ने हम्मा मुह बना कर उमे रोकते हुए कहा । “कान के पर्दे फाड़े देता है । और नेरे सच की जरूरत किसे है ? काम प्यारा है काम । ”

“जरा ठहरिए ।—दिखाई नहीं दिया अपना काम मैंने कल-परसो ?”

“मुनो-मुनाई बातें न दोहराओ । जरा अपने दिमाग पर भी जोर दो ।’

नहा मैं तो कहता हूँ, बताओ मैंने काम करके नहीं दिखाया ?”

उम ऐसा ही होना चाहिए ।”

‘जोर ऐसा ही होगा भी ।’

हमारे जाका ने एक निगाह ही मे सबको भांपा और सिर हिलाते हुए फिर वही बात दोहराई ।

‘उम ऐसा ही होना चाहिए । मैं तो जोर कुछ नहीं कहता । अच्छी बात अच्छी है । ये सिपाही बच्चे, एक दर्जन बियर का आर्डर दो ।’

वह आर्डर मानो विजय का नारा था । महफिल की जिन्दादिली और भी बढ़ गई । हमारे मालिक ने अपनी जाँची बन्द करली और खोता

‘अननत्रिया के साथ तो मैंने बौद का ही नदिया पी डाली, लेकिन खुद अपने नाई-बन्दा के साथ महफिल का रंग जमता देखे जमाना बोन गया ।’

हमदर्दी के भवो दिना, जिन्दगी की खुशियों से बचिन दिना पर ना उम ब्रायन ने जाग पर तेज का काम किया । मय-के-मय एक दूसरे मे जोर नो मटकर बैठ गये । शानुनोत्र ने एक जाह भर कर मानो

नवकी ओर से कहा

‘हम तो तुम्हें जरा भी नवसान नहीं पहुँचाना चाहत थे मगर
आखिर करते क्या ? तग जा गये थे जिन्दगी से । पिछले जाड़ बड़ो
मुसीबत से कटे । वस यही वजह है ।

मैंने महसूस किया कि मिलाप के इस उत्सव में मेरी उपस्थिति
खटकती है और मेरे ही कारण दृश्य कुछ अनहाय-नाहाना लगता है ।
शराव फौरन ही उन लोगों के सिर पर सवार हो गई और वे नाजिम
के ताँवे जैसे चंहेरे को देख-देखकर मस्त हुए जा रहे थे और मन-मन
यह चेहरा भी कुछ असाधारण-सा प्रतीत हो रहा था । नवरो आराम
दयालुता, विश्वास और बुद्धिमत्ता की चमक दिखाई दी ।
वह बड़े धीरे-धीरे और लापरवाही से बातें करता था ।

आदमी जिसे मालूम हो कि उसका मतलब फौरन समझ लिया जाता है ।
और वह बँठा अपनी घड़ी की चाँदी की जड़ीर जतनी धीरे-धीरे
लपेट रहा था ।

यहाँ कोई अजनबी नहीं है हम सब हम-वतन ।’

‘सो तो है ही । हम-वतन ।’

‘आवाज में कहा ।’

‘भेड़ियों की-सी आदत के कुत्ते तीन-तीन चाहते हैं ।’

‘मे रखने योग्य तो होता नहीं ।’

‘सैनिक ने अपनी पूरी आवाज से चीखते हुए कहा

‘ख-ब-र-दा-र । नुनो ।’

वजारें ने आज बचावर अपने मानिक की तज आवा में कहा

‘तुम समझते हो कि मैं कुछ नहीं समझता ?

महफिल का रा और भी उमरना । फिर भी एतदुक्त

का बीर आर्डर दिया गया। ओसिप ने मेरी तरफ झुककर लडखडाती हुई जवान में कहा

“हमारा मालिक पादरी है। विल्कुस लाट पादरी। लाट पादरी मठावीश होता है।”

“यहाँ बुलाया किमने उसे? कमवख्त ने सारा मजा किरकिरा कर दिमा।” आर्तेम ने जरा आवज को दवाकर कहा।

हमारा मालिक मशीन की तरह बियर के ग्लास हलकू में उंडेलता रहा और बड़ी खामोशी के साथ। कभी-कभी बीच में बड़े रीम के साथ मन्वार तर गला साफ कर लेता जैसे अभी कुछ कहने ही वाला है। उमन मेरी मौजूदगी पर कोई ब्यान नहीं दिया। कभी-कभार जब उसकी उचटनी हुई नजर मेरे चेहरे पर पडती तो खाली-खाली आँखों को जैसे कुछ दिखाई ही न देता।

मैं गुफ्त में उठकर बाहर खिसक आया। लेकिन आर्तेम लपक कर मेरी पीठ मारा। वह सूत्र डटकर पिये हुए था। फूट-फूट कर रोने लगा और मुसकिया लेंते हुए बोला

“शाय भाई। मैं तो जकेना रह गया जत्र। विल्कुन दिना!”

रात बचत नाचिस में रुई बार मट हुई। हमने एक दूसरे को स्वप्न दिखा। अपने माट-मे हाथ में अपनी गरम टोपी उठाकर वह बड़ी मजबूती से लाथ मरता

‘त्रिन्दा हा?’

‘जो हा, त्रिदा हा।’

‘यस वही चाहिण?’ वह इन तरह बहता जैसे मारी द रहा

है। और मेरे कपडो को एक आलोचक की दृष्टियत ने जाचते हुए नग्न
भारी-भरकम जिस्म को लुडकता आगे बढ जाता।
ऐसी ही एक मुलाकात एक वार शराव खाने के नामन हुई।
उसने सुझाव दिया

‘कहो वियर पिये तो कंसी रहे?’

हम तीन सीढियाँ उतर कर तलघर नूमा कमरे में पहुँचे। उतन
वहाँ सबसे ज्यादा अन्वियारा कोना तनाश करके एक भागी-न स्टन
पर बँठकर चारो तरफ नजर दौडाई जैसे मेजे गिन रहा था। हमारी न
के अलावा वहाँ पाँच मेजे और थी। सब पर मटिया-न बात-न
फटे-पुराने मेज पोश विछे थे। एअ ठिगनी-नी पटी औरन त-न
ओडे शराव खाने के मालिक की जगह बठी मोने वन-नी तो।

सफेद पत्थर की दीवारो पर तस्वीरो के चौपट तज-न
भेडियो के शिकार का दृश्य था और दूसरी में जनरल-न
का कनकटा चेहरा तीसरी में पेरुशानम का एक द-न-न
में दो नग्न लडकियो की तस्वीर थी। इनमें न एक पट-नी
छाती पर बडे हाप्ट शब्दो में यह इबारत गिनी हुई थी।
गालानोवा विद्यापियो की पेमिका, मूल्य इकायन-न
की आँखे किली ने खोद ली थी। उन बँट-न-न
जो सारे वातावरण पर धव्वो की तरह पडी हुई थी-न
कर दिया।

परजन्म जाने करना न चाहती थी और खाम रूमी किस्म की बेजारी
आर उक्ताहूट उमके मिर पर मवार थी। आहिस्ता-आहिस्ता चुम्किया
लेकर उमने त्रियर पी और खाती ग्लास मेज पर रखाकर अपनी उगली
न एक पत्ता भटका दिया कि अगर मैं न थाम लू तो ग्लास फर्श पर गिर
कर चरुनाचूर हो जाय।

तो पकड़ा ? नातिक ने शातिपूर्ण स्वर में पूछा "गिर जाने दिया
जाना। उमने मे गिरकर टट जाता। मैंने दाम दे दिये होते। "

गिरनागर ही पटिया जाम ही नमाज के लिए जोर-जोर में
बाने नहीं जाय आस्मान में उडने हुए कोयों की पन्तियों में खलवली
माना।

मक पगी ही जगह पसर है।" मेम्पिनोव ने बातचीत जारी
रखा हुए रूप यहा मुक है।" और मन्त्रिया भी नहीं है मन्त्रिया रूप
में माना गया पसर करती है।

माना उमा गणापूण ढग म मुस्कराते हुए कहा

मैं माना गया है। मन्त्रिया। जब उमने एक छोटे पादरी से इशक
कराया है। मन्त्रिया मन्त्रिया, फट रूप-यह है दुनिया उमका
माना गया पसर है। मन्त्रिया है। उमे मन्त्र सुनाया करता है
मन्त्रिया मन्त्रिया ही नरह फट-फट कर राया करती है। मुक पर अब
मन्त्रिया मन्त्रिया है। मन्त्रिया मन्त्रिया मन्त्रिया परवाह ? मुक
मन्त्रिया मन्त्रिया मन्त्रिया है।

उमने भी फदक-फुदक कर छ छोटे कह रहे लगावे ।
“शंतान !” उसने अपने कंध फुदकाकर गरानि हुए कहा तावन

शंतान । हमारे भगवान के बनाये हुए नही छि ।”
उसने अपनी रग-विरगी आँखी के छोटे-छोट आम्र अपनी उँतनी न
पोछ डाले ।

‘ओसिप के वारे में तुम्हारा मया यान ह ? याद ह ना वद ?’
नौकरी थ्रोड दी उसने, गधा कही का
“गया कहाँ वह ?”

“कहते है तीर्थ यात्रा को गया है । जितना अनुभव उस ह मर जा
उम्र उसकी है—भव तक वह नानवाड हो गया होना नही ता नचा
कमकर है वह । अपना काम खूब अच्छी तरह जानता ह ।

सिर हिलाकर उसने चन्द घूँट बियर के पिये और आता पन पा
का माया करते हुए वाहर देखकर बोला

‘देखो तो कितने कोवे है । शादी के दिन है—अच्छा भाद म.
वडिये कौन-सी चीज फिजूल है और कौन सी वास्तव में जरूरी है ।
कोई नही जानता भाई, ठीक-ठीक कोई नही जानता याद पदारी
ने कहा था, जरूरत की सब चीजे आदमियो के तिय ह आम तात
चीजे भगवान के लिए ।’ वह पिये हुए था उन ववन । अपनी मन
न्यायोचित ठहराने के लिए नव कोई-न-नाई बहाना उट्टे से
लेते है । देखो तो मही शहर मे कितने फान्त् त्याह । नव ना नी
रहे है, पी भी रहे है । त्रेकिन वह खाना-पानी ह कितना मना) हा
और यह नव आता कहाँ से ह)’

वह हडबडाकर एक दम उठ खडा हुआ । एक हाथ नव मे टका
और दूसरा मेरी तरफ बशया । वह कुछ त्वासा-बाना-ना नव
आता था । और उसकी आख किनी फिऊ मे मिट्टी डूब पी ।
‘अब चलना चाहिए, अच्छा नमस्ते ।’

उमने एक भारी-मा बटुआ निकाला और उमके अन्दर उगलियो चलाने हुए इत्मीनान के साथ कहा

‘अभी पिछले दिनों पुलिस इन्स्पेक्टर तुम्हारे बारे में मुझमें पूछ-गठ कर रहा था।’

‘चाहता क्या था वह?’

मालिक ने अपनी सिफुडी हुई भवों में से देखते हुए लापरवाही के साथ कहा

‘तुम्हारे चाल-चलन और तुम्हारी जवान के बारे में पूछ रहा था। मन कह दिया कि तुम्हारा चालचलन खराब है और जवान कची की तरह जाता है। अच्छा, चल दिये!’

इत्यादा पूरा था। और अपनी हाथी जैसी टांगे सीढियों पर उतरा और रात हुए उमने अपनी तोद बाहर बाजार में धकेल दी।

उमके बाद फिर मेरी उससे मुलाकात नहीं हुई। मगर दस वर्ष बाद मुझे याही मयागदश मालूम हुआ कि उसकी कारोवारी जिन्दगी किम तरह खत्म हुई। मन्तरी—(मैं उन दिनों राजनैतिक कैदी था, मन्तरी के कुछ मोदा जयवार में लपेट कर लाया और उस पुर्जे में मैंने यह खबर पढ़ी

गुड फ्राइडे के त्योहार पर हमारे शहर में एक बड़ी ही मिथिल मटना पड़ी। मामिली मध्योनोय ‘वन’ जोर विस्कुटो की बेकरी का मन्तरी का श्रमा में बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति रजान्सी सूरत वनाये शहर में अपने मन्तरीदारा का क प्ररो पर गया और उमने रो-रोकर उन्हें विश्वास दिवाना चाहा कि वह विस्कुल तवाह हो गया है और उसने उममें वनाये की वे उम तन निजवादे। उस व्यक्ति के कारोवार से जो खबर चली या, सभी लोग किसी ने भी उस पर विश्वास न किया। मन्तरीदारा के दिन चेतवाने में गुजारने की उमकी बेमोके इच्छा से मन्तरी त बड़ा मन्तरीदारा। इस जदभुत स्वभाव वाले व्यक्ति के

सनकीपन से सभी परिचित थे । लेकिन चन्द ही दिनों बाद शहर भर के व्यवसायिक वर्ग में बड़ी खलबली मच गई क्योंकि पता चला कि सेम्योनोव कोई पचास हजार रुबल का कर्जा छोड़कर लापता हो गया है और अपनी हरेक बिकाऊ चीज ठिकाने लगा गया है । निस्संदेह उस पर धोखे बाजी से दीवालिया हो जाने का मुकदमा कायम होगा ।”

इसके बाद फिर दीवालिया भगोड़े की विफल तलाश, की परेशानी और सेम्योनोव की विभिन्न विचित्र हरकतों का व्योरा दिया गया था । मैंने कागज के इस भेले-कुचैले और चिकने पुर्जे को पढ़ा और खिड़की के सामने जाकर विचारों के तूफान में खो गया । धोखे बाजी, बंदूक दस्ती एवं दुर्भाग्यपूर्ण दीवालियापन की घटनाएँ जीवन से पनायत, कायरता, और अकर्मयता के अनुभव की घटनाएँ मन में बहुत आम थी ।

‘‘तुम्हारा परेशानी है यह, कौसी मुसीबत है ?’’

एक आदमी है जो जिंदा है और कुछ सृजन करना चाहता है अपनी कामनाओं और अपने विचारों की री में । और सँकड़ों लोगों का दिमाग स्वाहित और मेहनत शामिल करता है, जबरदस्ती इन्मानी मेहनत हजम कर जाता है फिर अचानक और धोखा देकर सब कुछ अधूरा और अपूर्ण छोड़ देता है और अक्सर खुद अपने आप भी जिंदा की हल चल से निकल भागता है । और इस प्रकार इन्सान के गाड़े पसीने की मेहनत बरबाद हो जाती है । उसका नामोनिशान तक बची नहीं रहता । और अक्सर दुःख, दद भरी मेहनत व मशकत की क्लौ बिन खिते ही भुर्का जाती है ।

जेलखाने की दीवार पुरानी और नीची है और भयावनी भी नहीं है । इस दीवार के बाहर, करीब ही वसन्त ऋतु के आनंददायक नीलाकाश में लाल ईंटों का एक ऊँचा अम्बर नजर आता है । जो गराव

के कारखाने के मालिक और उजारादार की मिनिकगत है। उसके समीप दो बन्नियों के और ऊँचे-ऊँचे मत्तानों के झाड-झाड के दरम्यान नकानों की एक नई इमारत बन रही है जो किराये पर उठाई जाएगी।

जन्मे नी आगे एक उजाड मदान फला हुआ है जहा कहीं-कहीं टपके जाके हैं, जन्मे किनारे पर सड्जा उग आया है। ओर इवर दक्षिणी ओर एक चरक के ऊपर झुकी हुई चट्टान पर यहदिया का तेलनाम के पान की दरखों के एक अगियारे झुण्ड पर मुदनी गई है। मदान में मुहरी रंग के फूल भूम-भूमकर आपस में टपकते हैं। एक मोटी-सी काली मसूरी गिडकी के बेल-

मेरी आँखों में उमका भारी-भरकम जिम्म बगरी की गद्दी लोटता-पोटता, उछलता-धिरकता फिर रहा हूँ। और वह गार्डी न म जिन्दगी की तेज धार को अपनी मँजरी और चमकीली आँख में दबना नजर आ रहा है। येगोर का लकड़ी की मूर्ति बना हाथ फनाये राम पकड़े बैठा है और अक्सड मिजाज कत्यई पोंडा अपनी मजबत टाँ भटकाता और मडक के ठण्डे पत्थर पर अपने मुँहो को चटपटाना चला जा रहा है।

“येगो मैं किसका हूँ? एक भड निगन जाना है मड न लेता है—लेकिन कमम भगवान की वह फिर भी मँजरी म रहता है।”

मीन में किसी चीज के उठने में दम पटन टा-ना रहा था जैसे किसी व्याकुल व पीड़ित भावना टा-ना आ रहा हो उस शरम के लिए जा रही जायागी। जो मसार में अपना कोई स्थान ही तताता था। किसी ‘रंगस्ट’ के आनख और दानापूण शू-ता। शायद शक्ति की हद से ज्यादा चटतापत में टा-प ना।

की भाँति चिपटे हुए ह । और इमारत को दिन-ब-दिन ऊँची करने जा रह है ।

और मजदूरो आर उनकी व्यस्तनाओ की इस वमाधमी को देखते देखते मुझे यह विशाल जीर पेचीदा मसार की भूल-मुलँयो के बने जाग में एक अकेला मुमाफिर ओसिप शातुनोव आनदमग्न हो चलता, अविश्रुस्त निगाहो से चारो ओर घूरता और हर बात को गीक से और पूरे ध्यान से सुनता नजर आता है । किं शायद कही वे शब्द मिल जाए जो जननाधारण की 'पुशी' की कविता रचें ।
